छत्तीसगढ़ विधान सभा
की
अशोधित कार्यवाही

पंचम विधान सभा **प्रथम सत्र**

गुरूवार, दिनांक 10 जनवरी, 2019

(पौष 20, शक सम्वत् 1940)

[अंक 05]

छत्तीसगढ़ विधान सभा

गुरूवार, दिनॉक 10 जनवरी, 2019

(पौष 20, शक सम्वत् 1940)

विधान सभा पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत् हुई.

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एकदम सफाया।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कल आपने मेरी बात विलोपित कर दी। अकेले के लिए अकेला काफी बाकी तो सब...।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अच्छा माने आपका इशारा की उधर भी अकेला ?

श्री अजय चन्द्राकर :- बाकी तो सब, मैं फिर बोलूंगा तो आप विलोपित करवा देंगे।

स्कूल शिक्षा मंत्री (डॉ. प्रेमसास सिंह टेकाम):- आप ही अकेले हैं और बाकी सब ?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी।

समय :

11:00 बजे **<u>पत्रों का पटल पर रखा जाना</u>**

1. **छत्तीसगढ़ राज्य के भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक से प्राप्त प्रतिवेदन दिनांक 31 मार्च, 2017**

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, भारत के संविधान के अनुच्छेद-151 के खण्ड (2) की अपेक्षानुसार छत्तीसगढ़ राज्य के भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक से प्राप्त प्रतिवेदन दिनांक 31 मार्च, 2017 को समाप्त वर्ष के लिए :-

(i) सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों पर प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़ शासन (वर्ष 2018 का प्रतिवेदन संख्या-2),

(ii) सामान्य, सामाजिक व आर्थिक क्षेत्रों पर प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़ शासन, (वर्ष 2018 का प्रतिवेदन संख्या-3) तथा

(iii) राजस्व क्षेत्र पर प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़ शासन, (वर्ष 2018 का प्रतिवेदन संख्या-4)

पटल पर रखता हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी दूसरा भी रखना है ।

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

सविता\10-01-2019\a10\11.00-11.5

2. छत्तीसगढ़ राजकोषीय उत्तर दायित्व और बजट प्रबंध अधिनियम, 2005

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, छत्तीसगढ़ राजकोषीय उत्तर दायित्व और बजट प्रबंध अधिनियम, 2005 (क्रमांक 16 सन् 2005) की धारा 6 की उपधारा (1) की अपेक्षानुसार वर्ष 2018-19 के बजट की प्रथम एवं द्विवितिय तिमाही के आय तथा व्यय की प्रवृत्तियों की समीक्षा पटल पर रखता हूँ।

3. वित्तीय वर्ष 2017-18 के बजट से संबंधित छत्तीसगढ़ राज्य का निष्पादन बजट (परफारर्मेन्स बजट)

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, वित्तीय वर्ष 2017-18 के बजट से संबंधित छत्तीसगढ़ राज्य का निष्पादन बजट (परफारर्मेन्स बजट) पटल पर रखता हूँ।

समय :
11:02 बजे

शासकीय विधि विषयक कार्य

अध्यक्ष महोदय :- मैंने, छत्तीसगढ़ विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्यसंचालन संबंधी नियमावली के नियम 65 के उप नियम (1) तथा अध्यक्ष के स्थायी आदेश क्रमांक 24 को शिथिल पर छत्तीसगढ़ राजिम कुम्भ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) की महत्ता तथा उपादेयता को दृष्टिगत रखते हुए इसे आज ही पुर:स्थापन, विचार एवं पारण की अनुमति प्रदान की है।

मैं, समझता हूँ सदन इससे सहमत है ?

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

छत्तीसगढ़ राजिम कुम्भ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 (क्रमांक 2 सन 2019)

धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, छत्तीसगढ़ राजिम कुम्भ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) के पुर: स्थापन की अनुमति चाहता हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि - छत्तीसगढ़ राजिम कुम्भ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) के पुर: स्थापन की अनुमति दी जाये।

अनुमति प्रदान की गई।

(मेजों की थपथपाहट)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, छत्तीसगढ़ राजिम कुम्भ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) का पुर: स्थापन करता हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने, छत्तीसगढ़ राजिम कुम्भ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) पर चर्चा, विचार एवं पारण हेतु 30 मिनट का समय निर्धारित किया हे।

मैं, समझता हूँ सदन इससे सहमत है ?

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

समय :

11:04 बजे

<u>माननीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा</u>

<u>"माननीय राज्यपाल महोदया ने जो अभिभाषण दिया उसके लिए छत्तीसगढ़ विधानसभा के इस सत्र में समवेत सदस्यगण अत्यंत कृतज्ञ हैं।"</u>

श्री देवव्रत सिंह (खैरागढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले लगभग 24 घण्टे से माननीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण पर चर्चा चल रही है। हम ये मानते हैं कि राज्यपाल का अभिभाषण न केवल इस सरकार का एक ब्लू प्रिंट है, बल्कि एक ऐसा दस्तावेज है जो इस बात को छत्तीसगढ़ के ढाई करोड़ लोगों में स्थापित करता है कि ये सरकार करना क्या चाहती है ? छत्तीसगढ़ की जनता ने एक.....

जारी श्री चौधरी

चौधरी\10-01-2019\a11\11.05-11.10

पूर्व जारी... श्री देवव्रत सिंह :- माननीय अध्यक्ष जी, छत्तीसगढ़ की जनता ने एक अपूर्व जनादेश इस सरकार को दिया। मैं समझता हूं जनभावनाओं का जो समुन्द्र छत्तीसगढ़ में बहता दिखाई दिया, बस्तर से लेकर सरगुजा तक लोगों की जनभावना इतनी मजबूती से कांग्रेस के पक्ष में दिखाई दी। लेकिन जो तीन दस्तावेज हमारे सामने आये, एक चुनाव के समय जनघोषणा-पत्र सामने आया, दूसरा विधानसभा सत्र के पहले जो केबिनेट की मीटिंग हुई, उसमें तृतीय अनुपूरक का अनुमोदन किया गया और तृतीय अनुपूरक विधानसभा में प्रस्तुत हुआ और तीसरा हम लोगों ने राज्यपाल महोदया जी का अभिभाषण राज्यपाल जी के मुख से सुना। लेकिन तीनों दस्तावेजों में धीरे-धीरे ऐसा लगने लगा है कि यदि हम ये मानते हैं कि कोई सोच का आईना है, कोई ब्लू प्रिन्ट है, कोई रोडमैप है तो यदि मुख्यमंत्री जी और सरकार अपनी मंजिल को जानती है, अगर लंबा रास्ता लेना चाहती है तो हमें कोई आपत्ति नहीं है, वह समय ले लें। ये लेकिन ये जो जनघोषणा-पत्र आया है और आज जो तीसरा डाक्यूमेन्ट राज्यपाल

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

महोदया जी का अभिभाषण आया है उसको देखकर लगता है कि मंजिल से रास्ता भटकना अभी ही से चालू हो गया है। जन जनघोषणा-पत्र जारी हुआ था तो छत्तीसगढ़ की राजनीति में भूचाल आ गया। मैं समझता हूं कि इतने सारे कांग्रेस के नये लोग जो चुनाव जीते हैं, जिनको अपनी विधानसभा में अगर जनता का समर्थन मिला तो जनघोषणा-पत्र एक बहुत बड़ा मील का पत्थर था। लेकिन मुझे लगता है कि जिस तरह से जनघोषणा-पत्र आने के बाद राज्यपाल का जो डाक्यूमेन्ट पेश हुआ, ये मामला बहुत कमजोर होता जा रहा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री Winston Churchill थे, Winston Churchill कहा करते थे-

Politics is all about perception, it doesn't come from the mind it comes from the heart and the soul.

माननीय अध्यक्ष महोदय, इसका मतलब यह है हम जो राजनीति में करते हैं वह लोगों की समझ और अनुभूति के आधार पर होता है, छत्तीसगढ़ में perception था कि रमन सिंह जी अच्छे व्यक्ति हैं, उन्होंने अपनी घोषणायें पूरी नहीं की, विकास कार्य ठप्प पड़ा रहा, करप्पशन अपनी ऊंचाई पर था, लेकिन तीन चुनाव में ये perception था कि रमन सिंह जी अच्छे आदमी हैं इसलिए सरकार बनती चली गई। लेकिन जब पिछले 5 साल में ये perception आया कि रमन सिंह जी कुछ चाहते भी हैं तो जनता के अनुरूप काम नहीं हो पाता तो perception बदला और लोगों ने सरकार को बदल दिया। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जो सरकार बनी है उसमें राहुल गांधी जी ने भूपेश बघेल जी को जिम्मेदारी दी, और भी बहुत से योग्य लोग थे, मुख्यमंत्री बन सकते थे, लेकिन भूपेश बघेल जी के बारे में भी जो perception है, वह perception यह है कि यदि वह मुख्यमंत्री रहेंगे तो जो जनघोषणा-पत्र में बाते हैं, उनको वह पूरा कर देंगे। किसी अधिकारी की नहीं सुनेंगे, अपने तरीके से करेंगे। इसलिए लोगों के मन में आशायें भी हैं। लेकिन जिस प्रकार से जनघोषणा-पत्र आया और उसके बाद अनुपूरक आया और अब यह जो राज्यपाल महोदया जी का अभिभाषण आया है, उससे ऐसा लगता है कि फिर वही पुरानी सरकार की चीजें शायद अंदर न आ जायें। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि राज्यपाल महोदया जी का अभिभाषण हम लोगों ने पढ़ा, हमारे माननीय सदस्यों ने उसके बारे में चर्चा की। लेकिन अगर प्रदेश की कोई सबसे गंभीर समस्या है तो वह नक्सलवाद की समस्या है। यह दुर्भाग्य है।

श्री अमरजीत भगत :- देवव्रत जी, आप बहुत अच्छा भाषण कर रहे हैं और आप भूपेश बघेल जी के ऊपर आस्था व्यक्त कर रहे हैं, जब तक आपके नेता नहीं आये, आप ऐसे ही भाषण करते रहें तो ठीक है।

श्रीमती नीर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

नीरमणी\10-01-2019\a12\11.10-11.15

श्री देवव्रत सिंह :- श्री अमरजीत भाई, आपने जितने दिन श्री भूपेश बघेल जी को देखा है उससे ज्यादा समय हम लोगों के साथ काम किये हैं । सवाल इस बात का है कि यदि प्रदेश ने उन्हें मुख्यमंत्री बनाया है...

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय, उन्होंने तो अभी देखा है वह भी इधर-उधर इसलिये बोल रहे हैं कि चांस लग जाये नहीं तो बाकी तो इधर वह आपके ही साथ थे। उनके जीवन की वहीं से शुरूआत हुई है ।

श्री अमरजीत भगत :- उनके साथ तो आजकल आपकी खूब छन रही है, आप अपने से पहले उन्हें भाषण दिला रहे हैं ।

श्री देवव्रत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार की गंभीरता, सरकार बनने के बाद इससे दिखायी देती है कि इस प्रदेश की सबसे बड़ी समस्या यदि कोई है तो वह नक्सलवाद की समस्या है । इस प्रदेश का लगभग 35 परसेंट बजट नक्सलवाद की समस्या से जूझने में लग जाता है लेकिन जब माननीय राज्यपाल का अभिभाषण होता है तो 34 बिंदुओं पर माननीय राज्यपाल सरकार की अपने आईने की बात कहते हैं तो 32वें नंबर पर नक्सलवाद की समस्या की बात कही यह दुर्भाग्यजनक है । मैं यह नहीं जानता कि राज्यपाल का अभिभाषण किसने बनाया लेकिन यदि झीरम के काण्ड की जांच की बात है तो उसकी एक लंबी प्रक्रिया है इस नक्सलवाद को खत्म करने के लिये, मैं निश्चित रूप से कहना चाहूंगा कि पिछली सरकार में माननीय रमन सिंह जी के नेतृत्व में नक्सलवाद के खात्मे की लडाई लड़ी गयी थी । यह अलग बात है कि नक्सलवाद की लडाई की आड़ में 10,000 करोड़ का भ्रष्टाचार बस्तर और सरगुजा में हुआ । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे कहना चाहूंगा कि आप जब केंद्र में मंत्री थी, यू.पी.ए. की सरकार थी, यू.पी.ए. की सरकार में जो नेशनल एडवाईजरी कौंसिल बना था । श्रीमती सोनिया जी की अध्यक्षता में उसमें एक सदस्य जीन रेस करके एक सदस्य हुआ करते थे । इस देश के बड़े अर्थशास्त्री हैं वे जब बस्तर गये, उन्होंने बस्तर में जाकर घूमा, उन्होंने तेलंगाना में जाकर घूमा, उन्होंने उड़ीसा में घूमा, उन्होंने नक्सलवाद की समस्या को समझा और जीन रेस को दो बार छत्तीसगढ़ की धरती पर गिरफ्तार कर लिया गया था लेकिन उन्होंने एक बात कही थी कि नक्सलवाद के साथ-साथ इस छत्तीसगढ़ राज्य में, उडीसा में, झारखण्ड में एक नया सिस्टम पनप रहा है, एक-तरफ नक्सलवाद की लड़ाई लड़ने का प्रयास हो रहा है और उसी नक्सलवाद के अंदर में एक नये डवलपमेंट का नया मॉडल तैयार हो गया है । जो कि सिस्टमेटिक इन्क्लूसिव करप्शन का है, सिस्टमेटिक इन्क्लूसिव करप्शन का मतलब कि नक्सलवाद की आड़ में एक ऐसा तंत्र, एक ऐसा डवलपमेंट मॉडल तैयार हो गया है जिसमें भ्रष्टाचार को पनपने और बढ़ने का पूरा मौका मिलता है और वह सिस्टम के अंदर है । क्या

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कारण है कि बस्तर-सरगुजा में किसी काम को करने के लिये आप 50 परसेंट अबव में काम कराते हैं ? और क्या हम पीछे के रास्ते से नक्सलियों को पैसा देने की बात करते हैं कि डवलपमेंट करना चाहते हैं लेकिन बस्तर में नक्सलियों को पैसा देकर हम करना चाहते हैं । पिछली सरकार ने नक्सलवाद को जिस तरह से भी ट्रीट किया बस्तर में बहुत हद तक शांति की बहाली हुई लेकिन जिन नक्सलियों को बस्तर से खदेड़ा गया आज वे राजनांदगांव-कवर्धा जिले में पहुंच गये हैं, आज यह स्थिति है कि राजनांदगांव-कवर्धा जिले में 7 थाने खोलने पड़े और नक्सली गतिविधियां बढ़ गयी हैं । मैं आपको यह बताना चाहूंगा कि किस तरह से ये सिस्टमेटिक इन्क्लूसिव करप्शन चलता है । पिछली सरकार ने मध्यप्रदेश के अंदर जब हम लोग थे तो पहली नक्सली घटना घटी थी कि जब लांझी और खैरागढ़ के बीच में 30 पुलिसवालों को मार दिया गया था, यह पहली घटना थी मध्यप्रदेश की, आप भी और माननीय रविन्द्र चौबे जी भी उस घटना में गये थे । माननीय अध्यक्ष महोदय, वह जो गातापार थाना है, बकरकट्टा थाना है, गंडई थाना है, छुईखदान थाना के बीच में लगभग 100 से ऊपर गांव हैं जहां कलेक्टर और एस.पी. हिम्मत नहीं करते हैं जाने की, अगर जाते हैं तो जितने लोग होते हैं उससे डबल वहां पुलिस वाले होते हैं लेकिन उसके बाद वहां निर्णय लिया गया कि सड़कें बनानी हैं और अगर सडकें बनानी हैं तो ठेकेदार को 50 परसेंट अबव में काम दो, उसको अधिकार दो कि वह पूरे जंगल को खोद करे, वह झाड़ों को काट करे, आज लगभग-लगभग 5000 से ऊपर मुरूम की खदानें ऐसी हैं, मुरूम के खनन के नाम पर लगभग 5000 डम्पर, ऑयरनओर निकालकर सीधे अहिवारा के माध्यम से रायपुर के स्टील प्लांट में पहुंच गया । पूरे ऑयरनओर की खदानें हैं जहां की भिलाई स्टील प्लांट के आवेदन लगे हुए थे यह होता है सिस्टमेटिक इन्क्लूसिव करप्शन । सड़क की आड़ में झाड़ कट गया, ऑयरनओर निकल गया, कोई सुनने वाला नहीं है, क्या वर्तमान सरकार उसी रास्ते पर चलना चाहती है, क्या वही नीति है?

श्री अमरजीत भगत :- इसीलिये तो श्री अजय चंद्राकर जी की सरकार उधर चली गयी, लोग यही सब गड़बड़-सड़बड़ काम करते थे, भ्रष्टाचार में लिप्त थे ।

.........श्री कुरैशी

कुरैशी\10-01-2019\a13\11.15-11.20

श्री देवव्रत सिंह :- माननीय अमरजीत जी, यह सरकार इसीलिए चली गई कि 15 साल तक लोगों को यह परसेप्शन था कि अच्छे लोग सरकार चला रहे हैं और दूसरे लोग जो काम कर गए, अंतिम में बदलाव आया और लोगों ने बदला । आप भी अगर उसी रास्ते पर चलना चाहेंगे तो जनता बहुत जल्दी सरकार बदल देगी । इसलिए सचेत करने की बात है । अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी नहीं हैं मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि कृषि के मामले में यह सम्पूर्ण राज्यपाल का अभिभाषण और अनुपूरक बजट समर्पित है । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूंगा कि आपने कर्ज

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माफी की बात की और उसे आपने आंशिक रूप से पूरा किया । लेकिन यदि 61 सौ करोड़ में छोटे किसान थे और 61 सौ करोड़ ही बड़े किसानों के लिए कर्ज माफी का मामला है तो आप रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया से लोन लीजिए । जो कॉमर्शियल बैंक हैं उनको अदायगी कीजिए और वह ऋण भी माफ कीजिए । सब्ज़ी बाड़ी वाले, केला पपीता वाले, सोयाबीन की खेती करने वाले ऐसे किसान हैं जिनके केसीसी और केजीसी में बड़े लोन हैं और आत्महत्या के लिए ये ही मजबूर होते हैं । अध्यक्ष महोदय, मैं आपको आदरणीय रविन्द्र चौबे जी के और अपने क्षेत्र के बारे में बताना चाहूंगा कि पिछले 2 सालों में टमाटर की खेती करने वाले लगभग 50 किसानों ने आत्महत्या इसलिए की, कि टमाटर का रेट जब 1 रूपया और 2 रूपया किलो हुआ तो उनके पास अपने कर्ज की अदायगी करने की हिम्मत नहीं थी । अध्यक्ष महोदय, कृषि ऋण के मामले में जो राहुल जी ने कहा और जो लोगों का परसेप्शन था, आप अपने विधानसभा क्षेत्र में चले जाइए, आज लोग कुछ कह नहीं रहे हैं, लेकिन मन में यह भावना है कि ऋण तो सारे माफ होने चाहिए थे । हो सकता है कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने ग़लत समझाया होगा या सरसेप्शन ग़लत बन गया लेकिन यह परसेप्शन है कि यदि कर्ज़ माफ होने थे तो सारे कर्ज़ माफ़ होने थे । अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक व्यवस्था चाहूंगा । आप शासन को निर्देशित करिये । आप शासन को निर्देशित कीजिए कि यदि जन घोषणा पत्र में इस बात का प्रावधान था कि आप कर्ज़ माफ़ करने वाले हैं और बजट के अभाव में कर्ज़ माफ़ नहीं कर पा रहे हैं । आप मुख्य बजट में प्रावधान करेंगे लेकिन मैं एक निवेदन करते हुए एक व्यवस्था चाहूंगा आज इतने कॉमर्शियल बैंक है, सारे कॉमर्शियल बैंक्स ने आज केसीसी और केजीसी लोन देना बंद कर दिया है और जिनको केसीसी और केजीसी लोन मिला हुआ है उनकी किश्तों की पेमेन्ट के लिए वसूली के नोटिस जा रहे हैं और बैंक के अधिकारी बोलते हैं कि हमें ऊपर से गाइडलाइन है कि हो सकता है कि छत्तीसगढ़ सरकार बाद में इन कर्जों को भी माफ कर दे इसलिए आप सारे कर्जों की वसूली कर लीजिए, नहीं तो हमको आरबीआई तक जाना पड़ेगा । अध्यक्ष महोदय, शासन क्या चाहता है, वह अपनी मंशा पर काम करे, लेकिन बैंकों को यह निर्देश जाना चाहिए कि वसूली रूकनी चाहिए और वसूली रूकने के साथ-साथ जिनकी केसीसी को जितना पैसा मिलना है, वह दिया जाना चाहिए ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कृषि मंत्री जी बैठे हैं । मैं समझता हूं कि कृषि मंत्री के रूप में इनसे ज्यादा उपयुक्त कोई नहीं हो सकता, वे खेती किसानी को समझते हैं और माननीय मुख्यमंत्री जी भी समझते हैं । अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि छत्तीसगढ़ में सबसे बड़ी परेशानी यह है कि हमें जो बीज मिलता है, वह इतना महंगा मिलता है और उसमें जर्मिनेशन का परसेंट आज भी 50-60 परसेंट से ऊपर नहीं होता, इस पर शासन को ध्यान देकर काम करना चाहिए और छत्तीसगढ़ में खेती-किसानी तब मजबूत होगी, किसान तब मजबूत होगा जब एक-एक एकड़ ज़मीन में दूसरी फसल के लिए पानी का इंतज़ाम होगा, तब जाकर आप किसान को मजबूत कर पाएंगे । मैं यह भी कहना चाहूंगा कि हमारे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

राजनांदगांव, कवर्धा, दुर्ग में लोग दूसरी फसल इसलिए नहीं लगा पाते कि जानवर की चराई का मामला है, गाय, भैंस और दूसरे जानवरों की चराई का जो मामला है, फेंसिंग नहीं होने के कारण आज दूसरी फसल किसान नहीं ले पाता । इस सरकार को कभी न कभी इस बात की व्यवस्था करनी पड़ेगी । आपको जानवरों के लिए, गाय के लिए, बैल के लिए, बकरी के लिए एक ऑल्टरनेट व्यवस्था चारागाह की व्यवस्था करके दूसरी फसल का वातावरण बनाना पड़ेगा । अध्यक्ष महोदय, बस दो मिनट लेना चाहूंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री दीपक बैज ।

श्री देवव्रत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, बस दो मिनट ।

अध्यक्ष महोदय :- आप बोलिए, बोलिए ।

श्री देवव्रत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मैं एक विषय की ओर आना चाहूंगा । हमारे बहुत सारे नये विधायक अभी जीतकर आए हैं । हम लोगों ने भी विधायक के रूप में एक लम्बा कार्यकाल देखा, बहुत सारे सीनियर बैठे हुए हैं । अध्यक्ष महोदय, न जाने क्यों ऐसा लगता है कि छत्तीसगढ़ में सिस्टेमेटिक इन्क्लूसिव करप्शन का एक मॉडल बन गया है, उससे हमारे नये.................जारी

---श्री ठाकुर-

ठाकुर\10-01-2019\a14\11.20-11.25

जारी..................श्री देवव्रत सिंह :- करप्शन का जो एक मॉडल बन गया है, उससे हमारे जो नये विधायक हैं वो कैसे उससे बच पायेंगे, यह समझ में नहीं आता। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि जो हमारे विधायक हैं जो प्रथम स्तर के विधायक हैं उनको न केवल मजबूत करने का प्रयास होना चाहिए। मैं तो चाहता था कि आपका राज्यपाल का जो अभिभाषण है, उसमें इस बात का समावेश होना था कि छत्तीसगढ़ में जब ये पूरी नयी विधानसभा बनी है, पूरी तरह से तख्ता पलट हुआ तो पिछली सरकार की जो बदमाशियां हैं, जो कुरीतियां हैं, जिसमें कि सदस्य बंध जाते थे। फंस जाते थे वैसा इस सरकार में न हो लेकिन न जाने क्यों अध्यक्ष महोदय, मुझे लगने लगा है कि ये सरकार भी पिछली सरकार के रास्ते पर चलना चालू हो गया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में आपने खर्च के बारे में चर्चा की लेकिन कैसे इस सरकार का राजस्व बढ़ेगा, इस पर कहीं कोई बात नहीं है। हो सकता है कि बजट में लायेंगे। अध्यक्ष महोदय, आज स्थिति यह है कि नये विधायकों के मन में यह डर है कि कर्ज की अदायगी होगी, धान का रेट देंगे तो हमारे विधानसभा में विकास कार्य कैसे आयेंगे। सड़कें कैसे बनेंगी, बांध कैसे बनेगा जिसको लेकर जनता के बीच में गये हैं। एक प्रश्नचिन्ह जिसका उत्तर राज्यपाल के अभिभाषण में नहीं था। अध्यक्ष जी, आप इस बात से सहमत होंगे कि छत्तीसगढ़ के आधे हिस्से में कोल माफिया का संरक्षण है। कोल माफिया का राज चलता है। आज अगर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

पर्यावरण की बात है तो यदि मुख्यमंत्री जी, माननीय मोहम्मद अकबर जी को फ्री हैंड देते हैं और अगर फ्री हैंड मिलता है तो मैं आपसे कह सकता हूं कि छत्तीसगढ़ में चाहे ये कोल माफिया आये, चाहे प्रदूषण माफिया आये इनको जब तक आप ठीक नहीं करेंगे, छत्तीसगढ़ में जनप्रतिनिधि इनसे बाहर नहीं निकल पायेंगे। आज छत्तीसगढ़ के 90 में से 40 विधानसभा क्षेत्र में उद्‌ययोगपति और माफिया तय करता है कि विधायक कैसा परफार्मेंस करेगा, कैसा काम करेगा। आज एक-एक विधायक को चुनाव लड़ने जीतने में डेड़ से दो करोड़ रूपया लग गया। हम चुनाव खर्च 28 लाख रूपये देते हैं। डेढ़-दो करोड़ रूपया कैसे आयेगा। कहीं न कहीं माफिया के साथ मिलना पड़ता है, सांठ-गांठ करना पड़ता है लेकिन माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर राज्यपाल के अभिभाषण में आपने कहा है कि एक बेहतर आप सरकार देंगे तो बेहतर आपको कोई दिखाई नहीं देगा।

श्री अमितेश शुक्ल (राजिम) :- देवव्रत जी, डेढ़-दो करोड़ आचारसंहिता जो चुनाव में जो लिमिट है उसको ध्यान में रखते हुए।

श्री देवव्रत सिंह :- माननीय अमितेश जी, मैं आपके बारे में नहीं कह रहा हूं, मैं नये विधायकों के बारे में कह रहा हूं कि इनको कैसे सुरक्षित वातावरण इस प्रदेश में मिलेगा। प्रदेश में 40 से ऊपर विधानसभा क्षेत्र में माफिया तय करती है कि किसको विधायक बनाना है किसको नहीं बनाना। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका संरक्षण प्राप्त हुआ, उसके पहले एक छोटी सी बात मैं कहना चाहूंगा। आपके ध्यान से कहना चाहूंगा कि इस सरकार में, उस सरकार में हम सोचते थे कि अंतर होगा लेकिन शराब नीति पर जो एक लाइन मुख्यमंत्री जी की छपी कि हम अध्ययन करेंगे। पिछली सरकार भी अध्ययन करती रही। निश्चित रूप से महिला कमांडो बनाकर के कंट्रोल किया पिछली सरकार ने लेकिन जिस दिन से यह बयान मुख्यमंत्री जी का यह आया है कि शराबबंदी के बारे में अध्ययन करेंगे, उस दिन से एक दूसरी लड़ाई चालू हो गयी। कांग्रेस के कार्यकर्ता जगह-जगह जाकर बोलने लगे कि अब भारतीय जनता पार्टी के चखने नहीं चलेंगे शराब दुकान में। अब कांग्रेस की सरकार आ गयी। कांग्रेसियों के चखने चलने चाहिए।माननीय अध्यक्ष महोदय जी, आपके माध्यम से।

श्री अरूण वोरा :- देवव्रत जी, कांग्रेस तो शराबबंदी के पक्ष में है, ये चखना वखना क्या होता है, कांग्रेस वाले नहीं जानते।

श्री अमरजीत भगत :- कहां से ये चखना वखना लेकर आये हो आप बताओ अभी तो किसानों का मामला चल रहा है धान का। आप कर्जा माफी के बारे में बात करिए। कहां चखना वखना लेकर आते हो।

श्री अजय चंद्राकर :- मंत्री जी के कक्ष में टी.वी. चालू है या नहीं है।

श्री अरूण वोरा :- मैं देखकर आता हूं मैं भी खड़ा होता हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री देवव्रत सिंह :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं जिस बात के लिए ध्यान आकर्षित कर रहा हूं वह सच्चाई है। शराब नीति पर एक स्पष्ट नीति आपकी बनेगी तो निश्चित रूप से आपके पक्ष में जो मतदान हुआ है, उसका लाभ आपको मिलेगा। आज पूरे प्रदेश की महिला कमांडो ने कांग्रेस के पक्ष में मतदान कराया है और किया है। कहीं न कहीं माननीय अध्यक्ष महोदय इसमें आपको स्पष्ट नीति बजट सत्र तक लानी पड़ेगी और अंत में कहना चाहूंगा माननीय अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

श्री देवव्रत सिंह :- मैं व्यक्तिगत रूप से माननीय मुख्यमंत्री जी, ये सरकार से 20 दिन के अंदर कोई आपका रिपोर्ट कार्ड नहीं मांग रहा हूं। 20 दिन बहुत कम होते हैं लेकिन जिस रास्ते पर आप चल निकले हो, जो आपकी मंजिल है उसमें थोड़ा सा भी भटकाव होगा तो छत्तीसगढ़ की जो जनभावना है उसको कहीं न कहीं तकलीफ पहुंचेगी। आपके पास समय है। आपके पास बहुत वक्त है आने वाले बजट में आप इन सब चीजों को ठीक कर सकते हैं। आपने मुझे समय दिया उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- तो माननीय कौशिक जी, आप कितना समय लेना चाहेंगे। नहीं फिर भी आधा घंटा, 45 मिनट। उस हिसाब से मैं दूंगा।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- 45 मिनट, 40 मिनट या एक घंटा जैसा भी।

अध्यक्ष महोदय :- दीपक बैज।

श्री धरमलाल कौशिक :- सामने है बाकी कुछ माननीय सदस्य हैं बोलने के लिए। उनको दो-दो मिनट बोलवा देते हैं, उसके बाद शुरू करते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत समय की जरूरत नहीं है। बहुत समय लेने के आवश्यकता नहीं है। माननीय सदस्य जो बचे हैं उनको भी बोलवा दीजिए। उसके बाद शुरू कर देंगे।

.........जारी श्री अरविंद

अरविंद\10-01-2019\a15\11.25-11.30

श्री धरमलाल कौशिक :- कुछ माननीय सदस्य बोलने के लिए हैं। उनको दो-दो मिनट बुलवा दीजिये। उसे बाद शुरू कर देते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत समय की जरूरत नहीं है।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- किसानों के लिए कुछ बधाई वगैरह दोगे?

श्री धरम लाल कौशिक :- मैं उस दिन बधाई दिया था कि आप और कर्ज ले लीजिये, उसकी चिंता मत करिये। लेकिन एक लाईन में कि किसानों का कर्जा माफ हो जाए, यह मैं उस दिन भी बोला हूँ और आज भी इस बात को बोल रहा हूँ। यदि मुख्यमंत्री जी घोषणा कर दे तो मैं इसी सदन से बधाई दे रहा हूँ और बधाई दूंगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- और सर्वसम्मति से पारित भी कर देंगे। माननीय अध्यक्ष जी, परम्परा तो यह रही है कि विपक्ष के नेता और सदन के नेता को समय के बंधन में नहीं बांधा गया था।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है, मैं बांध नहीं रहा हूँ। मैं व्यवस्था करना चाहता हूँ कि कितनी देर उनको चाहिए। आदरणीय बैज जी।

श्री दीपक बैज (चित्रकोट) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज आपने माननीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण पर चर्चा करने के लिए अनुमति दी है। हमारी सरकार की पूरी कार्ययोजना को राज्यपाल महोदया ने पढ़ी और किसानों के कर्ज माफी पर डिटेल में चर्चा हुई है। 16 लाख 65 हजार किसानों का 610 करोड़ रूपये का कर्जा माफ हुआ है। अनुपूरक में 4223 करोड़ 47 लाख का प्रावधान है, और तो और 10 दिनों में 1248 करोड़ जमा भी कर दिया गया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने देखा कि एक किसान का बेटा मुख्यमंत्री बनता है और मुख्यमंत्री बनते साथ ही 3 घण्टे के अंदर कर्ज माफ करने का फैसला होता है और 2500 रूपया धान का समर्थन मूल्य देने की बात होती है। लेकिन इससे विपक्ष के साथियों को तकलीफ होती है। आपने 15 साल राज किया। आपको धान का समर्थन मूल्य 2500 रूपया देने के लिए किसने रोका था, कर्जा माफ करने के लिए किसने रोका था ? आपने तीन बार छूट बोलकर सरकार बनाया लेकिन छत्तीसगढ़ की जनता ने चौथी बार आपको झूठ बोने का मौका नहीं दिया और इसी का नतीजा है कि आप 49 सीट में से 15 सीट में आकर सिमट गए। पेपरों के माध्यम से, टी0व्ही0 के माध्यम से बहुत चैलेन्ज हुआ कि कर्जा माफ हुआ तो मैं इस्तीफा दे दूंगा। 10 दिन में 3 लाख 57 हजार किसानों का 1248 करोड़ रूपये का कर्जा माफ हुआ है, उनके खाते में चला गया है। लेकिन आज तक इस्तीफा नहीं दिए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने इस सदन में पिछल 5 साल तक इस सदन में बैठकर देखा है कि 10 खंभे गड़वा देते हैं और बिजली त्यौहार मनाते हैं। 5 साल में 4 साल बोनस नहीं देते और 1 साल बोनस देते हैं तो बोनस त्यौहार मनाते हैं। पता नहीं क्या-क्या त्यौहार मनाते थे। लेकिन आज छत्तीसगढ़ के किसान के बेटे को देखिये 6100 करोड़ रूपये का किसानों का कर्जा माफ हुआ, लेकिन हम लोगों ने इनके जैसा कर्जा माफी का त्यौहार नहीं मनाये। (मेजों की थपथपाहट) ये हैं असली किसान का बेटा।

श्री शिवरतन शर्मा :- दीपक जी, 6100 करोड़ रूपये के कर्ज माफी की बात कर रहे हो और अनुपूरक में कितनी व्यवस्था हुई है, यह भी बता दो।

श्री दीपक बैज :- हुआ है, आप चिंता मत करिये। सब होगा, चिंता मत करिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- फिगर बता दो न। अगर बोल रहे हो तो फिगर बता दो कि अनुपूरक में कितनी व्यवस्था हुई है। क्यों गप्प मार रहे हो। अनुपूरक में 3 हजार करोड़ की हुई है और कर्जा माफी की क्यों बात कर रहे हो।

श्री दीपक बैज :- सरकार में 15 साल रहकर आपने तो एक रूपया भी कर्जा माफ नहीं किया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लेकिन शर्मा जी, हम तो 6100 करोड़ रूपये का कर्जा माफ कर रहे हैं। किसान 2100 रूपया धान के समर्थन मूल्य के लिए तरस गए।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- शर्मा जी मत बोलो, शिवरतन बोलो। (हंसी)

श्री दीपक बैज :- जी,जी। शिवरतन भैय्या, और तो और हम आपका पाप धो रहे हैं। आपने दो साल का बोनस नहीं दिया, आज दो साल का बोनस देने की घोषणा भी किए हैं। उसका भी जल्दी प्रावधान आयेगा। आप उसकी भी चिंता मत करिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- धोय के बारे में छत्तीसगढ़ के कहावत सुनाव का ?

श्री दीपक बैज :- हम लोग आप का ही पाप तो धो रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने एक फिल्म देखा है, आप लोगों ने भी देखा होगा। अनिल कपूर का फिल्म है, मैं शायद नाम नहीं लिया हूँ, अध्यक्ष महोदय जैसा आपको उचित लगे। मैंने नायक फिल्म देखा है। उसमें वे एक दिन का मुख्यमंत्री रहते जनता का काम करते हुए दोबारा मुख्यमंत्री बनते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, वह तो फिल्म था। मैंने हकीकत में असली हीरो देखा है 3 घण्टे में कर्जा माफ करके, और वह असली हीरो माननीय भूपेश बघेल, हमारे मुख्यमंत्री जी हैं। ये है असली काम। टाटा की जमीन की वापिसी का फैसला

........जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\10-01-2019\a16\11.30-35

जारी....श्री दीपक बैज :- टाटा की जमीन की वापसी का फैसला प्रदेश के लिए बहुत बड़ा फैसला है । वह मेरे क्षेत्र लोहण्डीगुड़ा ब्लॉक में आता है । मैंने इनसे कई बार गिड़गिड़ाया कि किसानों की जमीन तो वापस कर दो, परन्तु 15 साल तक सरकार में रहने के बाद भी कुछ नहीं किया । जनता तरसती थी, किसान तरसते थे, आदिवासी मरने की कगार पर थे, न उनको खाद मिला, न बीज मिला, न उनका जाति, निवास प्रमाण-पत्र बना । सड़क से लेकर सदन तक मैंने लड़ाई लड़ी, लेकिन इन्होंने किसानों की चिन्ता नहीं की। जब हमारे मुख्यमंत्री जी प्रदेश अध्यक्ष थे तो वे उस गांव में गए, किसानों के साथ चर्चा की और हमारी सरकार आने के बाद 6 दिन के अंदर किसानों की जमीन वापस करने की घोषणा की, केबिनेट में फैसला हुआ और उनका आदेश कल जारी हुआ, उनको 1 महीने के अंदर पट्टा भी मिलेगा। आप उन 10 गांवों में जाकर देखिए, किसानों के चेहरे को देखिए, जब मुख्यमंत्री जी जगदलपुर प्रवास पर थे तो वे किसानों से मिले, किसानों ने धन्यवाद दिया और बोले कि साहब, आपने किसानों की जमीनें वापस कराईं तो उन्होंने कहा कि ये तो आपकी मेहनत है, आपका हक है । किसानों ने कहा कि साहब, आप जमीन तो वापस कर रहे हैं, लेकिन पट्टा भी हम आपके हाथ से लेंगे । (मेजों की थपथपाहट) ये असली जननायक का काम होता है । इसलिए आप 15 सीटों में सिमट गए हो । 1707 किसान, 1764 हेक्टेयर जमीन बंदूक की नोंक पर किसानों की जमीन ली है, बंदूक की नोक पर ग्राम सभा करके किसानों की जमीनों को लूटा है, उनके अधिकार को लूटा है इसलिए किसान कभी माफ नहीं करेंगे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बस्तर से आता हूं तो झीरम घाटी की चर्चा न हो, ऐसा संभव नहीं है । हम लोगों ने उस झीरमघाटी की घटना को अपनी आंखों से देखा है, उस काले दिन को, देश के इतिहास को कौन भूल सकता है । आज पांच साल से ऊपर हो गए, जांच कमेटी का क्या हुआ ? कछुआ की गति की चाल चल रही है । इनकी सरकार में तरस गए, पिछले समय भी दो लोग विधान सभा में सदस्य थे, आज भी दो सदस्य विधान सभा में है । इनकी जांच से कोई संतुष्ट नहीं है इसलिए कहा कि इनकी सरकार में न्याय की उम्मीद नहीं थी, हमारी सरकार है तो न्याय की उम्मीद है । माननीय मुख्यमंत्री जी ने एस.आई.टी. का गठन कर दिया । एस.आई.टी. का गठन हुआ तो भी इनको एक अधिकारी से तकलीफ हो रही है। वह अधिकारी कौन है, वे इनकी सरकार में भी काम किये हैं । वह सरकार का अंग है । इनका एक ही प्रश्न-चिह्न है कि उस अधिकारों को एस.आई.टी. का अध्यक्ष क्यों बनाया गया ? आज वे सरकार का काम कर रहे हैं, कोई प्राईवेट कम्पनी का काम नहीं कर रहे हैं । मैं कहना चाहता हूं कि हमारे साथी किस चीज के लिए डर रहे हैं, एस.आई.टी. गठित होने के बाद क्यों डर रहे हैं, ताकि सच्चाई सामने आ सके, दुनिया सच्चाई जानना चाह रही है, छत्तीसगढ़ की जनता सच्चाई जानना चाह रही है, ये पीड़ित परिवार सच्चाई जानना चाह रही है कि झीरम घाटी का हत्यारा कौन है, किसके शरण में हुआ है या राजनीतिक साजिश थी, क्या ये राजनीतिक षडयंत्र था ? आज पीड़ित परिवार भी जानना चाहता है कि झीरम घाटी का हत्यारा कौन है । इसलिए हमें उम्मीद है कि एस.आई.टी. का गठन होने के बाद निश्चित रूप से दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा और जो भी इस घटना में शामिल होंगे, वे निश्चित रूप से जेल जाएंगे । ये झीरम घाटी की घटना के एस.आई.टी. का गठन करना बहुत बड़ा साहसिक निर्णय है ।

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, दरअसल इनका बहुत सारा काला चिट्ठा उनके पास है इसलिए इन लोगों को डर लगा है कि कहीं उसके दायरे में ये लोग भी न आ जाएं । इसीलिए ये लोग एस.आई.टी. के नाम से घबराए हुए हैं ।

श्री दीपक बैज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पूर्व मुख्यमंत्री जी का भाषण सुन रहा था, वे 15 साल मुख्यमंत्री थे । हमें भी उनके साथ 5 साल काम करने का अवसर मिला । नक्सल मुद्दे पर बड़ी भावुकता से बोल रहे थे कि नक्सल मुद्दे पर विपक्ष की जरूरत हो तो बिल्कुल मदद करने को तैयार हैं । मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि हमने उनके साथ 5 साल काम किया, हम बस्तर से आते हैं, हमारा क्षेत्र नक्सल प्रभावित क्षेत्र है, हम पिछली बार 12 में से 8 विधायक जीतकर आये थे, परन्तु कभी पूर्व मुख्यमंत्री जी ने एक मिनट भी चर्चा की, आप बस्तर से आते हो, आप बताईए कि नक्सल मुद्दे पर क्या चर्चा होनी चाहिए, कैसे हल किया जा सकता है, क्या समस्या है ? लेकिन वे कभी पूछने की जरूरत भी नहीं समझे । आज ये लोग नक्सल मुद्दे की बात करते हैं । हमारी सरकार थी तो

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नक्सलवाद बस्तर तक सीमित थी, इनकी सरकार आ गई तो इन 15 सालों में नक्सली रायपुर तक पहुंच गए । ये नक्सलियों की चिन्ता करते हैं ।

श्री श्रीवास

श्रीवास\09-01-2019\a17\10.35-09.40

जारी....श्री दीपक बैज :- रायपुर तक पहुंच गई । नक्सलियों की चिन्ता करते हैं, हमारी सरकार ने एक नई नीति अपनाकर मुख्यमंत्री साहब ने घोषणा कर दिया है, उस परिवार से जाकर चर्चा करेंगे, जो परिवार नक्सली से प्रभावित हुआ है, उस गांव से चर्चा करेंगे, वहां के जनप्रतिनिधियों से चर्चा करेंगे कि नक्सली मुददे कैसे हल किया जा सकता है । माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने बंदूक की नोक पर, गोली का जवाब गोली से दिया । माननीय अध्यक्ष महोदय, कौन मरा है, वहां के आदिवासी मरे हैं, वहां बस्तर में गोली चलती है, वहां बस्तर में बम फूटती है, वहां पर सब लोगों को जीने और मरने के लिए छोड़ दिया था, आज हमारी सरकार ने उनको हल करने के लिए जमीनी स्तर पर काम करने की कोशिश कर रही है। और तो और आदिवासियों के विरोध के प्रकरण में कितने आदिवासी आज जेल में सड़ रहे हैं । साहसिक कदम है, इस कांग्रेस की सरकार को, माननीय सी.एम. साहब को धन्यवाद देता हूँ । बस्तर के आदिवासी धन्यवाद देते हैं । हजारों लोगों को झूठे प्रकरण में फंसाकर इनकी सरकार ने हमारे आदिवासियों को सत्यानाश करने का काम किया । अध्यक्ष महोदय, आज बहुत बड़ी राहत मिलने वाली है । बस 2-3 मिनट लग जायेगा अध्यक्ष महोदय । पत्रकार कानून, डॉक्टर व वकीलों के संरक्षण के लिए बहुत बड़ा फैसला है । इनको भी बहुत-बहुत स्वागत करता हूँ । अध्यक्ष महोदय, पिछले पंचायती राज व्यवस्था में पूरे पंचायत के पैसे को इन्होंने टॉवर में लगाने का काम किया । हमारी सरकार ने 70 लाख से अधिक देने का घोषणा किया है । मुझे उम्मीद है कि हमारी सरकार पैसा देगी । खाद्य सुरक्षा कानून, माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने चुनाव से पहले राशन कार्ड, चॉवल सब दिया, चुनाव के बाद राशन कार्ड काटा, चावल काटा, शिवरतन भईया कुछ काटने के लिए बचा है क्या ? आपके पास अभी कुछ नहीं बचा है । माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी चेम्बर में मैंने उस कुर्सी को देखा, माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल का अहंकार देखा । जहां भी मैं भाषण देता हूँ, वहां की सरकार गिर जाती है । बिल्कुल सही हुआ । जहां-जहां भी जाकर भाषण दिये हैं, वहां-वहां सीट हारे हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल से कांग्रेस की दुकान नहीं खुली है । माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल बाद कांग्रेस की दुकान खुली है, 25 साल तक कांग्रेस की दुकान रहेगी । (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन में जलकटटू जैसे शब्द का उपयोग हुआ है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सरकार को दुकान मान रहे हैं ना दीपक जी ? बस बेचोगे, पूरे छत्तीसगढ़ को । दुकान मान लिये यानी छत्तीसगढ़ को बेचोगे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री दीपक बैज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने इसी सदन में देखा है । हमारे विधायक आज मंत्री साथी हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, उन्होंने अनपढ़ शब्द तक का इस्तेमाल किया है । आज पूरे छत्तीसगढ़ की ढ़ाई करोड़ जनता देख रही है,

कांग्रेस की सरकार में एक अनपढ़ विधायक मंत्री बनकर बैठे हैं । इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, हमारे ऊपर आरोप लगाया जा रहा है कि हमने अनपढ़ शब्द का उपयोग किया । खुद ही बोल रहे हैं कि अनपढ़, मंत्री बनकर बैठे हैं । (व्यवधान)

श्री दीपक बैज :- हम आपकी बात को बोल रहे हैं । याद दिला रहे हैं ।

श्री मनोज सिंह मण्डावी :- जितना बेइज्जती किये हो, उतना कोई नहीं किया है ।

श्री दीपक बैज :- कांग्रेस मुक्त का बड़ा सपना देखा था माननीय अध्यक्ष महोदय। जहां देश में दो सीट से जीतकर आये हैं, उसको भी देखते । आप बीच के नक्शे में देख लीजिए, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ पूरा खाली हो गया। आप जितना लंबा पुल बना रहे हैं, वह पुल भी नहीं बन सकता ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कल मैंने एक बात कही तो उसको विलोपित करने में आपने जो व्यवस्था दी थी, उसमें लिखा था कि देह मुद्रा, भाव मुद्रा ठीक नहीं थी । संपूर्ण आचरण के आधार पर यदि वह विलोपित होता है तो

देह मुद्रा, भाव मुद्रा आज भी बन रही है । वैसे में तो पूरा भाषण विलोपित होना चाहिये । आप ही ने व्यवस्था दी थी कि देह मुद्रा के आधार पर ।

श्री मनोज सिंह मंडावी :- कोई भी भाषण जो है, सत्यता पर आधारित है तो कोई मुद्रा वगैरह नहीं लगता । आपके जैसे बनावटी बात नहीं होता ।

श्री शिवरतन शर्मा :- छत्तीसगढ़ को बेचोगे क्या ? (व्यवधान)

श्री दीपक बैज :- अभी कम से कम 25 साल तक तो चलने दीजिए ।

श्री मोहन मरकाम :- आपका दुकान चल रही है कि बंद हो गयी ।

श्री शिवतरन शर्मा :- हम लोग तो कभी दुकान चलाते नहीं । (व्यवधान)

श्री दीपक बैज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक छत्तीसगढ़ के बेटा के लिए लिखा हूॅ-

आपने ठोकर मारी, वह सहते रहे
आपने कीचड़ उछाला, वह सहते रहे
आपने किसानों का अपमान किया, वह सहते रहे
आपने बरसात में घर व जमीन नापा, तब भी वह सहते रहे
आपने जेल तक भेजा, तब भी वह सहते रहे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अरे वो कोई मोम का पुतला नहीं, जो पिघल जाये
अरे वो तो उस मिटटी का बना है, जो कण-कण में बसा है
अरे वही असली छत्तीसगढ़िया का बेटा है, जो उस कुर्सी में बैठा है।

अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

जारी...श्री मिश्रा

मिश्रा\10-01-2019\a18\11.40-11.45

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अध्यक्ष जी, ये केवल इस मुद्रा में माहिर हैं, धन, धरती के चक्कर में।

श्री रामकुमार यादव (चन्द्रपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर कृतज्ञता व्यक्त करने का मौका दिया। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद दुहूं जईसे अभी हमर सभी सदस्य मन बतात रहिन कि पहिली बार मुख्यमंत्री बनके जो तीन घंटा में काम करिस ओ काम ला ये मन 15 साल रहकर भी नहीं सोच सकिस। मैं सदन ला उदाहरण सहित बताहूं और आज ये छत्तीसगढ़ के माध्यम से पूरा सदन के कोना-कोना भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से बात ला देखत होही। ऐखर पूर्व के जेन सरकार रहिस और ये सरकार में मैं कुछ तुलना करना चाहत हों। ये सरकार बनते ही किसान के कर्ज माफ करे के बात करथे अऊ कर्जा माफ करिस। येखर पहिली जेन सरकार रहिस वो किसान ला पानी दे के लिए बैराज के डेम बनाये रहिस, कलमा, साराडीह, मिलौनी, बसंतपुर, शिवरीनारायण इस प्रकार 5 डेम बने रहिस। लेकिन कंपनी ला पानी देबर जेन डेम बने हे वो नदी हा पहिली छोटे रहिस। धीरे-धीरे वो बड़े होगे। ओमा जेन किसान, जेमन साग, सब्जी, ककड़ी, कलिंदर लगाकर अपन जीवन यापन करत रहिन ओ किसान मन के कोई सुध नहीं लीस लेकिन आज माननीय मुख्यमंत्री जी जैसे ही आज कुर्सी में बैठथे तो सबसे पहले किसान के चर्चा करथे। अभी हमर दीपक जी बतात रहिन कि जमीन ला रोककर राखे रहिन और ओमा कुछ बनात भी नहीं रहिन लेकिन मैं सदन ला बताना चाहत हौं और आदरणीय गृहमंत्री जी ला भी निवेदन करना चाहूं कि जांजगीर जिले में आर.के.एम., डी.बी., एथेना अईसे पावर प्लांट हे, त पावर प्लांट मन अपन कंपनी ला लगाये के खातिर जिस प्रकार से योजना बनाथे कि गरीब आदिवासी मनला, गरीब किसान मन ला फंसा देथे। ओमन के ऊपर नाना प्रकार के एफ.आई.आर. कर देथे। येला मैं आज कहना चाहथौं। जब वहां कंपनी नहीं लगे रहिस तब वहां गरीब किसान के ऊपर एकठन केस नहीं पाओ, लेकिन जब कंपनी आईस त गरीब किसान के ऊपर पांच-पांच ठन धारा लगाकरके ओमन के जमीन भी चले गीस और आज जाकर देखिहौ त ओमन कोर्ट कचहरी के चक्कर में चलत रहिथे। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी ला धन्यवाद देहूं जेह आज गरीब किसान के चिन्ता करत हे। मैं माननीय सदन ला अवगत कराना चाहत हौं कि आज जिस प्रकार के

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मुख्यमंत्री जी और माननीय मंत्री जी मन काम करत हैं जैसे कि यहां पर 32 प्रतिशत से भी ज्यादा आदिवासी समाज रथे। ओ आदिवासी समाज में 19ठन जाति के जाति प्रमाण पत्र नई बनत रहिस। सौरा, पाव, पोदिया, खड़िया, मांझी, उरांव, धनवार अईसे आदिवासी समाज जेमन जंगल में रहकर अपन चार, बुदेला ला तोड़कर अपन जीवन यापन करथे ओ सपना देखथे कि मोर लईका ला पढ़ा-लिखाकार मैं डॉक्टर इंजीनियम बनाहूं। अईसे सपना देखकर बाबा साहब अंबेडकर जी के संविधान के अनुसार में हमन आरक्षण लेकर आगे जाबो, अईसे सोचे रहिन। लेकिन मात्रिक त्रुटि के नाम से खाता में अलग लिखायेहे, गुरूजी अलग लिख दीस। ऐ त्रुटि के नाम से ओमन जाति प्रमाण पत्र बर 13 साल से तड़पत रहिस। माननीय मुख्यमंत्री जी ला मैं धन्यवाद दुहूं कि जब वह कांग्रेस अध्यक्ष रहिस मोला याद हे कि वह सराईपाली, बसना जाकर के धरना, आंदोलन करके चक्काजाम करके जो काम करे रहिस और जेन पिछली सरकार रहिस ओला बताये के काम करे रहिस। आज जइसे ही सरकार बनिस सरकार बने के साथ ही गरीब आदिवासी मन बर योजना बनाये के काम शुरू कर दीस ताकि ओ गरीब आदिवासी के जब आर्थिक मजबूती होही.....जारी

श्री प्रमेश

प्रमेश\10-01-2019\a19\11.45-11.50

जारी श्री रामकुमार यादव :- गरीब आदिवासी मन के योजना मा लागू कर दिस ताकि वो गरीब आदिवासी के आर्थिक मजबूती होही, वोकर लईका ला पढ़ाही लिखाही कहने वाले कहे रिहिस हे, जे महापुरूष गरीब किसान के पेट ला भर दो, अऊ नवयुवक गरीब लईका के दिमाग जो खाली हे वोला भर दो। येला बुद्धि मा प्रमलित कर दो। खाली किसान के पेट ला भर देना, वोकर साथ मा शिक्षित होना जरूरी हे। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी ला पूरा सदन ला मैं धन्यवाद दे थो, कि जम्मो वर्ग ये गरीब किसान घर के लईका ये, मोला ये सब चीज के लिए जीवन में सामाजिक कार्यकर्ता बल के मैं आपके छांव मा आगे बढ़े हो। आप मोला अच्छी तरह से जानथो अऊ आज ये चैनल के माध्यम से पूरा प्रदेश देखथे जिस प्रकार से जो है, हम तो पहली बार चुन के आयहन हमर सीनियर मन बोलत रथे ह मन सुनत रथन विपक्ष के मन भी बोलत रथे। जिस प्रकार के जो भाषा प्रयोग करे रथे, लेकिन आज ये कांग्रेस पार्टी 1947 के पहली भी ये देश के कोई चिंता करने वाला पार्टी हे, तो कांगेस पार्टी हे और जब जब ये सत्ता में आथे तो गरीब किसान के लिए जो चिंता करथे, ये कांग्रेस पार्टी ही करथे। रामकुमार यादव ये बात ला कहना चाहथे, ये सदन के माध्यम से कि करवा चराने वाला व्यक्ति, गरीब घर के व्यक्ति जेहर यहां तक कि आने के कपड़ा ला पहन के जीवनयापन करे हे। आज माननीय मुख्यमंत्री जी घुरवा के बात करे हे, नरवा के बात करे हे। ये गरीब किसान जो गरीबी नई देखे हे, अंतिम छोर मा बैठे हे ऐसे गरीब व्यक्ति मन के लिए बात करथे तो जो मन चूक के हाबे वो मन के मन मा तड़प होवथे, वो

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

मन के मन विचलित हो जावथे काबर कि वो मन सिर्फ बड़े आदमी मन के लिए योजना बनाए हे। बड़े आदमी के कर्जा माफ करे हे, बड़े आदमी जा जे आदमी ला ह मन देखे हन जे आदमी के सायकिल ले के औकात नई रिहिस हे वो आदमी 15 साल में वो मर्सीडीज कार में घूमे हे, लेकिन आज वो गरीब किसान वोकर चेहरा मा मुस्कान आगे हे कि आज ये सदन के माध्यम से मे कहना चाहथो, मैं धन्यवाद देना चाहथो कि आज भूपेश बघेल जी के सरकार आज गरीब व्यक्ति के चेहरा मा मुस्कान लान दे हे। आप आज मोला ये बजट मा बोले के मौका दे हो येकर लिए बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री बृहस्पत सिंह (रामानुजगंज) :- अध्यक्ष महोदय, ये पहली बार छत्तीसगढ़ बनने के बाद किसी किसान के मुख्यमंत्री बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसलिए छत्तीसगढ़ के किसानों के दर्द को प्रदेश के मुखिया आदरणीय श्री भूपेश बघेल जी ने समझा। जब हम लोग इसी सदन में, लगातार सदन में मामला आता रहा, इतने किसान आत्महत्या कर लिए, इतना ये हो गया, इतना वा हो गया। लगातार हम लोग आंदोलन करते थे, बहिर्गमन करते थे कोई सुनने वाला नहीं होता था। पहली बार ऐसा मौका मिला है, जो किसानों के कर्जा माफी किया है जिसके लिए सदन में माननीय यहां के मुखिया श्री भूपेश बघेल जी और इनकी सरकार को बहुत बधाई देता हूं, जो किसानों के दर्द को समझा है। जब इतना ज्यादा किसाना कर्जे पे कर्जा ले चलता जा रहा था जिसको वहन किया है। पहली बार हिन्दुस्तान का ऐसा राज्य है, जहां खुले बाजार में 20 रूपये किलो चावल बिक रहा है और किसानों की धान 2500 रूपये खरीदी हो रही है। ये पहला हिन्दुस्तान का राज्य है। इसलिए कोटि कोटि बधाई देता हूं जो किसानों के दर्द को समझा है। ये बहुत ही सौभाग्य की बात है, जो छत्तीसगढ़ की जनता ने मौका दिया है। अब बारी है, ये छत्तीसगढ़ के किसानों को संभालने का, यही सदन है, लगातार हम लोग सदन में बाद उठाते रहे हैं कि किसानों के खेत में पानी जाना चाहिए। छत्तीसगढ़ की जनता का पैसा लगता है, डेम लगाने का, ब्राज बनाने का, नहर बनाने का और उद्योगपतियों को पानी दिया जाता है। जब किसान पानी मांगने जाता था तो लाठी डंडे से पीटे जाते थे, उनके खिलाफ कार्यवाही होती थी। जो माननीय विधायक उनके साथ में जाते थे भाई नारायण साहू सहित मैंने कई लोगों को देखा उनके खिलाफ बर्बरता पूर्वक कार्यवाही करती थी, लगातार आंदोलन चलता रहता था। ये पहली बार है जो हम लोगों को किसानों के खेत में पानी देना चाहिए और हमारे जो साथी पहले इधर जो बैठे हैं इधर बैठते थे और बड़े बड़े लंबा चौड़ा भाषण देते थे......।

जारी श्रीमती सविता

सविता\10-01-2019\b10\11.50-11.55

जारी श्री बृहस्पत सिंह :- हम लोग कोदो का चावल खाकर पले हैं कोदो का चावल निकालने की बड़ी प्रक्रिया है आज कोई राईस मिल में उसका चावल नहीं निकलता है, ये उसकी बात कर रहे थे और

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हमारे मुखिया ने बहुत अच्छा निर्णय लिया, मैं उनको धन्यवाद देता हूँ लगातार रासायनिक खाद का उपयोग होने के कारण, मैं खुद एक किसान हूँ, फावड़ा खोदकर लाता हूँ, नांगर जोतता हूँ, खेती करता हूँ। जब हम लगातार रासायनिक खाद की खेती करते हैं तो आप देखेंगे कि लगातार 8-10 साल खेती करने के बाद, उसकी परत जब जमीन के एक डेढ़ फीट जाएंगे, 8 इंच, 6 इंच का लेयर बन जाता है जमीन बहुत हार्ड हो जाती है, उसमें लेयर हो जाता है उसके नीचे पानी भी नहीं धंसता। आप फावड़ा, गैंती से खोदेंगे तो भी नहीं खुदता, रासायनिक खाद से ऐसी एक लेयर की परत बन जाती है इसलिए उस मामले में अच्छे ढंग से उपजाऊ बनाने के लिए, ये जो जैविक खाद का प्रयोग हमारे मुख्यमंत्री जी ने सोचा है, यह बहुत अच्छा है। जहां तक खेती को बढ़ावा देने के लिए निवेदन करूंगा, हमने इतने साल इतने हजार करोड़ खर्च करने के बाद, हमने कृषि के लिए बहुत सारे रिसर्च सेंटर बनाकर रखा है। हम बहुत सारे आधार बीज से प्रमाणित बीज बनाने तक ही सीमित रह गये। अभी तक हम लगातार इतनी कोशिश करने के बाद भी हाई ब्रीड का बीज उत्पादन नहीं कर पायें, नहीं बना पायें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है जब हम लोग गांव में खेती करते थे तो हम लोकल बीज ही उपयोग करते थे तो प्रति एकड़ 6 क्विंटल से 10 क्विंटल के बीज ही पैदा होता था। आज जब हम आधार बीज लायें, प्रमाणित बीज लायें तो हमारी भी पैदावार 15 से 18 क्विंटल तक प्रति एकड़ बढ़ पायी। जब छत्तीसगढ़ की कांग्रेस की सरकार के समय हम लोगों ने हाई ब्रीड लाया, उस समय पूरे हिन्दुस्तान में विरोध हुआ, इनके दल के लोगों ने विरोध किया। अब हिन्दुस्तान के लोग अपना बीज नहीं रख सकेंगे, विदेशी बीज आ गये, पूरे हिन्दुस्तान में खूब अफवाहें फैली, लेकिन इसके बाद भी वह लागू हुआ। आज हमारा किसान एक एकड़ में जो हाई ब्रिड का धान पैदा होता है, वे आराम से 28-25 क्विंटल तक पैदा कर रहे हैं ये स्थिति है ये कांग्रेस लायी, इसके बाद भी एक ही बात हमारे विपक्ष के साथी कहते थे कि 70 सालों में कांग्रेस ने क्या किया? ये तो इस तरह से बात बोलते थे, जैसे 70 सालों में कांग्रेस ने कुछ भी नहीं किया। इनको यही पता नहीं कि जितने हमारे नेता भाषण देते थे, वे किस स्कूल से पढ़कर आये हैं, जब कांग्रेस की सरकार ने स्कूल खोला, आप उस स्कूल से पढ़कर आये, डॉ. रमन सिंह जी उस स्कूल से डॉक्टर बनकर आयें। मैंने कवर्धा का अस्पताल देखा है डॉ. साहब जहां उस अस्पताल में प्रैक्टिस करते थे। वह कांग्रेस के जमाने की बनी हुई स्कूल है तो ऐसी कोई बोलने की बात नहीं है। हमें अच्छे से काम करना है। आज समय आया है हम लोगों को यह करना चाहिए। छत्तीसगढ़ को प्रकृति ने इतना दिया है कि यहां 12 माह नदी नाले बहते हैं उन नदियों का पानी दोहन करके, किसानों के खेत तक हम पहुँचा सकें और किसानों को अच्छे से आगे बढ़ा सकें। यही हमारी कोशिश होगी।

समय :

11:53 बजे **(सभापति महोदय (श्री अमरजीत भगत) पीठासीन हुए)**

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मानननीय सभापति महोदय, अभी भी धान खरीदी केन्द्रों में चल रही है। इनके लगातार 15 साल वाले, अधिकारी बैठे हैं ये हालत इन लोगों ने बना दी है कि एक-एक पैरा चेक करने जा रहे हैं, धान का पैरा चेक करने जा रहे है। आप धान के पैरा से कैसे अंदाज लगा सकते हैं कि कितना क्विंटल में कितना धान हुआ ? आपके पास पटवारी रिकार्ड है, राजस्व रिकॉर्ड है कितना हेक्टेयर में धान फसल लगाते हैं ये सारी जानकारी है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, मार्गदर्शक मण्डल में कोरम पूरा हो गया। एक ही ठोक खाली था।

श्री धनेन्द्र साहू :- आप अपने उधर की चिन्ता रखिए।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, इसकी भी सुधार करने की जरूरत है। धान 2500 रूपये क्विंटल खरीदी हो रही है सरकार बहुत अच्छा काम कर रही है कि बाहर के धानों को रोक लगा रही है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, मैं उस दिन भी आपत्ति लिया था और कल भी अपने भाषण में कहा था और आज भी कह रहा हूँ ये सदन की अवमानना है और इसको रोका जाना चाहिए और नहीं, तो आप ये साबित करें कि इस सोसायटी में इस क्वालिटी के धान को आज 2500 रूपया दिया गया है। उधर माननीय अधिकारी लोग बैठे हैं किसी भी सोसायटी से जानकारी मंगवा लीजिए। पर ये सदन की अवमानना है, बिल्कुल सदन की अवमानना है, आपकी गरिमा कम हो रही है, इस तरह की बयानबाजी से। आप जानकारी मंगवा लीजिए कि कहां पर 2500 रूपये में बिका है। आप जानकारी मंगवा लीजिए, आपके पास आसंदी में अधिकार है (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय संसदीय मंत्री जी, अभी तक बर्दाश्त नहीं हो पाया। हार का झटका जो जनता ने दिया, वह बर्दाश्त नहीं हो पा रहा है।

सभापति महोदय :- नेता जी और माननीय मुख्यमंत्री जी का भी भाषण होना है।

श्री बृहस्पत सिंह :- (व्यवधान) हम ये पूछना चाहते हैं कि किसानों का धान 2500 रूपये में खरीदी होनी चाहिए या नहीं ? आप बता दीजिए, यह सदन जानना चाहता है, छत्तीसगढ़ की जनता जानना चाहती है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, सर्वप्रथम तो आपको सभापति के स्थान पर बैठने के लिए बहुत-बहुत बधाई। पहली बार आपको सभापति के रूप में देख रहे हैं।

दूसरी बात आपके सभापति के रूप में स्थापित होने के पश्चात् कोई माननीय सदस्य असत्य कथन कर रहा है और असत्य कथन के लिए उसे प्रताड़ित किया जाना चाहिए ....

जारी श्री चौधरी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

चौधरी\10-01-2019\b11\11.55-11.60

पूर्व जारी.. श्री शिवरतन शर्मा :- तो असत्य कथन के लिए उसे प्रताडित किया जाना चाहिए, कहां पर किस किसान को 2500 रुपये मिल रहा है, जरा बता दें। पूरे प्रदेश में एक भी किसान का बता दो जिसको 2500 रुपये मिला हो। ... (व्यवधान)..

श्री दीपक बैज :- माननीय सभापति महोदय, किस प्रकार का असत्य कथन है। इस अनूपूरक बजट में प्रावधान है।... (व्यवधान)..

सभापति महोदय :- माननीय सभी सदस्यों से अनुरोध है कि कृपया सहयोग करें। माननीय नेता जी भी भाषण होना है और मुख्यमंत्री जी का भी जवाब आना है।... (व्यवधान)..

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, यह असत्य कथन है, माननीय सदस्य साबित करें।... (व्यवधान).. यह आंसदी की, सदन की अवमानना है। सदन की अवमानना नहीं सहेंगे।... (व्यवधान).. यह साबित होना चाहिए कि 2500 रुपये कहां पर मिल रहा है।... (व्यवधान).. आप साबित करवाईये कि कहां पर मिल रहा है।

श्री शिवरतन शर्मा :- एक भी किसान को 2500 रुपये क्विंटल मिला हो तो बता दें।

श्री बृहस्पत सिंह :- ये सरकार की जवाबदारी है, आप चिंता मत करो।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- शिवरतन जी बैठिये, बृहस्पत जी, एक मिनट, बैठ भाटों, बैठ थोडा। माननीय सभापति जी, इतनी कुण्ठा क्यों हैं? यह तो माननीय राज्यपाल के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है।

श्री अजय चन्द्राकर :- वह कहे हैं कि बिक रहा है, आप रिकार्ड निकलवा लीजिए। हम आपकी बात को गंभीरता से सुनेंगे, रिकार्ड निकलवा लीजिए, 2500 रुपये में बिक रहा है। मैं कल का भुगतान प्रस्तुत कर दूंगा, आप समय दीजिए। 300 रुपये बोनस जोड़कर 2050 और 2070 रुपये में भुगतान हुआ है। अब आप बोलिये।

श्री रविन्द्र चौबे :- आदरणीय, आप इधर 15 साल बैठे रहे।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब यह 15-20 साल वाला विषयांतर है। जो 2500 रुपया वाला है...।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं उसी पर आ रहा हूं। आपने अभिभाषण को पढ़ा, सुना देखा, आपने अपनी अभिव्यक्ति कल कर दी। उसमें लिखा है जो प्रावधान किया गया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय, मेरी आपत्ति है। उन्होंने कहा कि बिक रहा है, आप रिकार्ड निकलवा कर बात करिये। तब मैंने कहा कि सदन की अवमानना है, आप जो कह रहे हैं वह सच है। मैं उसमें सहमत हूं। लेकिन आपके सदस्य ने सदन में भाषण किया कि 2500 रुपया में धान बिक रहा है, आप रिकार्ड निकलवा लीजिए। ये सदन की, आसंदी की अवमानना है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृहस्पत सिंह :- संसदीय कार्य मंत्री जी, संसदीय ज्ञान बताने लगे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- देखिये, एक के बाद एक लगातार असत्य कथन हो रहा है। माननीय बृहस्पत सिंह जी के पहले दीपक बैज जी का भाषण हुआ। दीपक बैज जी ने कहा कि हमारी सरकार ने 6 हजार करोड़ रुपये का कर्ज माफ कर दिया, आपने अनुपूरक बजट में व्यवस्था 3 हजार करोड़ की है और 6 हजार करोड़ का कर्ज माफ हो गया। आप लोग क्यों किसानों के साथ धोखा कर रहे हो ? जो नहीं हुआ है उसको क्यों बोल रहे हैं कि हम यह कर दिये। माननीय सभापति जी, असत्य कथन करने सदन की लगातार अवमानना होगी। ऐसे असत्य कथन करने वाले सदस्यों को प्रताड़ित करना चाहिए और ऐसी बातों को विलोपित करना चाहिए।

श्री बृहस्पत सिंह :- इतना क्यों छटपटा रहे हैं ? आपको 15 साल मौका दिया था, आपको कर लेना चाहिए था। आपको किसने मना किया था ?

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय सभापति महोदय, हम किनको-किनको प्रताड़ित करने के लिए आपसे कहें। किसी ने 300 रुपये देने की बात कही थी और उधर बैठ गये तो क्या आप प्रताड़ित करेंगे ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, वह विषय में नहीं है, आप विषयांतर कर रहे हैं। धान 2500 रुपये में बिक रहा है, यह विषय है।... (व्यवधान)..

श्री रविन्द्र चौबे :- किसी ने 2100 रुपये देने की बात कही तो आप उनको प्रताड़ित करेंगे, ये किस तरीके से प्रताड़ित करने की बात करते हैं। ये सवाल ही नहीं है। माननीय सभापति महोदय, इस अभिभाषण में इसका उल्लेख है, माननीय सदस्य उसी को कह रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- महोदय, आप ये विषयांतर कर रहे हैं। 2500 रुपये में कहां बिक रहा है, इसकी जांच करा ली जाये। ... (व्यवधान)..

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, विषयांतर रहे हैं। एक भी किसान को 2500 रुपये क्विंटल मिला हो तो आप बता दीजिए। ..(व्यवधान)..

श्री बृहस्पत सिंह :- आप लोग विषयांतर करने की कोशिश मत करिये। ... (व्यवधान).. उनके खाते में पैसा जायेगा। आप चिंता मत करिये ... (व्यवधान)..

श्री सौरभ सिंह :- यह कल मेरे खाते में पैसा आया है। ... (व्यवधान)..

श्रीमती नीर

नीरमणी\10-01-2019\b12\12.00-12.05

समय:

12.00 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

(व्यवधान)

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- हम कायम हैं । (व्यवधान) 25 सौ रूपये क्विंटल भी देंगे, हम देंगे, बोनस भी देंगे । (व्यवधान) उसी का प्रावधान है । मुख्यमंत्री जी ने जो कहा है 25 सौ रूपये क्विंटल हर किसान को मिलेगा । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गांव की कहावत है कि खिसियाली बिल्ली खम्भा नोचे । गांव में एक कहावत है कि गुस्से में जब बिल्ली को नहीं मिला तो खम्भा नोचना चालू कर दिया । (व्यवधान) इनकी वही वाली बात है ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय राज्यपाल के अभिभाषण में यह बात निश्चित रूप से सरकार ने कही है कि हम 25 सौ रूपये क्विंटल देंगे । उसमें चर्चा हो रही है।

श्री बृहस्पत सिंह :- देंगे, बिल्कुल देंगे । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने अनुमति दी है । अब माननीय सदस्य यह कह रहे हैं कि 25 सौ रूपये में भुगतान हो रहा है । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- मैं भुगतान का नहीं बोला । देंगे, अभी भी बोल रहा हूं कि देंगे । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह आपकी आसंदी की, सदन की अवमानना है । (व्यवधान)

श्री धनेंद्र साहू :- यही तो आपके समझने में फर्क है ।

श्री अजय चंद्राकर :- आप अपना भाषण देख लीजिये । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- अभी भी बोल रहा हूं कि हम इसको देंगे । आपको एतराज है तो बताईये । (व्यवधान) आपको मौका मिला तो आपने क्यों नहीं दिया ? आपको देने के लिये किसने रोका था ? 15 साल में आपने क्यों नहीं दिया ? (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- (व्यवधान) यह कहा कि 2050 और 2070 रूपये में भुगतान हो रहा है । इनको प्रताड़ित किया जाये, यह अवमानना है । (व्यवधान)

श्री धनेंद्र साहू :- आप तो सुनने को बिल्कुल तैयार नहीं हैं । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस तरह की चीजों को रोका जाये ।

अध्यक्ष महोदय :- बैठिए ।

श्री धनेंद्र साहू :- आपने ही यहां पर सदन में पारित किया है । अभी खरीदी हो रही है वह आपके खाते में जमा हो जायेगा । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- आप रिकॉर्ड निकलवाकर बात करिये न । (व्यवधान)

श्री धनेंद्र साहू :- 25 सौ रूपये में .... (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- ऐसा नहीं होता है, क्या आप कुछ भी बोल देंगे ? (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धनेंद्र साहू :- 25 सौ रूपये में खरीदी हो रही है, भुगतान नहीं हुआ है ।

श्री अजय चंद्राकर :- भाटो, तें हा कतको बोल, मंत्री नइ बनस । कतको बोल ले, मंत्री नइ बनस । रिकॉर्ड निकलवा ले । (व्यवधान)

श्री धनेंद्र साहू :- वह भुगतान उनको जमा हो जायेगा । आप कुछ भी बोले जा रहे हैं । (व्यवधान) भुगतान हो जायेगा, भुगतान से मतलब है ।

श्री कवासी लखमा :- 15 साल में 21सौ नहीं देने वाला सरकार... (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- किसानों के खाते में पैसे जायेंगे । (व्यवधान) अभी हम लोग बजट पास कर रहे हैं, उनके खाते में पैसे जायेंगे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मान्य परंपरा रही है कि यदि सदस्य भाषण देने के लिये खड़े होते हैं तो उनसे यह अपेक्षा रहती है कि वे सत्य कथन करें । (व्यवधान) यहां सत्तारूढ़ पार्टी के दो सदस्यों का भाषण आज हुआ । माननीय बृहस्पत जी ने कहा कि किसान को धान की कीमत 25सौ रूपये क्विंटल मिल रही है । माननीय दीपक जी ने कहा कि श्री भूपेश जी की सरकार ने 61सौ करोड़ रूपये का कर्जा माफ कर दिया, ये दोनों कथन असत्य हैं । आप माननीय राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर बोल रहे हैं । (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- क्या असत्य है ? (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- आप रिकॉर्ड निकलवा लीजिये । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- 25 सौ रूपये देंगे, आपको तकलीफ है तो बताईये । (व्यवधान) आपको देने में तकलीफ है तो विरोध करिये ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्य ने ऐसी कोई बात कही है तो रिकॉर्ड निकलवाकर देख लेंगे । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब हम लोगों को इनसे पूछकर बोलना पड़ेगा कि क्या बोलना है और क्या नहीं बोलना है । हम इस बात की जरूरत तो महसूस नहीं करते हैं कि आप लोगों से पूछकर हम लोग बोलें कि हमें क्या बोलना है और क्या नहीं बोलना है । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बात तो हमने सदन की गरिमा के लिये उठायी है । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- 25 सौ रूपये धान की कीमत देने का उन्होंने कार्यवाही कर दी है, प्रक्रियाधीन है । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- 25 सौ रूपये भुगतान नहीं हो रहा है । (व्यवधान) माननीय अध्यक्ष महोदय, आपकी व्यवस्था, आपका आदेश मान्य है ।

श्री अमरजीत भगत :- अब इसमें भी हमें आपसे पूछना पड़ेगा । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- मैं ऐसी कई घटनायें गिना सकता हूं और आगे भी आज विधेयक में हम इस बात की चर्चा करेंगे कि लगातार इस सदन की, गवर्नर की अवमानना हुई है, (व्यवधान) मुझे इसका व्यक्तिगत तौर पर दुख है कि इस कथन को रिकॉर्ड में लिया जा रहा है कि 25सौ रूपये भुगतान हो रहा है। (व्यवधान) यह दुख का विषय है । माननीय अध्यक्ष महोदय, ये सदस्य आसंदी की अवमानना कर रहे हैं । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप जल्दी समाप्त करिये ।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये मुझे बोलने दें तब न । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यवस्था देने से पहले माननीय सदस्यों का जो भाषण हुआ है (व्यवधान) इसको विलोपित करायेंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- मैं देख लूंगा । अभी तो आने दो ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सदन के सम्मान का मामला है । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- सदन के सम्मान में बोल रहे हैं । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मैं देख लूंगा ।

श्री मनोज सिंह मण्डावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसानों का कर्ज माफ हो रहा है, किसानों की धान खरीदी हो रही है इसलिये इन लोग विरोध कर रहे हैं । (व्यवधान) अभी लोकसभा चुनाव है, 11 के 11 कांग्रेस आयेगी इसलिये ये तड़प रहे हैं । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- बैठिए ।

...........श्री कुरैशी

कुरैशी\10-01-2019\b13\12.05-12.10

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 2 दिनों से लगातार यह चर्चा हो रही है । सदस्य, महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा कर रहे हैं । माननीय चौबे जी ने व्यवस्था की बात की, माननीय सदस्यों ने भी कहा कि आप बिल्कुल ठीक बोल रहे हैं कि आपने व्यवस्था की बात की है और अभिभाषण में भी व्यवस्था की बात है । लेकिन जब माननीय सदस्य इस बात को बोल रहे हैं कि पूरे प्रदेश में 2500 रूपया मिल रहा है । माननीय सदस्य ने कहा कि अधिकारी दीर्घा में अधिकारी बैठे हैं, मंत्रिगण भी बैठे हैं । यदि मिल रहा है तो प्रदेश की किसी भी सोसायटी में यदि उसका भुगतान हुआ है तो अधिकारी सूचित कर दें कि किस सोसायटी में किस किसान का मिला है, केवल इतनी से ही बात है । इसी बात को लेकर माननीय सदस्य की चिंता है कि कम से कम इस सदन में जो बातें हों, असत्य न हों और सत्यता आए । इसलिए व्यवस्था के संदर्भ में नहीं कह रहे हैं कि व्यवस्था नहीं की है, लेकिन आज भुगतान हुआ है और आज मिल गया है, केवल इस बात पर आपत्ति

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

है । मैं चाहूंगा कि माननीय अध्यक्ष का कोई निर्देश जारी हो और यदि किसी सोसायटी में है तो वह बात आनी चाहिए । माननीय सदस्य ने जो बात कही है, उसे स्वीकार करना चाहिए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आपने कहा कि उन्होंने चिंता जाहिर की । अब जनता ने चिंता करने के लिए ही आपको वहां बैठाया है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- हम तो चिंता करेंगे और पूरी ईमानदारी से करेंगे और आपकी ग़लतियों को गिनाएंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप बिल्कुल चिंता कीजिए, आप चिंता करने के लिए स्वतंत्र हैं ।

श्री मनोज सिंह मंडावी :- ये नैतिकता की बात करते हैं, 15 सालों तक आदिवासियों को गाय देने की बात इसी सदन में करते थे । बेरोज़गार साथियों को बेरोज़गारी भत्ता देने की बात की गई थी । 2100 रूपए प्रति क्विंटल में धान खरीदने की बात की गई थी, बोनस देने की बात की गई थी । ये सारी घोषणाएं मुख्यमंत्री जी के द्वारा की गई थी और आज एक सदस्य द्वारा की गई बात पर इतनी आपत्ति ।

श्री अमरजीत भगत :- चिंता के बारे में एक लाईन कहना चाहता हूं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अरे, अमरजीत जी । आपकी चिंता से हम सब चिंतित हैं । आपको क्यों मंत्री नहीं बनाया गया ।

श्री बृहस्पत सिंह :- ये हल्ला करने की जवाबदारी पूरे पांच साल के लिए आपको मिली है ।

श्री अमरजीत भगत :- चिंता से चतुराई घटे, घटे दुख से शरीर । चिंता मत करो, ये भूपेश बघेल जी की सरकार है । आप सबका और पूरे प्रदेश का ख्याल रखने के लिए यह सरकार बैठी है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- जो बोलना है बोलो ।

श्री अरूण वोरा :- अध्यक्ष महोदय, मेरा आपसे अनुरोध है कि एक चिंता और चिंतन शिविर भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों के लिए लगा दें तो बड़ी कृपा होगी । (हंसी) ताकि आप चिंतन भी करें ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- और उसके गुरू आप बनें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- बिल्कुल चिंतन शिविर लगाना चाहिए और उस चिंतन शिविर में अरूण वोरा जी, धनेन्द्र जी, सत्यनारायण जी, अमरजीत जी, अमितेश जी को मार्गदर्शक मंडल में भेजा जाएगा या ये यहीं रहेंगे । इस विषय पर चिंता होनी चाहिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- और ये पूरा सदन आपके कैरियर की चिंता करता है, वोरा युग की समाप्ति की बाद ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अरूण वोरा :- नहीं, नहीं, वोरा युग की समाप्ति कभी नहीं हो सकती । इस भुलावे में मत रहिए । हमारा समय अब तो शुरू हुआ है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, हाथ जोड़कर निवेदन है कि इन लोगों ने बेवजह मेरा समय बर्बाद किया है, वह समय इन्हीं में काउंट कर लिया जाएगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- फिर ग़लत बात, अध्यक्ष महोदय । हमने किसी का समय बर्बाद नहीं किया है, हमने अपनी बात कही है और आपके संरक्षण में कही है । इनको क्या अधिकार है हमारी बात को गलत-सलत कह दें, आपके रहते ।

श्री बृहस्पत सिंह :- थोड़ा गुस्सा कम करो भाई, पूर्व संसदीय कार्यमंत्री जी । अध्यक्ष महोदय, मैं किसानों की बात बोल रहा हूं थोड़ी मदद की जाए । अध्यक्ष महोदय, इनको बड़ी तकलीफ़ है । पिछले चुनाव में पूरे छत्तीसगढ़ के किसानों को इन्होंने धोखा देने का काम किया था । धान की कीमत 2100 रूपए और 300 रूपए बोनस देने की बात करके ये सरकार में आए । हमने लगातार पांच साल तक इनके संज्ञान में लाया लेकिन ये सुनने को तैयार नहीं थे । जनता ने इनको किनारे बिठा दिया । आज जब 2500 रूपए प्रति क्विंटल में सरकार ने धान खरीदने का निर्णय लिया और आपके बजट में पास किया, उनके खाते में भेजने की व्यवस्था कर रहे हैं तो इनको बड़ी चिड़बिड़ी लग रही है । क्योंकि ये किसानों के सहयोगी तो कभी रह नहीं, इन्होंने तो किसानों का पानी छीनकर उद्योगपतियों को देने का काम किया । इसलिए इनको बड़ी तकलीफ़ हो रही है । आपने देखा होगा किसानों ने कई बैंकों में, प्रियदर्शिनी बैंक में कई किसानों ने जमा किया, लेकिन इनकी सरकार में पैसा गायब हो जाता था । अध्यक्ष महोदय, लाखों लोगों का पैसा गायब हो गया, कोर्ट में मामला जाता है, अदालत संज्ञान में लेती है..........जारी

---श्री ठाकुर-

ठाकुर\10-01-2019\b14\12.10-12.15

जारी.......श्री बृहस्पत सिंह :- लाखों लोगों का पैसा गायब हो गया और कोर्ट में मामला जाता है, अदालत संज्ञान लेती है और नार्को टेस्ट के लिए अदालत आर्डर करता है। पूरी दुनिया ने देखा अध्यक्ष महोदय छत्तीसगढ़ के साथ- साथ और जो अधिकारी जिन्होंने पैसा घोटाला किया था। नार्को टेस्ट में वीडियो में आया अध्यक्ष महोदय। समाचार पत्र में कौन-कौन मंत्री, कौन-कौन सा नेता कितना-कितना घोटाला पैसा लिया और बचाया ये भी आपने देखा होगा टी.वी. चैनलों में अध्यक्ष महोदय । सबने, पूरी दुनिया ने देखा। ये बात इनको खुलने से पहले चिलबिली लग रहा है अध्यक्ष महोदय। इतना करोड़ नागरिक का पैसा गायब हुआ आप चिंता नहीं किये। लगातार हमने मांग किया आपने चिंता नहीं किया। अदालत ने चिंता जाहिर किया। नार्को टेस्ट हुई। सारे लोगों के नाम आये लेकिन आपने उसमें कार्यवाही तक नहीं किया। किसानों का धान जो हम लोग 1-1 दाना जमा करते हैं। चावल में घोटाला किया नॉन

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

घोटाला में कई करोड़ रूपया घोटाला कर देते हैं अध्यक्ष महोदय। छत्तीसगढ़ की गाढ़ी कमाई जो जनता के विकास के लिए जाना चाहिए, उसे ये अधिकारी और नेता बांटकर खा गये। अधिकारियों के खिलाफ आपने कार्यवाही किया, जो नेताओं के नाम आये, उनके खिलाफ कार्यवाही क्यों नहीं किया। सिर्फ छोटे बिचौलियों के खिलाफ क्यों आपने कार्यवाही किया। इसमें अगर एस.आई.टी. जांच हो गई, उसके लिए अगर जांच की घोषणा कर दिया तो कौन सा ऐसा हो गया अध्यक्ष महोदय कि चिलबिला रहे हैं ये साथी लोग। अध्यक्ष महोदय, हमारे त्रिनेताओं की लगातार हत्या हुई। हमारे प्रथम लाइन के सारे नेताओं की हत्या हो गई। लगातार हम लोगों ने इस सदन में सी.बी.आई. जांच की बात करते रहे। पीड़ित परिवार महेन्द्र कर्मा यहां रोती थी। रो-रो कर अपनी सारी गाथान बताई लेकिन सरकार में थोड़ा भी पसीज नहीं आया अध्यक्ष महोदय। थोड़ा भी नहीं सोचा और रहम नहीं आई। बड़े हंसकर जवाब दे रहे थे। मजाक उड़ाया जाता था इसी सदन में। इसका सबक जनता ने सिखाई है। आज अगर काम करने का है तो बड़ा छटपटी लग रहा है। दूध का दूध और पानी का पानी हो जाने दीजिए। क्या डर रहे हो अगर। अगर आपका हाथ नहीं है तो क्यों डर रहे हो। अगर कोई घटना में शामिल नहीं है तो क्यों डर रहे हो। जांच हो जाने दीजिए फिर क्यों डर रहे है आप। अगर किसानों को 2500 रूपए धान का मिल रहा है तो शर्मा जी क्या तकलीफ हो गई है आपको।

श्री शिवरतन शर्मा :- बृहस्पत जी, फिर गलत कथन। 2500 रूपये कीमत मिल रहा है।....(व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- बजट में पास कर दिया हमने। उनके खातों में चले जाएगा। आपको क्या तकलीफ हो रही है। आपको तकलीफ हो रहा है तकलीफ करिए। धरना प्रदर्शन करिए कि किसानों को नहीं मिलना चाहिए लेकिन किसानों का धान 2500 रूपए खरीदने के लिए संकल्पित हैं और बजट पास किया उनके खाते में जाएगा। आप चिंता मत करिए। किसानों का कर्जा माफी हुआ है उनके खातों में जाना चालू हो गया है और जा रहा है। आप उसकी चिंता मत करिए। ये चिंता करने के लिए जनता ने इनको इधर बैठाया है और आपको इस संबंध में सही सुझाव देने के लिए उधर बैठाया है। उसका दुरूपयोग मत करिए। अध्यक्ष महोदय, आपसे निवेदन करूंगा। बहुत ज्यादा न कहते हुए, क्योंकि और सारे लोगों को बोलना है। अभी मेरा एक अनुरोध है अध्यक्ष महोदय। जो हमने छत्तीसगढ़ में बहुत सारा डेम बनाया है। किसानों के खेत में पानी पहुंचाने के लिए हमने सिंचाई परियोजना बनाया है लेकिन उस पानी का उपयोग किसानों के खेत में पहुंचाने के बजाय उद्योगपतियों को लाभ पहुंचाने का काम चल रहा है अध्यक्ष महोदय। किसानों के खेत में नहीं पहुंच रहा है। बहुत सारी ऐसी सिंचाई परियोजनाएं हैं जो कागजों में बंद हो गये हैं। मेरे क्षेत्र का एक कोटपाली परियोजना था। जब आप मध्यप्रदेश में थे उस समय यह परियोजना बनी थी। कन्हर नदी का जिसको कोटपाली परियोजना के नाम से आपने बनाया था 700 मेगावाट बिजली पैदा होना था। ढाई- तीन सौ गांव का सिंचाई होना था। इनहोंने इस परियोजना

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

का ऐसा सत्यानाश किया। डायवर्सन स्कीम बदल दिया। किसानों के पूरे खेत खराब हो गये। पूरे पक्के सट्रक्चर बह गये अध्यक्ष महोदय। एक डिसमिल सिंचाई नहीं हो रहा है और धुआंधार नहर के नाम पर किसानों के खेत खोदे जा रहे हैं। यह लगातार हो रहा है इस पर रोक लगना चाहिए। ताकि किसानों को मुआवजा मिल सके और वो स्ट्रक्चर को पुन: अपने बजट में जुड़वाकर किया जाए। इन लोगों ने सत्यानाश कर डाला अध्यक्ष महोदय। अब समय आया है तो उसको ठीक कर दीजिए अध्यक्ष महोदय। पंचायत मंत्री की भी बात थी। इनके सड़क बने हैं, पुलिया बने हैं। सारे पुलिया बह गये।

श्री अजय चंद्राकर : - माननीय अध्यक्ष महोदय, वो दो लोग आपस में क्या षड़यंत्र कर रहे हैं। आप क्या भड़का रहे हो इसको पूरा सदन जानना चाहता है।

श्री बृहस्पत सिंह :- आप चिंता मत करिए। जितना 5 साल है वही चिंता करिए। अध्यक्ष महोदय, संसदीय मंत्री हमारी पंचायत मंत्री होते थे। आज भी रोजगार गांरटी के माध्यम से शौचालय का निर्माण हुआ। बहुत बड़े-बड़े बोर्ड लगे। प्रत्येक गांव में ओ.डी.एफ. करने की बात आयी। ओ.डी.एफ. नहीं होने के कारण अधिकारियों की तनख्वाह रोकी गयी। इंक्रीमेंट रोका गया। पंचायत भवनों के खाते रोके गये अध्यक्ष महोदय।

श्री अमितेश शुक्ल : - हम लोग ये प्रयास कर रहे है वहां पर बात करके कि आप तो प्रतिपक्ष के नेता नहीं बन पाये तो अध्यक्ष कैसे बनाया जाए बीजेपी का। ये चर्चा चल रही थी।

श्री अरूण वोरा : - हम लोगों ने गहन चिंता किया आपके बारे में।

श्री अजय चंद्राकर : - आप दोनों मिलकर बाते करके मुख्यमंत्री जी के .....जारी

.......जारी श्री अरविंद

अरविंद\10-01-2019\b15\12.15-12.20

श्री अजय चन्द्राकर :- आप दोनों मिलकर बात करके मुख्यमंत्री जी के खिलाफ षडयंत्र कर रहे हो।(हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अकबर जी बैठे हैं, निवेदन करेंगे कि इस पर एक एस0आई0टी0 का गठन होना चाहिए कि क्या षड़यंत्र हो रहा है।

श्री अरूण वोरा :- अभी तो यह शुरूआत है।

श्री अजय चन्द्राकर :- इन्होंने कहा कि दोनों क्या बात कर रहे थे, उसकी जांच के लिए एस0आई0टी0 बननी चाहिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अमितेश भैय्या ने कल एक कविता सुनाई थी, बहुत से सदस्य नहीं थे, फिर से उस कविता को सुना देते। कल एक दोहा सुनाये थे, बहुत सारे सदस्य नहीं थे, फिर से सुना देते।

श्री अमितेश शुक्ल :- वह रामचरित मानस है, उसको कविता मत बोलो।

श्री लालजीत सिंह राठिया (धर्मजयगढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण पर कृतज्ञता ज्ञापन के लिए खड़ा हुआ हूँ। हमारी कांग्रेस की सरकार ने, माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार ने छत्तीसगढ़ के किसानों की कर्जमाफी के लिए अनुपूरक में प्रस्ताव लाया , किसानों की कर्जमाफी की घोषणा की है। छत्तीसगढ़ के इतिहास में पहली बार हुआ है कि शपथ लेते ही माननीय मुख्यमंत्री जी ने 3 घंटे के अंदर ही किसानों के कर्जमाफी की घोषणा की है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बताना चाहूंगा कि हम लोग इस सदन में पिछले 15 वर्षों से चुनकर आते रहे हैं, पिछली बार भी आये थे।

श्री भीमा मण्डावी :- माननीय अध्यक्ष जी, राठिया जी का टावेल पहनकर नाचते हुए कोई वीडियो जारी हुआ था। इसका भी एक एस0आई0टी0 गठन हो जाए, तो अच्छा रहेगा।

श्री अरूण वोरा :- आप एस0आई0टी0 को मजाक समझ लिए हैं क्या ? यह कितनी बड़ी संस्था है।

श्री बृहस्पत सिंह :- आप लोग एस0आई0टी0 का मजाक उड़ा रहे हो।

श्री भीमा मण्डावी :- मजाक नहीं उड़ा रहे हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- एक जिम्मेदार संस्था है, आप उसका मजाक बना लिए।

श्री भीमा मण्डावी :- हम मजाक नहीं उड़ा रहे हैं, इसकी हकीकत क्या है, बोल रहे हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- क्या एस0आई0टी0 को डांस करवाओगे ?

श्री भीमा मण्डावी :- हकीकत क्या है, उसके लिए बोला।

श्री बृहस्पत सिंह :- क्या आपके कार्यालय में जाकर डांस करेगा ?

श्री शिवरतन शर्मा :- मांग करना, मजाक उड़ाना है क्या ?

श्री बृहस्पत सिंह :- मजाक बना दिए हो।

श्री भीमा मण्डावी :- वीडियो गलत तो नहीं है, उसके लिए कह रहे हैं। पूछना कोई गलत तो नहीं है।

डॉ0 शिवकुमार डहरिया :- आपने कहा था कि इस्तीफा दूंगा, कब इस्तीफा दे रहे हो बताओ ? यहां पर एकाध वक्तव्य दो।

श्री भीमा मण्डावी :- टावेल पहने हुए हो, कहीं गलत वीडियो तो नहीं है, इसके लिए हम आपसे कह रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृहस्पत सिंह :- बिलकुल नहीं। ऐसा मजाक नहीं करने का है।

श्री अमितेश शुक्ल:- माननीय अध्यक्ष जी, ये एस0आई0टी0, एस0आई0टी0 बार-बार बोलते हैं। इनके लिए एस0आई0टी0 जरूर गठन करना चाहिए कि अजय चन्द्राकर जी इतने उद्वेलित और आक्रोशित क्यों हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने तो कल मांग की है कि एक एस0आई0टी0 इसलिए बनाई जाए कि कौन-कौन से मालमें में एस0आई0टी0 का गठन करना है।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- माननीय चन्द्राकर जी, आप लोगों के सारे मामले में एस0आई0टी0 का गठन किया जायेगा। आपने जो नान घोटाला किया है, झीरम घाटी की घटना किए हैं, क्या-क्या घोटाला किए हैं। आदिवासियों का तेन्दूपत्ता घोटाला किए हैं, आपके सारे घोटाले की जांच की जाए। आप लोगों के धान खरीदी पर एस0आई0टी0 किया जायेगा। सारे मामलों की एस0आई0टी0 की जायेगी। आप देखते तो रहिये, यह तो शुरूआत है।

श्री केशव चन्द्रा :- ये पांच साल तक जांच ही करते रहेंगे क्या ?

श्री अजय चन्द्राकर :- पांच साल तक जांच करेंगे और धूल झड़ायेंगे। दूसरा कोई काम नहीं करेंगे। धूल झड़ायेंगे और एस0आई0टी0 बनायेंगे, ये दो काम।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- चन्द्राकर जी, काम करेंगे। जो फाईल है, उसको भी खोलेंगे और छत्तीसगढ़ का विकास भी करेंगे। किसानों का कर्ज भी माफ करेंगे, किसानों का धान भी खरीदेंगे। जंगलों की वनोपज की खरीदी भी करेंगे। हम लोग आपके जैसे पोस्टर नहीं चिपकायेंगे।

डॉ0 शिवकुमार डहरिया :- आप लोग सुनो। आप लोग नहीं सुने इसलिए उधर पहुंच गए।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- आप लोगों ने समर्थन मूल्य पर वनोपज खरीदेंगे कहकहर के मोदी जी और रमन सिंह जी का खाली पोस्ट चिपकाये। आप लोगों ने खाली पोस्टर चिपकाये, किसी चीज का समर्थन मूल्य पर खरीदी नहीं किया। इसलिए सारे आदिवासी लोग आप लोगों विपक्ष में भेज दिए।

श्री केशव चन्द्रा :- लालजीत जी, बारदाना नहीं है, धान कैसे खरीदेंगे, यह बताईये। समिति में बारदाना नहीं है।

डॉ0 शिवकुमार डहरिया :- आदिवासियों की बात कर रहे हैं, बारदाना में कहां ले आये।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी किसानों की असली सरकार बनी है। यहां कांग्रेस का हरेक सदस्य जो विधायक चुनकर आया है, वह किसान परिवार का है और किसान के दु:ख-दर्द को समझता है और अपने हाथ से खुद खेती-बाड़ी करता है। हर किसान सदस्य चुनाव जीतकर आया है। आज पहली बार हमारे सदन में ऐसा है

...जारी श्री अग्रवाल

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अग्रवाल\10-01-2019\b16\12.20-25

जारी....श्री लालजीत सिंह राठिया :- पहली बार हमारे सदन में ऐसा हुआ है कि प्रथम सत्र में, प्रथम बैठक में किसानों के ऊपर चर्चा हो रही है, किसानों के सुख के ऊपर, उनके दर्द के ऊपर, उनके गाढ़ी कमाई के ऊपर किसान मेहनत करते हैं, उनके ऊपर पहली बार चर्चा हो रही है । हम लोग पिछली बार सदन में थे तो पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह जी की सरकार में हम सारे लोग मांग करते थे कि किसानों के ऊपर चर्चा की जाए, किसान आत्महत्या कर रहे हैं, किसानों को धान का बोनस नहीं मिल रहा है । ये लोग समर्थन मूल्य 2100 रूपये पर धान खरीदी की बात करते थे, उस पर चर्चा की जाए, लेकिन भारतीय जनता पार्टी के लोग एक बार भी हमारी बात को नहीं सुने । इन्होंने 21 सौ रूपये धान का समर्थन मूल्य देने की बात की थी, पर वह हमको पांच साल में नहीं मिला, 300 रूपये बोनस देने की बात की थी, वह भी हमको नहीं मिला, चुनाव के समय वोट को लुभाने के कारण मात्र एक साल के बोनस देने की बात इन्होंने की थी । आज कांग्रेस की सरकार बनी है तो हमने पिछले दो साल का बोनस, जो भारतीय जनता पार्टी ने नहीं दिया था, उसका बोनस भी देने के लिए हमने घोषणा-पत्र में शामिल किया है । पिछली बार छत्तीसगढ़ की जनता ने विधान सभा में हमारी पार्टी को 39 सीटों पर जीताया था कि आप हमारी बातों को, हमारे मुद्दों को सदन उठाइए और उसी को पूरा करने के लिए हमको इस सदन में बिठाया है । जब-जब भी देश में या प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनी है, अविभाजित मध्यप्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनी है, छत्तीसगढ़ में 2000 से 2003 तक कांग्रेस की सरकार रही है, उस समय हमने किसानों के लिए काम किया है, उनकी सिंचाई के लिए काम किया है, वनों के जंगलों के विकास के लिए काम किया है । आज 2018 में कांग्रेस की सरकार बनी है । हम छत्तीसगढ़ के हर नागरिक, हर युवा, हर वर्ग के लिए हम काम करेंगे । अभी तो मात्र 25 दिन की सरकार हुई है और लगभग 10 हजार करोड़ का अनुपूरक बजट आया है और हमारा बजट 1 लाख, 5 हजार करोड़ पहुंच गया है । अभी अनुपूरक बजट है, आप लोग सदन से लौटकर जाएंगे तो सबके खाते में, विपक्ष में आप लोग भी किसान होंगे तो आपके खाते में आपको पैसा मिलेगा । तेंदूपत्ता तोड़ने वाले जो वनवासी भाई हैं, जो पूरे परिवार के साथ तेंदूपत्ता तोड़ने के लिए जाते हैं, उनके लिए 4 हजार रूपये मानक बोरा हमारी सरकार ने किया है । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरम लाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात प्रारंभ करूं कि आज छत्तीसगढ़ के इस पवित्र सदन में मुझे बोलने का अवसर प्राप्त हुआ है । छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता अटल बिहारी वाजपेयी जी को मैं स्मरण करता हूं और उनके दो पंक्ति को मैं आत्मसात करता हूं:-

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

क्या हार में, क्या जीत में, किंचित नहीं भयभीत में ।
संघर्ष पथ पर जो भी मिला, यह भी सही, वह भी सही । ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कल से माननीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण पर चर्चा प्रारंभ हुई है । पक्ष और प्रतिपक्ष के सभी सदस्य उस अभिभाषण को पढ़ने के बाद जो समझे हैं, उसके अनुरूप अपनी बात रखने का सबको अवसर प्राप्त हुआ । प्रथम सत्र में राज्यपाल महोदया का अभिभाषण आने वाले सत्र में सरकार की कार्य योजना के विकास की दिशा में कहां ले जाना चाहते हैं, कैसी हमारी नीतियां बननी चाहिए, विकास के किस-किस दिशा में हम उस रास्ते पर ले जाना चाहते हैं, कौन से ऐसे क्षेत्र हैं, जो आज भी उस दिशा में अधिक काम करने की आवश्यकता है, उस प्रकार से हमारी नीतियां बन सकें । यदि ये कहा जाए कि यह एक वर्ष की इस सरकार की क्रिया की प्रतिबिम्ब है .....जारी

श्री श्रीवास

श्रीवास\10-01-2019\b17\12.25-12.30

जारी...श्री धरमलाल कौशिक :- यदि यह कहा जाये तो एक वर्ष के इस सरकार के क्रिया के प्रतिबिम्ब है ।उसी आधार पर इस अभिभाषण में सदस्यों ने अपने राय व्यक्त किये हैं । अपनी बातों को रखे हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह कह सकता हूॅ कि इस सरकार का जन्म मिथ्या आश्वासन के बल पर हुआ है । बहुत सारे सपने दिखाये गये, बहुत सारे सब्जबाग दिखाये गये, बड़े-बड़े वायदे किये गये । समय परिवर्तनशील है और यह समय का चक्र है कि आज आप वहां बैठे हैं और वहां जो बैठे हैं, वो इधर बैठे हैं। लेकिन बिठाने के बाद में छत्तीसगढ़ की जनता को क्या लाभ होने की संभावना है और क्या हानि होने की संभावना है, इसमें प्रतीक्षा करने की आवश्यकता है । इस बात को हम आगे चलकर देखेंगे, इस प्रदेश के हित में किस दिशा में हम जा रहे हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, तीन डाकुमेंट हमारे पास में है । एक जो दस्तावेज है कि सरकार के सत्ता में आने के पूर्व, सरकार में आने के पूर्व जो जन घोषणा पत्र छत्तीसगढ़ के जो छत्तीस लक्ष्य है उसमें रखे गये हैं । एक तृतीय अनुपूरक के माध्यम से हमको देखने का अवसर प्राप्त हुआ है । तृतीय अनुपूरक की बजट भी हमारी पारित हो गयी । उसके बाद महामहिम महोदया के जो अभिभाषण है, उस अभिभाषण के कंडिका 5 में जनघोषणा पत्र 2018 को आत्मसात किया गया है । यह महामहिम महोदया से अभिभाषण के माध्यम से कहलवाया गया है । माननीय अध्यक्ष महोदय, वास्तविक में इस पूरे अभिभाषण को देखा जाये तो मुझे लगा कि सरकार ने आने के पहले जो बात की है । जनघोषणा पत्र में उसके क्रियान्वयन, उसके अमल, जब इसको आत्मसात करने की बात हुई है, सारी बातें आई होंगी । लेकिन देखने के बाद में अत्यन्त निराशाजनक और इतना संक्षिप्त कि जिन बातों का उन्होंने जनघोषणा पत्र में लोगों के समक्ष रखा, जिनके बल पर चुनाव जीतकर आये, आने के बाद न तो तृतीय अनुपूरक में दिखाई दिया, न ही इस अभिभाषण के किसी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कंडिका में वह दिखाई दे रहा है कि जो बातें उन्होंने कही है, उसे अमलीजामा पहनाने का प्रयास करे । माननीय अध्यक्ष महोदय, आने के पहले बहुत से वायदे करना, लुभावने नारे देना, बहुत सारी बातों को लोगों के बीच में परोसना कि किसी भी प्रकार से हम सरकार में आ जायें । आने के बाद उनके कथनी और करनी का अंतर है, पहले दिन से दिखाई देना शुरू हो गया है । आप इसमें देखिये कि जो शराबबंदी को लेकर बड़ी बात की गई, उस बात को देखकर उनको लगा कि पिछली सरकार ने 15 साल में केवल नियंत्रण की बात की कि जो छोटे गांव हैं, वहां से शराब बंदी होनी चाहिये । फिर लगातार उसको घटाने की बात की । लेकिन जब कांग्रेस की जनघोषणा पत्र आई तो उनको लगा कि एक ऐसी जनघोषणा पत्र है जो पूर्ण शराबबंदी की बात की है । यदि पूर्ण शराबबंदी की बात है तो महिलाओं ने खुलकर वोट दिया । इसके पीछे उनका आशय यह था कि शराब को लेकर उनके मन में जीविच्छा थी । प्रदेश में शराब के कारण लोगों में विवाद का उत्पन्न होना, अशांति फैलना, पारिवारिक कलह, उसके साथ ही साथ में लगातार परिवार में ....

जारी....श्री मिश्रा

मिश्रा\10-01-2019\b18\12.30-12.35

जारी.. श्री धरमलाल कौशिक :- यदि पूर्ण शराबबंदी की बात है तो महिलाओं ने खुलकर वोट दिया और खुलकर वोट देने के पीछे उनके मन में शराब को लेकर जो एक इच्छा थी कि प्रदेश में शराब के कारण लोगों के मन में विवाद का उत्पन्न होना, अशांति फैलना, पारिवारिक कलह, साथ ही साथ परिवार में जो समृद्धि होनी चाहिए उसमें कहीं न कहीं नुकसान हुआ है और उसमें प्रश्नचिन्ह लगा है। तो ये लगा कि शराबबंदी होनी चाहिए और जिस प्रकार से महिलाओं की भावनाओं को जगाने का प्रयास किया गया उस भावना से हमारी छत्तीसगढ़ की जनता, यहां की महिलाएं और लोगों ने जो समर्थन दिया और उनके समर्थन के बाद जब सरकार बनी तो माननीय मुख्यमंत्री जी का सबसे पहले जो बयान आया, वह बयान ऐसा आया कि शराबबंदी को लेकर यहां पर समिति बनाई जायेगी, यह समिति परीक्षण करेगी। अध्यक्ष महोदय, समिति तो पुरानी सरकार भी बनाई थी।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय नेता जी, कमेटी आप लोगों ने भी बनाई थी लेकिन आपकी कमेटी ने तो दुकान बढ़ाने की और बीयर की खपत बढ़ाने की रिपोर्ट दी थी। हमको बंद करना है तो उसके बदले दूसरा तो बनाना ही पड़ेगा ना।

श्री शिवरतन शर्मा :- जब आपने पूर्ण शराबबंदी की बात की है तो उसके बाद समिति बनाने की जरूरत ही क्या है?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आपके अजय भैय्या का भी तो ख्याल रखना पड़ेगा ना।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आपके समय में आपकी पार्टी ने तत्कालीन महिमहिम राज्यपाल महोदय से रतनजोत की बात की थी। रतनजोत में कितने पैसे खर्च किए थे?

न रतन मिला न ज्योति जली।

भ्रष्टाचार के इंधन से आपकी सरकार चली।।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- शर्मा जी, अभी आम की बात हो रही है आप इमली में आ गये।

श्री शिवरतन शर्मा :- सत्तू भैय्या, हम लोग तो ये मानते हैं कि आप इसका सेवन नहीं करते। बिना सेवन किए ऐसा वक्तव्य?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आपके लिए तो अकबर भाई बैठे हैं। आप बात ही मत करो, आपकी पूरी चिन्ता मोहम्मद अकबर भाई करेंगे। जब वह कागजात देखोगे तो आपकी हालत खराब होगी।

श्री शिवरतन शर्मा :- अकबर जी का स्वागत अभिनंदन है, पूरी चिन्ता करें। हमें मालूम है कि आप शराब का सेवन नहीं करते लेकिन बिना सेवन किए असर आ गया क्या कि बात कहीं की चल रही है और आप विषय कहीं का लेकर आ रहे हो? अध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी- शर्मा जी आपस में बात न करें, जो कुछ कहना है आप मेरी तरफ मुंह करके बात करें।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- हम जो कुछ कहते हैं आपको बीच में रखकर कहते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, हम तो मानते हैं कि सत्यनारायण शर्मा जी अभी भी पूरे होशो-हवाश में हैं। उनकी उम्र भले ज्यादा हो गई है परंतु उनका दिमाग काम कर रहा है। यहां शराब की बात हो रही है वह रतनजोत पर आ गये। तो कहीं न कहीं आप विचलित तो नहीं हो गये?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आपके पुराने महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण में क्या लिखा था, मैं उसका जिक्र कर रहा हूं? आप होश में रहिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री जी को लगा कि माननीय सत्तू भैय्या टायर्ड एवं रिटायर्ड की उम्र में आ गये हैं, इसलिए वहां बैठा दिया गया है।

श्री अमरजीत भगत :- अपने बारे में भी तो सोचो कि बहुत से लोग लाईन में थे, नंबर नहीं लगा है। बहुत से लोग तो कोपभवन में चले गये हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं जब शराब की नीति की बात कर रहा हूं, और शराबबंदी की बात मैंने नहीं कहा है। मैंने पहले ही कहा कि हमारी सरकार उसको धीरे-धीरे नियंत्रित कर रही थी क्योंकि इस प्रदेश में शराब कोई भारतीय जनता पार्टी की देन नहीं है। इसके पहले हम मध्यप्रदेश में रहे हैं, कांग्रेस की सरकार रही है, लंबे समय से सरकार रही है तब से लोग सेवन करते आ रहे हैं लेकिन उस शराब के कारण आज जो विकृति है और आपके जनघोषणा पत्र में पूर्ण शराबबंदी की बात, न कोई लेकिन, न किन्तु, न परंतुक बल्कि एक लाईन में है कि हम पूर्ण शराबबंदी करेंगे। लेकिन

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सरकार किस दिशा में जा रही है कि आप चुनाव जीतने के बाद मुकरना शुरू कर दिये? मुकरना शुरू नहीं किए, सबसे हास्यास्पद बात ये है कि ....

श्री प्रमेश

प्रमेश\10-01-2019\b19\12.35-12.40

जारी श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लेकिन किसा दिशा में सरकार जा रही है कि आप चुनाव जीतने के बाद में आप मुकरना शुरू कर दिये और मुकरना शुरू नहीं किए, सबसे हास्यास्पद बात ये है कि 17 तारीख को सरकार शपथ ली है। 26.12.2019 को एक सर्कुलर जारी हुआ कि समस्त विनिर्माता कंपनी बाटलिंग इकाइयों को सूचित किया जाता है कि 19, 20 के लिए ठेका व्यवसाय कार्य शीघ्र प्रारंभ होना संभावित है। वर्ष 2018,2019 के लिए भारत निर्मित विदेशी मदिरा भारत के बाहर से आयातित विदेशी मदिरा के नवीन ब्रांड को ले करके पंजीयन कराये जाने हेतु आप सबको हम सादर आमंत्रित करते हैं। सत्यनारायण शर्मा जी, तो आप एक तरफ पूर्ण शराबबंदी की बात करते हैं, और दूसरी तरफ आपके यहां से सूचना जारी हो रही है। तमाम जो शराब बेचने वाले हैं, बाटलिंग का काम करने वाले हैं उस निर्माण में जो जुटे हुए लोग हैं और संभावना क्या दिखा रहे हैं कि आप लोग आइये अपने अपने दुकान को ले करके और दुकान को ले करके आ करके इस तारीख तक के आप अपना कोटेसन डालिए। केवल कोटेसन इस आधार पर नहीं कि अभी जो चल रहे हैं उसके लिए बल्कि आने वाले समय में उसकी संभावना है, मतलब हम फिर से जिस कोचिया राज को बंद किये हैं उस कोचिया राज के तरफ प्रदेश को □केलने का प्रयास माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा किया जा रहा है। (सीम सीम की आवाज) ये घोर आपत्ति का विषय है कि आपने कोई वादे किये और आपको इतने बहुमत के साथ में बैठाए हैं। प्रदेश की भावनाएं जुड़ी हुई है, लोगों की भावनाएं जुड़ी हुई है, महिलाओं की भावनाएं जुड़ी हुई हैं तो उन भावनाओं का कम से कम आप कद्र करें जिनके कारण इस कुर्सी पर आप बैठे हैं और आप यदि कद्र नहीं करेंगे तो में तो आपको केवल, जो लोगों की भावनाएं हैं, उनसे अवगत करा रहा हूं कि इतना जल्दी वादाखिलाफी आप न करें और इतना जल्दी आप वादाखिलाफी आप करेंगे, मैं बोल तो रहा हूं वादाखिलाफी, आपने जो कहा है वादाखिलाफी, आपको कैसे मुकरना है, अपने जन घोषणा पत्र से मैंने आपको बताया है।

श्री अमरजीत भगत(सीतापुर) :- माननीय नेता जी, मेरी भी सुन लिया करो। मैं भी निवेदन कर रहा हूं। जो भी परिस्थिति निर्मित होती है उसका लाभ मिलता है केवल श्री भूपेश बघेल जी के चलते मिलता है। बहुत लोग लाईन में थे, एकात बात धन्यवाद भी ज्ञापित कर दिया करो।

श्री धरम लाल कौशिक :- आप यदि इससे ज्यादा भी बोल लेंगे तो आपको वहीं रहना है। इसलिए जहां आपकी जगह और सीट सुनिश्चित की गई है उससे आप आगे बढ़ने वाले नहीं हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृहस्पत सिंह :- चंद्राकर जी, बहुत दुखित हैं उनसे बहुत ज्यादा दुखित हैं, देखो बार बार छटपटा रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय नेता जी, मीडिया में चल रहे हैं, मीडिया में वो आदिवासियों को भोग दे रहे हैं। आदिवासी भोज वो दे रहे हैं। उनकी जांच की मांग करिये एस.आई.टी जांच की।

श्री शिवरतन शर्मा:- माननीय अध्यक्ष जी, एक निवेदन है सीतापुर की जनता अपने जनप्रतिनिधि को खोज रही है चुनाव के बाद वो गये नहीं। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करता हूं कि उनको मंत्री नई बनाये तो ससम्मान उनके क्षेत्र में छोड़ तो आये।

श्री अमरजीत भगत:- विधानसभा सत्र चल रहा है कैसे चले जाये भैया बताओ आप।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी आप मार्गदर्शक मंडल के पूरे के पूरे मौजूद हैं वो अमितेश शुक्ल भी थे, किधर चले गये। पूरे मार्गदर्शक मंडल आज उपस्थित हैं।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण में चिटफंड कंपनी के और उसके साथ ही साथ में जन घोषणा पत्र में कि इस प्रदेश में ऐसे जो निवेशक जिन्होंने एजेंटों के माध्यम से अपने पैसे का निवेस किया और मुझे लगता है कि इनकी जो संख्या है, वो हजारों में नहीं है बल्कि लाखों में है।

श्री बृहस्पत सिंह :- आपको क्या तकलीफ हो रहा है भाई, आप भी तो यही काम किया करते थे।

श्री शिवरतन शर्मा:- नहीं नहीं ये स्टपष्टीकरण नहीं है, ये सत्ता का डर है।

श्रीमती सविता

सविता\10-01-2019\c10\12.40-12.45

श्री धरमलाल कौशिक :- यदि हम राशि की बात करें तो वह हजारों करोड़ में है। छत्तीसगढ़ की भोली-भाली जनता को कहा गया कि आपके पैसे डबल हो जाएंगे, आपके पैसे बढ़ेंगे, ये चिटफंड कंपनी के एजेंट के माध्यम से उनके संचालक तक पैसे पहुंचाने का काम किया गया। बहुत समय से ये प्रश्न है अपेक्षा लोगों की है हम चाहते हैं कि उसने पैसे वापस हो। वास्तव में कहीं न कहीं उनके साथ में धोखा, शोषण और अन्याय हुआ है। ऐसे लोगों के खिलाफ में जब उनकी शिकायत आयी तो उसके बाद उनके पैसे की वापसी होनी चाहिए, इस बात की सोयरटी, गारण्टी होनी चाहिए। लेकिन जब उनके द्वारा पैसा वापस नहीं किया गया, किसी को बताया गया कि हम एक सप्ताह में पैसे वापस कर रहे हैं किसी को कहा गया कि हम दो महीने में कर रहे हैं, किसी को कहा गया कि हम 3 महीने में कर रहे हैं और ऐसे समय निकालते रहे, लेकिन आज भी वह पैसा वापस नहीं हुआ है। अपना पूरा धान को बेचकर और जो पैसे खर्चे से बचाकर रखे थे, ऐसे सब लोग चिटफण्ड कंपनी में उस पैसे को निवेश किये हैं, लेकिन

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

वर्तमान में जो स्थिति है जब ये पैसे वापस नहीं किये तो निवेशकों के द्वारा, उनके खिलाफ में कार्रवाई करने के लिए उन्होंने रिपोर्ट लिखायी, जहां जा सकते हैं वहां जाकर के, उनके पैसे वापस हो जाएं, इसकी निश्चितता के लिए बातचीत किये और कई लोगों के खिलाफ में एफ.आई.आर. भी हुए हैं। एफ.आई.आर. के बाद, आज भी उनके पैसे वापस नहीं हुए हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जब चुनाव का जन घोषणा पत्र जारी हुआ तो इस जन घोषणा पत्र में उनको आश्वासन दिया गया कि आप हमें सहयोग करें और सहयोग करने के बाद ये पैसे वापस हो जाएंगे। लोगों ने बड़ी उम्मीदों के साथ सरकार बनाने में सहयोग किया और सहयोग करने के बाद, आज जो उनकी अपेक्षाएं हैं कि हमारे पैसे वापस होने चाहिए। उनके खिलाफ में आप जितनी कार्यवाही करते हैं करेंगे, किस प्रकार से करेंगे, क्या करेंगे, ये कार्यवाही आपको करनी है, लेकिन जो सबसे बड़ी महती आवश्यकता है वह है उनके पैसे की वापसी और उस बात की गारण्टी हो। इस तृतीय अनुपूरक में इस बात की हमें उम्मीद थी कि शायद उनका पैसा वापस करने के लिए कोई प्रावधान करेंगे, लेकिन उसमें कोई प्रावधान नहीं हुआ। यह प्रावधान नहीं होने के बाद में, माननीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण में शायद उस चिटफंड कंपनी के पैसे के बारे में कोई ब्लू प्रिंट दिखायी पड़े कि किस प्रकार से उस पैसे को वापस करेंगे, क्या उनकी व्यवस्था करेंगे ? लेकिन उसमें केवल ये लिखा गया कि कहीं चिटफंड कंपनी का जो पैसा है, उनके खिलाफ में हम कार्यवाही करेंगे, माननीय सदन के नेता का अभी जवाब आएगा, बहुत सारे लोग इस बात को लेकर आशांवित हैं कि हमारे जो पैसे लगे हुए हैं शायद उसके लिए एक नीति निर्धारित हो जाएगी, यहां से कोई सूचना जारी हो जाएगी, हमारे ये पैसे वापस होने वाले हैं। आज जिस प्रकार से लोगों के मन में एक व्यग्रता का भाव है और इस बात को लेकर वह बैठे हुए हैं कि हमारे पैसे वापस हो, मैं चाहूंगा कि निश्चित रूप से उनके पैसे वापस होने चाहिए, ये मैं नहीं बोल रहा हूँ यह आपके जन घोषणा पत्र में है। यदि आप अपने जन घोषणा पत्र को जिस प्रकार से माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभषाण में उसको आत्मसात किया है। आत्मसात करने के बाद में यदि उसको आप आगे बढ़ायेंगे और उनकी कोई न कोई व्यवस्था की बात आएगी तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा कि कम से कम उनकी भावनाओं के अनुरूप और आपके घोषणापत्र के अनुरूप ये सरकार उस दिशा में काम कर रही है। सरकार के पहले ही क्रियाकलाप और कार्यकलाप से ऐसा लगने लगा है कि सरकार ने जो वायदे किए हैं कि जनता के मन में एक अविश्वास की भावना बलवती हो रही है। मुझे लगता है कि आज मुख्यमंत्री जी....

जारी श्री चौधरी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

चौधरी\10-01-2019\c11\12.45-12.50

पूर्व जारी.. श्री धरमलाल कौशिक :- जो बलवती हो रही है, मुझे लगता है कि आज मुख्यमंत्री जी उसका समाधान करेंगे। जिस प्रकार से जितने भी उनके पैसे लगाये गये हैं, कार्यवाही क्या करेंगे, उस पर मुझे ज्यादा जोर देने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन पैसा वापिस कैसे हो, उसको सुनिश्चित किया जाये और उसको सुनिश्चित करने का प्रयास करेंगे, ये मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से कहना चाहता हूं। इस प्रदेश की सबसे बड़ी समस्या, सबसे बड़ी विकास में बाधक नक्सलवाद है और नकसलवाद की समस्या कोई भाजपा की देन नहीं है। मध्यप्रदेश में उस समय हम लोग विधायक थे। मध्यप्रदेश में उस समय जो तत्कालीन सरकार रही, उस तत्कालीन सरकार के केबिनेट मंत्री को नक्सलियों के द्वारा घर से निकाल करके उनको मारा गया। यदि उसी समय से छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ, उसके पश्चात में यदि इस दिशा में, क्योंकि शुरूआती दौर था, यदि शुरूआती दौर में नक्सलवाद को नियंत्रित करने के लिए कठोरता से कार्य किया होता, कार्ययोजना बनाई गई होती और उस कार्ययोजना के अनुसार से यदि सरकार ने काम किया होता तो छत्तीसगढ़ में ये स्थिति शायद हम लोगों के सामने नहीं आती और हम लोगों को दिखाई नहीं देती। यह तो मध्यप्रदेश से हमको विरासत में मिला और विरासत में मिलने के बाद में जिस प्रकार से नक्सल गतिविधियां यहां पर पैर पसारीं, सड़कों को बंम से विस्फोट करना, उड़ा देना, ट्रान्सफार्मर, सब-स्टेशन को उड़ाना, स्कूल की बिल्डिंग को उड़ाना और एक प्रकार से लोगों के बीच में भय पैदा करना, इसके कारण से आम लोग जिस प्रकार से जिंदगी जी रहे थे, उनमें एक दहशत का वातावरण पैदा हुआ। ऐसे दशहत के वातावरण में इस प्रदेश की जनता जी रही थी। निश्चित रूप से जब इस प्रदेश में भाजपा की सरकार बनी और डॉ. रमन सिंह जी मुख्यमंत्री बने, एक कारगर पहल प्रारंभ हुई। माननीय अध्यक्ष महोदय, उसका परिणाम देखेंगे कि सरगुजा से जशपुर तक जो जिले हैं जहां पर नक्सलवाद की गंभीर समस्या रही है उसमें लगभग-लगभग पूर्ण रूप से सरकार को सफलता मिली है। आज वहां अमन-चैन कायम है। आज किसी को इस बात की दहशत नहीं है कि कोई आयेंगे और हमें लूट के ले जायेंगे, मार देंगे, कोई जनअदालत लगायेंगे। यह जो बातें बहुत समय से चल रहीं थीं, इसमें सरगुजा संभाग में सफलता मिली है। इसके बाद में प्रदेश के बस्तर संभाग की बात है, तो निश्चित रूप से जो एक बात आ रही थी कि आखिर इस नक्सलवाद के पनपने का क्या कारण है? किसी ने उसको आर्थिक समस्या का नाम दिया, किसी ने उसको सामाजिक समस्या का नाम दिया, किसी ने उसको शोषण का नाम दिया, लेकिन उसको अलग-अलग प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास किया गया। उसके मूल में यह बात थी कि उनको काम मिले, उसके पीछे भावना थी कि उनके बीच में टेरर समाप्त हो और नक्सलियों को खदेड़ करके इस प्रदेश से बाहर भेजा जाये। माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे प्रदेश की जो सीमायें है, वह सीमा केवल एक प्रदेश से भगायेंगे तो नक्सलवाद की समस्या संपूर्ण रूप से हल हो जाये, ऐसी स्थिति नहीं है। एक तरफ हमारे उड़ीसा से लगा हुआ एरिया है, हमारे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बार्डर हैं, एक तरफ महाराष्ट्र, गढ़चिरौली और दूसरी तरफ आन्ध्रप्रदेश का एरिया है। उस स्थिति में भी ये प्रयास हुआ कि नक्सलवाद को हमको यहां से उखाड़ करके फेकना है तो इसके लिए केन्द्र सरकार के द्वारा इसमें ऐसी कोई कार्ययोजना बने, जिस कार्ययोजना के माध्यम से जो प्रभावित प्रदेश हैं, यह प्रभावित प्रदेश बैठ करके विचार करें और विचार करने के बाद में एक सामूहिक रूप से कार्ययोजना बना करके इसमें काम करें। एक अच्छी पहल प्रारंभ हुई और प्रारंभ होने के बाद में इसका रिजल्ट भी हम सब

देख रहे हैं। आज जब आप दंतेवाड़ा जायेंगे, ये उसी का प्रभाव है कि जो संयुक्त रणनीति बनी, वहां एजुकेशन का हब है। आप सुकमा चले जायेंगे, आप सुकमा में जा करके देखेंगे।

श्रीमती नीर

नीरमणी\10-01-2019\c12\12.50-12.55

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय नेता जी, वे पीछे से कुछ कह रहे हैं, क्या कह रहे हैं वह थोड़ा सुन लें, पता चल जायेगा ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज माननीय मुख्यमंत्री जी सदन में हैं । आपने जो कल मानस की पंक्तियां सुनाई थी । पूरा सदन, पूरा दीर्घा, उपस्थित लोग फिर से उसको सुनना चाहते हैं । आप एक-बार फिर से सुनाईये, फरमाईश है, वन्स मोर ।

श्री अमितेश शुक्ल :- जितने ज्ञानी लोग हैं वे उसको समझ चुके हैं, ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप माननीय मुख्यमंत्री जी को सुना दीजिये ।

श्री अमितेश शुक्ल :- रामचरित मानस उनको कंठस्थ है । (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- इतना समृद्ध श्रोता समुदाय आपको जीवन में नहीं मिलेगा इसलिये आप उस पंक्ति को सुना दीजिये ।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- अपने नेता जी को तो बोलने दीजिये ।

श्री अमरजीत भगत :- आपस में इन लोगों की पटती नहीं है न इसलिये उनको बोलने नहीं देना चाहते हैं ।

श्री अमितेश शुक्ल :- श्री अजय चंद्राकर जी, मैं मानता हूं कि आप प्रतिपक्ष के नेता किसी कारण से नहीं बन पाये लेकिन उनको बोलने दीजिये, नेता जी आप बोलिये ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, तो आज जहां पूरे बस्तर में विकास के कार्य प्रारंभ हुए, जहां निर्माण के कार्य प्रारंभ हुए और शिक्षा से लेकर के स्वास्थ्य तक माननीय प्रधानमंत्री जी को यदि स्वास्थ्य के क्षेत्र में कोई अच्छा काम देश में प्रारंभ किये तो हमारे

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

बस्तर से हुए । बीजापुर से प्रारंभ हुआ तो जो विकास के कार्य प्रारंभ हुए तो उस दिशा में एक कहीं न कहीं जो नक्सलवाद की जो समस्या है उसका समाधान करने में कि लोगों को वहां पर रोजगार मिल सके इसके लिये हम लोग इसी सदन में उस घटना को उठाये हैं कि छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद में किस प्रकार से हमारे जो वनवासी क्षेत्र में काम करने वाले जो भाई हैं, जो चार और चिरौंजी है, नमक के बदले में लिया जाता है । बही गांव की घटना हम सबको याद है, उस समय भी आप मंत्री थे और उस बही गांव की घटना का आखिर क्या कारण था ? उनका शोषण कैसे हो रहा था ? तो इस बात को लेकर के भारतीय जनता पार्टी की जब सरकार बनी ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय नेता जी, पिछले वित्तीय वर्ष में आपकी केंद्र सरकार यह जो फॉरेस्ट प्रोड्यूज है उसकी दर घटा दी थी, आपको मालूम है । महुआ में और सबमें प्रतिबंध लगा दिया था और इसका चार-चिरौंजी बाकी जितना वन उत्पाद है उसका दर घटा दिया था । आप लोगों की सरकार ने तो लगातार आदिवासियों का नुकसान किया ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने बही गांव की घटना का जब याद दिलाया तो माननीय सदस्य तुरंत याद दिलाने के लिये खड़े हो गये । इसी सदन में हम लोगों ने उस बात को उठाया था कि कैसे हमारे वनवासी क्षेत्र में रहने वाले जो हमारे बंधु हैं उनके साथ में अन्याय होता है, उनके साथ में वर्षों से जो शोषण होता है उसको रोकने के लिये पिछली सरकार के द्वारा हमारे जो फॉरेस्ट प्रोड्यूज है, उनका जो समर्थन मूल्य घोषित किया गया कि इससे कम में उसकी खरीदी नहीं होगी और निश्चित रूप से उसके बाद भी हम सब लोगों ने देखा है कि उनको जीवन में जो बदलाव आया है, उनके जीवन में परिवर्तन आया है, उनका सामाजिक जो सम्मान ब□ा है, आर्थिक रूप से कहीं न कहीं वे आगे बढ़े हैं । सरकार ने पिछले समय जो काम किया कि नक्सलवाद से कैसे मुक्ति मिले ।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नेता जी आपसे एक निवेदन है मेरे विधानसभा क्षेत्र के 51 गांव अभ्यारण्य क्षेत्र में आते हैं, आपकी सरकार से, मैंने पिछली जो आपकी सरकार थी उससे कई बार निवेदन किया कि तेंदूपत्ता संग्रह पर रोक लगाईये ।

श्री अजय चंद्राकर :- अब इधर नहीं, उधर बोलो ।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लेकिन उसे लगातार बंद कर दिया, वहां के आदिवासियों को तेंदूपत्ता दोहन के लिये बंद कर दिया गया, अभी तक चालू नहीं हो पाया है और मैं उसी को याद दिलाता हूं कि आपकी सरकार ने क्या किया है, आदिवासियों के साथ क्या किया है उसको भी थोडा बता दें ।

श्री शिवरतन सिंह :- श्री बृहस्पत जी, हम लोग उधर से इधर आ गये, अब वह गाना बंद करो, अब जो बोलना है उधर बोलो ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृहस्पत सिंह :- लेकिन 15 साल आपने क्या किया वह तो बोलना पड़ेगा, 15 साल उन आदिवासियों के साथ क्या किया वह तो बोलना पड़ेगा ।

श्री अमरजीत भगत :- मोदी जी ने जो रेट घटाया उसमें आप लोगों ने कुछ नहीं किया, कुछ नहीं बोला ।

श्री बृहस्पत सिंह :- रेट घटाया तो घटाया ही, आप लोगों ने तो मेरे क्षेत्र के 50 लाख लोगों का जीना दुर्लभ कर दिया । सब खरीदी बंद कर दी । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- प्रदेश सरकार ने बोनस देने की घोषणा की । मोदी सरकार के रेट पर बोनस देने की घोषणा की है, यह क्यों भूल जाते हैं आप ?

..........श्री कुरैशी

कुरैशी\10-01-2019\c13\12.55-12.60

श्री शिवरतन शर्मा :- प्रदेश सरकार ने बोनस देने की घोषणा की । मोदी सरकार के रेट पर बोनस देने की घोषणा की है, यह क्यों भूल जाते हैं आप ?

श्री अमरजीत भगत :- मोदी सरकार ने वनोपज का रेट घटाया ।

श्री बृहस्पत सिंह :- खरीदी बंद करा दी आपने । वनोपज खरीदी बंद करा दी, शर्मा जी ।

श्री अमरजीत भगत :- जब वनोपज का रेट घटाया तो आप लोगों ने आदिवासियों के समर्थन में एक बात भी कही क्या ?

श्री दीपक बैज :- बहुत सी जगहों पर बोनस नहीं दिया गया है । पिछले 3-4 सालों में वनोपज पर बोनस नहीं मिला है । आदरणीय अभी भी जशपुर जिले में बहुत सी जगहों पर बोनस नहीं दिया गया है । आप इसकी जांच करा लीजिए ।

श्री अमरजीत भगत :- हिंदुस्तान के इतिहास में कभी ऐसा नहीं हुआ था ।

श्री बृहस्पत सिंह :- आपकी सरकार ने आदिवासी क्षेत्रों की 3000 स्कूलें बंद दी दी । यह पाप भी आपकी सरकार ने आदिवासी मंत्री से करवाया है । केदार कश्यप जी ट्रायबल मंत्री थे । हमने बार-बार निवेदन किया कि आदिवासी क्षेत्रों की स्कूलें बंद मत कीजिए । लेकिन इस सरकार ने 3000 स्कूलें बंद कर दी । नेताजी इस बात का भी उल्लेख कर दीजिए ।

श्री मोहन मरकाम :- महुआ, आदिवासियों के जीवन यापन का एक साधन था, इस सरकार ने इसको भी आदिवासी एक्ट में शामिल करके, उनके जीने के साधन को भी छीन लिया ।

श्री बृहस्पत सिंह :- और क्या क्या किया याद दिला दूं ? ये उस समय अध्यक्ष थे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- बृहस्पत जी, उन्होंने जो किया उसकी सज़ा उनको मिल गई, आप भी वही सज़ा पाना चाहते हैं क्या ?

श्री बृहस्पत सिंह :- नहीं, याद दिला रहे हैं, स्मरण करा रहे हैं ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- पिछले बजट में माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी ने कहा कि यह बजट महुआ पेड़ के नीचे बना है । अभी बजट सत्र आएगा आप कौन से पेड़ के नीचे बनाएंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय कौशिक जी, आप उलझिये मत इनकी बातों में।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य बीच में अवरोध उत्पन्न् करते हैं तो मुझे बैठना पड़ता है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- अवरोध नहीं, हमने तो स्मरण कराया था ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, नक्सल समस्या पर जिस प्रकार से पिछली सरकार ने काम किया और मैंने कहा कि पिछले 15 सालों में हमें नक्सलवाद को काबू करने में कहीं न कहीं सफलता मिली । यह सही बात है कि इसे जड़ से उखाड़ फेंकने में समय लगेगा । यह संभव नहीं है कि यह आज ही समाप्त हो जाए। लेकिन राज्यपाल महोदय का अभिभाषण हो और ऐसी समस्या जिससे प्रदेश प्रभावित है । प्रदेश की बहुत बड़ी राशि लोगों की सुरक्षा के लिए खर्च की जाती है और उस विषय पर अभिभाषण में एक लाईन भी न लिखना, यह बताता है कि हम किस दिशा में जा रहे हैं । अध्यक्ष महोदय, इसमें कहीं न कहीं इंगित होना चाहिए कि नक्सलवाद की समस्या पर सरकार क्या करना चाहती है ? पिछली सरकार ने जो काम किया उस पर आप मत जाइए ।

श्री बृहस्पत सिंह :- आप बोलते जाइए कि 70 सालों में कांग्रेस ने क्या किया है और आपने 15 सालों में क्या किया है, हम बोलें तो कहते हैं कि पीछे मत जाइए।

श्री धरमलाल कौशिक :- लेकिन कहीं न कहीं इस नक्सलवाद को लेकर वर्तमान सरकार का रूख़ क्या है, ये किस दिशा में जाना चाहते हैं । क्या नक्सवाद को समाप्त करने की दृढ़ इच्छाशक्ति, संकल्पशक्ति है । यदि है और उसके बाद भी अभिभाषण में एक लाईन भी न दिखे तो मैं इस सरकार के विषय में क्या कहूं । आज जो समस्या प्रदेश के विकास में सबसे बड़ी अवरोधक है । इसलिए मैंने कहा कि मुझे लगता है कि नक्सलवाद की समस्या किसी पार्टी की समस्या नहीं है, किसी दल की समस्या नहीं है, किसी जनप्रतिनिधि की समस्या नहीं है । यह छत्तीसगढ़ के आम नागरिक की समस्या है और इसके समाधान की दिशा में अभी तक जो प्रयास हुए हैं । मुझे लगता है कि आगे और कारगर कदम उठाना चाहिए और कारगर कदम उठाकर, नक्सलवाद की समस्या का कैसे हल हो, प्रयास करना चाहिए । मैं नहीं कहता कि आप गोली से हल करें या बोली से हल करें । लेकिन इस समस्या की समाप्ति होना चाहिए और आज भी बातचीत के बाद भी, कितने लोग बात करने आए, मुझे तो नहीं मालूम लेकिन आज भी उनके द्वारा स्कूलों और सड़कों को उड़ाने की घटनाएं हो रही हैं, नई सरकार

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

बनने के बाद भी । इसलिए, प्रदेश में हम नक्सलवाद को हम कैसे समाप्त कर सकें, यह एक गंभीर विषय है और इसका समाधान होना चाहिए, इस दिशा में सार्थक प्रयास होने चाहिए ।

अध्यक्ष महोदय :- आप और कितना समय लेंगे ।

जारी श्री ठाकुर

ठाकुर\10-01-2019\c14\01.00-01.5

जारी................श्री धरमलाल कौशिक : - नई सरकार गठन होने के बाद भी इसलिए निश्चित रूप से उस दिशा में इस प्रदेश की समस्या से हम कैसे नक्सलवाद को समाप्त कर सकें? ये विषय एक गंभीर विषय है और इसका समाधान होना चाहिए। इस दिशा में सार्थक पहल करने के प्रयास होने चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : - आप और कितना समय लेंगे।

श्री धरमलाल कौशिक : - मैं सारे मुद्दे पर नहीं बोलूंगा अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय : - जी।

श्री धरमलाल कौशिक : - सारे बिंदुओं पर नहीं बोलूंगा मैं। अभिभाषण के भी सारे बिंदुओं पर नहीं जाउंगा मैं। कुछ 2-3 बिंदुओं के ऊपर मैं अपनी बात रखना चाहूंगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, जो कर्जा माफी की बात आयी है। जिस बात को लेकर के गांव से लेकर के सदन तक जो ढिंढोरा पीटा गया और ढिंढोरा पीटने के बाद भी आज भी मैं कह सकता हूं कि आपने जो तृतीय अनुपूरक में जो व्यवस्था रखी, उसमें कुछ किसानों का कर्जा लगभग माफी हुई है। ये संभव ही नहीं है कि अनुपूरक में सारे आपके कर्जे माफ हो जाएं। आपके बजट अभी आने वाले हैं। एक बार ये इस किसान के, मैंने उस दिन भी कहा था, आज भी बोल रहा हूं कि केवल कृषि से संबंधित केवल कृषि न मैं कोई व्यवसाय के बारे में बोल रहा हूं। न मैं कोई उद्ययोपति के बारे में बोल रहा हूं कि किसानों के ऊपर में जो भी कर्जे हैं चाहे वो दीर्घकालीन हो, चाहे मध्यकालीन हो, चाहे अल्पकालीन हो। ऐसे कर्जे के ऊपर में एक बार आकलन आना चाहिए और आकलन आने के बाद में कितने किसानों के ऊपर छत्तीसगढ़ के कर्जे हैं क्योंकि लोगों ने जिस समय वोट दिया तो निश्चित रूप से उनके मन में एक ही बात थी कि यदि हमारे एक वोट देने से हमारे कर्जे माफ हो जाएंगे, ये जो उनके मन में जो विश्वास और उनके विश्वास आहत न हो लेकिन जिस प्रकार से सरकार द्वारा अभी जो अब कर्जे की श्रेणियां गिनाने में लग गये हैं तो कहीं न कहीं ये मन में किसानों के स्वाभाविक रूप से आ सकता है। मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से चाहूंगा कि छत्तीसगढ़ के किसानों को उनके सारे कर्जों से एक बार उनको मुक्ति मिलनी चाहिए। उनके खाते में पैसे जमा होने चाहिए। उनके हाथ में प्रमाण पत्र होना चाहिए और ये किसान गर्व के साथ कह

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सके कि हमने जो नई सरकार बनाई है तो छत्तीसगढ़ के किसान जो भी कर्जे में रहे हैं, वो किसान कर्जे से मुक्त हो गये हैं। यदि ऐसा करते हैं तो मुख्यमंत्री जी को बधाई दूंगा मैं लेकिन जिस प्रकार से सरकार बनने के बाद में आज किसानों की जो अपेक्षाएं आधी अधूरी जो इस सरकार की जो योजनाएं के कारण दिखाई दे रही है, इनकी कार्यप्रणाली से दिखाई दे रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, आने वाले समय में इन किसानों को लेकर के जितना चिंतित हम हैं, उतने ही चिंतित आप भी हैं और उतना ही चिंतित प्रतिपक्ष भी है लेकिन उसका समाधान है। उस समाधान में कोई ठोस पहल हो और ठोस पहल होने के बाद किसान ऋण से मुक्त हो जाए तो मुझे लगता है उनकी जो भावनाएं हैं उसके अनुरूप एक बार किसान उऋण होना ही चाहिए। आज जो स्थितियां बन रही हैं धान खरीदी की आज ही अधिसूचना है। मैंने उस दिन भी इस बात को इंगित किया था और हमारे कई माननीय सदस्यों ने कहा कि धान खरीदी को लेकर के सरकार बोल तो दी है कि धान खरीदेंगे लेकिन धान खरीदी के लिए जो आवश्यक व्यवस्था होनी चाहिए कि धान का जो उठाव होना चाहिए वो उठाव नहीं हो रहा है। किसान वहां पर धान लेजा नहीं पा रहे हैं सोसाइटियों में। जहां धान रखे हुए हैं। ट्रक द्वारा उसका उठाव नहीं हो रहा है और ट्रांसपोर्टिंग हो नहीं रहा है। आपके बोरे की व्यवस्था है नहीं और ये केवल एक ही जगह की बात नहीं है। मैं उस दिन आपको कवर्धा जिले की, मुंगेली जिले की बात बताई थी और आपको अभी तात्कालिक बता रहा हूं जांजगीर, चांपा, नवागढ़, केरा, अभी किसान वहां पर चक्का जाम कर रहे हैं और चक्का जाम किस बात को लेकर के कर रहे हैं कि धान को खरीदने को लेकर के वहां की सड़कों पर किसान हमारे बैठे हुए हैं। यह अभी की घटना है और इसलिए हमने पहले से सरकार को आगाह किया है कि यदि आपकी नीयत साफ है, नीति साफ है तो किसानों के साथ में कोई छलावा नहीं होना चाहिए। मैं आपसे आसंदी से आप भी उस जिले में निवास करते हैं और उस जिला से चुनकर के आये हैं तो स्वाभाविक रूप से ....जारी

जारी.........श्री अरविंद

अरविंद\10-01-2019\c15\01.05-01.10

.........जारी श्री धरम लाल कौशिक :- और आप उस जिले से चुनकर आये हैं तो स्वाभाविक रूप से किसानों के प्रति सहानुभूति और हमदर्दी आपकी भी है कि किसानों के प्रति अन्याय न हो। मैं चाहूंगा कि आसंदी से ऐसा निर्देश हो, हमारे किसान जो वहां पर बैठे हुए हैं, उनकी धान बेचने और खरीदने को लेकर जो समस्या है, उसकी आज यहां पर कोई दिशा-निर्देश जारी हो, जिससे किसानों की धान की खरीदी हो सके।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नेता जी का भाषण हो रहा है और इनके पीछे के सारे साथी गायब हैं। मतलब नेता जी के साथ नहीं हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धरम लाल कौशिक :- वास्तव में पीछे नहीं सुनाना है, सुनाना तो आप लोगों को है। क्योंकि उनकी समस्याओं का निराकरण होना है, जो सामने बैठे हैं, वहीं से होना है।

श्री बृहस्पत सिंह :-अभी भी ये लोग नेता प्रतिपक्ष मानने को तैयार नहीं है, ऐसा लग रहा है।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बृहस्पत सिंह को ऐसा लगता है कि......।

श्री बृहस्पत सिंह :- ये लोग नेता प्रतिपक्ष मानने को तैयार नहीं हैं, देख लीजिये।

श्री सौरभ सिंह :- नि अमरजीत जी 11 मिनट कहां थे ?

श्री बृहस्पत सिंह :- नेता प्रतिपक्ष मानने को तैयार नहीं है, पीछे देख लीजिये पूरा खाली है।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्तमान में इन किसानों की जो समस्या है, वह उनकी तात्कालिक समस्या है। उस पर आपका ध्यान आकर्षित किया गया है और मुझे लगता है कि आसंदी से उस पर कोई दिशा-निर्देश मिले। जिससे किसानों की जो समस्याएं हैं, जो चक्का जाम करके बैठे हुए हैं, आज ही उनकी समस्याओं का निराकरण हो सके, ऐसा मैं आग्रह करना चाहता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज लोड शेडिंग प्रारंभ हो गया है। आज लोग बिजली बिल पटाना बंद कर दिए हैं। इसलिए लोग बिजली बिल पटाना बंद कर दिए क्योंकि सरकार के द्वारा कहा गया है कि हम बिजली बिल हाफ करेंगे। अब आज तक आपके कार्यालय से कोई दिशा-निर्देश जारी नहीं हुआ है। आपका तृतीय अनुपूरक भी पास हो गया और शायद बाकी लोगों को लग रहा था, अधिकारियों को लग रहा था कि कोई दिशा निर्देश आ जाये ताकि हम उनका बिजली लेना शुरू कर दें। तो आज तक दिशा निर्देश नहीं गया है, इसके कारण लोग बिजली बिल पटाना बंद कर दिए हैं। स्वाभाविक रूप से आने वाले समय में अराजकता की स्थिति निर्मित होगी इसलिए मैं आग्रह करना चाहूंगा कि जो बिजली बिल पटाने की बात है, यह केवल बिजली का बिल नहीं है, आपके जितने भी टैक्स हैं, जो नगरीय निकाय के टैक्स हैं, आपने उसमें कमी करने की बात की है। उसमें कमी करने के लिए अब केवल दिशा-निर्देश जाना है। बाकी ये कम्पनसेट करते रहेंगे, यह सरकार की जवाबदारी है। आपको केवल वहां पर एक लाईन का पत्र भेजना है। आप यह पत्र भेजेंगे तो मुझे लगता है कि आज उपभोक्ताओं के बीच में जो उहाफोह की स्थिति है, किसानों के बीच में है, जो नगरीय क्षेत्र में है उनके बीच में है, ये सारी स्थिति स्पष्ट होगी, इसका निवारण होगा। इसके लिए इसमें तत्काल कार्रवाई करने की आवश्यकता है, मैं ऐसा आग्रह करना चाहता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने सरकार के एक पत्र के बारे में बताया कि कैसे सूचना जारी हुआ। अब मैं दूसरी बात कहना चाहता हूँ कि ई-टेंडरिंग के द्वारा कार्य कार्य और बाकी जो कार्य हैं, उसमें पारदर्शिता रहे, पारदर्शिता झलकता रहे और पारदर्शिता के साथ काम होना चाहिए। हम लोग जिस सूचिता की बात करते हैं। यह सरकार बनने के बाद सबसे पहले 5 लाख से लेकर 20 लाख के नीचे जो ई-प्रोक्योरमेंट के द्वारा जो ई-टेंडरिंग का काम होता था, उसके बारे में एक आदेश जारी हुआ। उस आदेश

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

के बाद अब निविदा कार्यालय आकर टेण्डर भरेंगे, आनलाईन बंद कर दिया गया। मान लो कोई बाहर है और टेण्डर भरना चाहता है, वह समय पर पहुंचे, न पहुंचे। आप देखे होंगे कि पहले ये स्थितियां निर्मित होती थी कि वहां पर जो कोटेशन डालने जाते थे, वहां उनको रोकने का प्रयास किया जाता था। वहां पर कुछ लोग मिलीभगत करके काम कर लेते थे और कुछ लोगों को टेण्डर डालने ही नहीं देते थे। मुझे सीधा-सीधा ऐसा लगता है कि आपने इतने सारे जो आवश्यक घोषणा किए हैं, इतने सारे घोषणा करने के बाद ...।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, भगत काम कर लते थे, मैं तो अभी कुछ किया नहीं हूँ। अभी नई-नई सरकार बनी है, हम लोग इधर बैठे हैं। भगत कहां काम किया है ?

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय ।

श्री अजय चन्द्राकर :- दादी जी, फर्स्ट हाफ में आप विधानसभा में दिखते हो, सेकेण्ड हाफ में रोज कहां गायब रहते हो, आप यह बताओ ? बाकी बात बंद करो।

........श्री अग्रवाल

अग्रवाल\10-01-2019\c16\1.10-15

श्री कवासी लखमा :- कल शाम तक तो आपके साथ ही था ।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये सारे महत्वपूर्ण काम है, जिस ओर सरकार का ध्यान नहीं है । यदि उनका ध्यान गया तो जो कार्य हो रहे हैं, कल्याणकारी काम है, लोगों के काम हैं, जो पारदर्शिता के साथ हो रहे हैं, उसी पर सरकार का ध्यान और 8 जनवरी को एक सरर्क्यूलर जारी कर दिए और सरर्क्यूलर जारी करने के बाद में कोई आन लाईन निविदा नहीं भर सकते, वहां जाना पड़ेगा और फिर वह शुरू होंगे। इसके पीछे सीधा-सीधा सरकार की मंशा दिखाई देती है कि इसी की आड़ में भ्रष्टाचार फिर प्रारंभ हो। तो कहीं न कहीं उस दिशा में जाने का सरकार का प्रयास और पहल दिखाई दे रही है । इसलिए बहुत सारी ऐसी कार्य योजना जो बनाई गई है, उसको लेकर आगे चलने की आवश्यकता है, लेकिन ऐसे कार्यों को बढ़ावा देने की बात है तो निश्चित रूप से जिस दिशा में सरकार जाने का प्रयास कर रही है, मैं उस ओर उनका ध्यानाकर्षित करना चाहता हूं, साथ ही साथ हिन्दुस्तान की दुर्भाग्यजनक घटना छत्तीसगढ़ में हुई है, जो एस.आई.टी. का गठन हुआ । एस.आई.टी. के गठन पर आपत्ति नहीं है, लेकिन एस.आई.टी. के गठन का जो आधार है कि जब जिस अधिकारी को लेकर है । आज जो विराजमान है, उनके द्वारा प्रधानमंत्री जी को पत्र लिखना । पत्र लिखकर पूरे चाल, चरित्र और चेहरा के बारे में वर्णन करना और वर्णन करने के बाद में उनकी गिरफ्तारी की मांग करना और गिरफ्तारी की मांग करने के बाद में जब सत्ता परिवर्तन हो जाये....।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी जब इस सीट में बैठते थे तो दक्षिण मुखी हनुमान जी होते थे, हमेशा क्रोधित रहते थे । वे चिट्ठी लिखे थे तो क्रोध में लिखे थे और अब उधर जाकर पश्चिम मुखी हो गए । अब उनको कुछ बोलना ही नहीं है, ये अंतर है।

श्रम मंत्री (डा. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय नेता जी, सतर्क रहिए, वे अभी से कब्जा करने में लगे हुए हैं ।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कल तक जिस अधिकारी के खिलाफ प्रधानमंत्री को पत्र लिखना और उनकी गिरफ्तारी की मांग करना, एक अधिकारी के चाल-चरित्र और चेहरे को लेकर यदि उस पत्र को देखेंगे तो उसमें क्या वर्णन नहीं है, शायद मैं यहां रखूं तो अच्छा नहीं लगेगा, लेकिन आज वही अधिकारी प्रिय हो गए और हिन्दुस्तान में ऐसी घटना कहीं शुरू नहीं हुई है, जो छत्तीसगढ़ में हुई है कि जो एक अभियुक्त है, जो फरार है, जो अपराधी है, जिनके खिलाफ में वारंट है, ऐसे आदमी का पत्र केबिनेट में जाना और उसके आधार पर एस.आई.टी. गठन करना, सरकार किस दिशा में जा रही है । जब केन्द्र में यू.पी.ए. की सरकार थी तो यू.पी.ए. सरकार के तत्कालीन गृहमंत्री जी के द्वारा एन.आई.ए. का गठन करना और गठन करने के पश्चात् में आज उसकी मांग करना, जहां पर कोर्ट में, लोकायुक्त में प्रकरण लंबित है, जहां पर न्यायालय में प्रकरण लंबित है । किसी का सम्मान नहीं तो कम से कम न्यायालय का सम्मान तो करें, इनकी ही पार्टी के गृहमंत्री जी के द्वारा एन.आई.ए. का गठन किया गया, उनका तो सम्मान करें, लेकिन इतनी जल्दी इनकी भावना में परिवर्तन हो गए, जो कल तक बहुत खराब थे और जब सीट बदल गए तो आज सबसे प्रिय वे हो गए ।

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, नेता जी, एस.आई.टी. के नाम से आप लोग इतना घबरा क्यों रहे हैं ?

श्री धरम लाल कौशिक :- उसकी तो जांच होनी है, आप घबराओगे । मैं नाम नहीं लेना चाहता, मैं नाम भी नहीं लूंगा ।

श्री अमरजीत भगत :- एस.आई.टी. का नाम सुनकर हमारे विपक्ष के साथी घबरा रहे हैं ।

श्री धरम लाल कौशिक :- मैं नाम भी नहीं लूंगा, लेकिन आप बार-बार क्यों किसी को बोल रहे हो, आपको मालूम है कि बोलो करके ।

श्री अमरजीत भगत :- जो गड़बड़ी हुई है, उसमें तो आपका नाम ही नहीं है, आप क्यों परेशान हैं ?

श्री धरम लाल कौशिक :- हम बोलना नहीं चाहते, उस समय तो बहुत सारी बातें आई थीं और उस समय ये भी बात आई थी कि मोटर सायकल में वहां से कौन गया, मोटर सायकल में किसने बताकर गए, कौन-कौन है, पहचान कौन कराए, ये तो बहुत सारी बातें आई हैं । इसलिए हमको घबराने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

की जरूरत नहीं है, आप चिन्ता मत करो । जब वे आएंगे तो ये निराकरण आपको करना होगा, हमको डरने की आवश्यकता नहीं है ।

श्री अमरजीत भगत :- नेता जी, स्कूटर में, मोटर साईकिल में धान ढुलाई हुआ है । मोटर साईकिल और स्कूटर का नम्बर है, जिसमें धान ढुलाई हुआ है । वह भी एस.आई.टी. में आयेगा ।

श्री श्रीवास

श्रीवास\10-01-2019\c17\01.15-01.20

श्री अमरजीत भगत :- मोटर सायकिल और स्कूटर में धान ढुलाई हुआ है, वह भी आयेगा एस.आई.टी. में ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसलिए मैंने कहा कि ऐसी घटना कहीं नहीं हो रही है जो छत्तीसगढ़ में हो रही है । कम से कम माननीय न्यायालय का तो सम्मान हो । माननीय अध्यक्ष महोदय, इसके अलावा भी इस प्रदेश में जहां एक तरफ अपने घोषणा पत्र में महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा की बात होनी चाहिये । निश्चित रूप से हम लोग इसके पक्षधर हैं । लेकिन उसका क्रियान्वयन भी होना चाहिये, उसका पालन भी होना चाहिये । हम बहुत सारे वायदे करेंगे, बहुत सारी खोखली बातें करेंगे, उससे जनता का कोई लेना-देना नहीं है । धरातल पर वह दिखनी चाहिये । मैं आपको स्मरण कराना चाहता हूँ....

श्री अमरजीत भगत :- आप अपने दल के सदस्य चन्द्राकर जी को भी समझाईये, महिला सदस्यों के प्रति उनका हरकत ठीक नहीं रहता है । हमेंशा टोका-टाकी और उनको डिप्रेस करने का काम करते हैं ।

श्री कुलदीप जुनेजा :- चन्द्राकर जी अपनी कुर्सी में सोये हुये हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- अभी सो रहे हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अंबिकापुर की घटना है कि कांग्रेस नेता के पुत्र ने दोस्तों के साथ 11 वीं की छात्रा के साथ में दुष्कर्म किया । जब उसकी गिरफतारी की बात आई, तब उसमें हस्तक्षेप होने लगा । आज भी जिनकी गिरफतारी होनी चाहिये, अध्यक्ष महोदय वह गिरफतारी नहीं हुई है । मैं यह नहीं कहता कि प्रदेश में घटनायें नहीं होगी, देश में घटनायें नहीं होगी, लेकिन जो इस बात का पुरजोर समर्थन करे, अपने जनघोषणा पत्र में जारी करे, यदि उनके ही नेता के पुत्रों के द्वारा इस प्रकार के यदि कृत्य किये जाते हैं, इससे निंदनीय और कुछ नहीं हो सकता । इसलिए आने वाले समय में ....

श्री अमरजीत भगत :- लाठी चार्ज के बारे में भी आप जिक्र करिये, किस प्रकार से लोगों को

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

दौड़ा-दौड़ा कर मारा गया । कांग्रेस कार्यालय में आपकी सरकार ने उस समय मारपीट कराई थी । नेताजी उसके बारे में बोलिये । तब तो ठीक लगेगा ।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपके सरगुजा जिले के हैं, आज भी गिरफतारी नहीं हुई है, ऐसा संरक्षण तो देना कम से कम बंद करे ।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- आपको जिले वाले छोड़ेंगे नहीं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसके साथ ही साथ बहुत डॉसारे जो संविदा कर्मी है, दैनिक वेतनभोगी हैं और भी शिक्षाकर्मी हैं, ऐसे बहुत सारे जो ज्वलंत प्रश्न हैं, ज्वलंत मुददे हैं, हमारे जो शिक्षित बेरोजगार हैं, जिनको 2500 रूपये देने की बात है । साथ ही साथ में दो साल का बोनस है । माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसे बहुत सारे मुददे हैं । मैं विस्तार में जाना नहीं चाहता, लेकिन जरूर कहना चाहूंगा कि यदि आपने घोषणा पत्र जारी किये हैं, जनघोषणा पत्र में जारी है तो अपेक्षायें भी बढ़ी है, उन अपेक्षाओं का पालन भी होना चाहिये । लेकिन जिस प्रकार से इस सरकार के गठन होने के पश्चात, पहले दिन सरकार बनने के बाद में, जो आदेश जारी हुआ, आदेश जारी होने के बाद में मुख्यमंत्री का बयान, मंत्रियों का बयान, बयान के बाद में जिस प्रकार से दायें, बायें चले और जिस प्रकार से स्थिति उत्पन्न हो रही है । मैं इस सदन के माध्यम से सदन के नेता को आग्रह करना चाहूंगा, बहुत सारी लोगों की जो भावनायें हैं, बहुत सारी अपेक्षायें हैं, इसे आपने जगाई है, आपने जगाने के बाद में जहां आज अमलीजामा पहनाने की बात आई है, उस बात की तरफ आपका ध्यान जाने की बजाय आपने महामहिम के अभिभाषण में ऐसी बातों का उल्लेख किया है, जो जन घोषणा पत्र है, उससे दूर-दूर तक लेना-देना नहीं है । लेकिन जनघोषणा पत्र के जो महत्वपूर्ण बिन्दु हैं, जिनके आधार पर इस सरकार का निर्माण हुआ है, उस अभिभाषण में उसका प्रतिबिम्ब भी दिखाई नहीं दे रहा है । माननीय अध्यक्ष महोदय, इसलिए मैं कहना चाहूंगा कि अपने वादों से मुकरना आपके लिए तबाही न बन जाये, खोखले वादों से आप कहीं ठोकर न खा जायें । मेजों की थपथपाहट इसलिए मैं चाहूंगा कि ....

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- आदरणीय नेता जी, चल जान दे ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो आपने भावनायें जगाई है, जो अपेक्षायें जगाई है, उसको पूरा भी आपको करना है । इसलिए उस दिशा में कारगर और ठोस पहल हो.......

जारी....श्री मिश्रा

मिश्रा\10-01-2019\c18\1.20-1.25

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो भावनाएं और अपेक्षाएं आपने जगाई हैं उसको पूरा भी आपको करना है इसलिए उस दिशा में कारगर और ठोस पहल हो। महामहिम राज्यपाल महोदय का अभिभाषण निश्चित रूप से सरकार को महिमा मंडित करने के लिए सरकार के द्वारा उसे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पढ़ाया गया है लेकिन जो अपेक्षाएं आपने जगाई हैं आज उसकी पूर्ति नहीं हो रही है इसलिए मैं महामहिम के प्रस्तुत अभिभाषण का विरोध करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। आपने मुझे जो समय दिया उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद। माननीय मुख्यमंत्री जी।

(मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के बोलने हेतु खड़े होने पर)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय नेता जी, जो कहूंगा, सत्य कहूंगा।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- हर बार बोलना जरूरी है क्या? जैसे ही मैं खड़ा होता हूं आप खड़े हो जाते हैं। थोड़ा सब्र करिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं केवल निवेदन करने के लिए खड़ा हुआ हूं, आप इतना नाराज क्यों हो जाते हैं?

श्री भूपेश बघेल :- मैं एक शब्द नहीं बोला हूं उसके पहले आप खड़े हो गये? कुछ बोलने भी दीजिए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीया राजयपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने जो अभिभाषण दिया उसके कृतज्ञता प्रस्ताव पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। सबसे पहले मैं माननीय राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल को सादर धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने अपने अभिभाषण में भारत के गौरवशाली इतिहास के कुछ महत्वपूर्ण अवसरों और विभूतियों का जिक्र किया है। माननीय राज्यपाल के प्रति विशेष तौर पर कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं जिन्होंने हमारी सरकार की रीति-नीति और भावी दिशाओं के बारे में विस्तार से उल्लेख किया है। इस प्रस्ताव के पक्ष और विपक्ष में जिन माननीय सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए उन सभी साथियों का मैं हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। माननीय श्री अमरजीत भगत जी, श्री अजीत जोगी जी, श्री दलेश्वर साहू जी, डॉ. रमन सिंह जी, मोहन मरकाम जी, अजय चन्द्राकर जी, अरूण वोरा जी, सौरभ सिंह जी, धर्मजीत सिंह जी, संतकुमार नेताम जी, कृष्णकुमार बांधी जी, केशव चन्द्रा जी, डॉ. लक्ष्मी ध्रुव जी, श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा जी, श्रीमती छन्नी चन्दू साहू जी, श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू जी, इंदू बंजारे जी, सुश्री शकुन्तला साहू जी, श्री मोहित राय जी, विक्रम मंडावी जी, गुलाब कमरो जी, रजनीश कुमार सिंह जी, डॉ. विनय जायसवाल जी, पुरूषोत्तम कंवर जी, प्रमोद कुमार शर्मा जी, चन्द्रदेव प्रसाद राय जी, अनूप नाग जी, शैलेष पाण्डेय जी, शिशुपाल सोरी जी, देवेन्द्र यादव जी, डमरूधर पुजारी जी, किस्मतलाल नंद जी, आशीष कुमार छाबड़ा जी, अंबिका सिंहदेव जी, इन्द्रशाह मंडावी जी, कुंवरसिंह निषाद जी, देवव्रत सिंह जी, दीपक बैज जी, रामकुमार यादव जी, बृहस्पत सिंह जी, लालजीत सिंह राठिया जी और नेता प्रतिपक्ष आदरणीय धरमलाल कौशिक जी। सभी के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूं। अध्यक्ष महोदय, मैं राज्यपाल महोदय का तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूं कि उन्होंने पंडित

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जवाहर लाल नेहरू के उस अमर वचन का उल्लेख किया जिसमें कहा गया है कि आप दीवारों के चित्र बदलकर इतिहास के तथ्यों को नहीं बदल सकते। कुछ लोगों ने यह प्रयास किया।

श्री प्रमेश

प्रमेश\10-01-2019\c19\01.25-01.30

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी चूंकि 15 साल बाद आप सत्ता में आये हैं, कुछ चीजें हो सकता है, भूल गये हों। माननीय मुख्यमंत्री जी कर जब भाषण होता है, तो सारे मंत्री, सारे विधायक रहना चाहिए आपके दल के, नियमत: तो पूरी दीर्घा इधर से उधर खाली हैं और पहला गवर्नर एड्रेस में आपके दल की गंभीरता हम चाहते हैं, बिल्कुल अगंभीर आप दिख रहे हैं माननीय मुख्यमंत्री जी के भाषण पर।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- आपकी गंभीरता हमने देखी है, आपके नेता भाषण दे रहे थे और पूरा सिस्टम खाली था। आप अपने लोगों को संभाल के रखो, हमारी चिंता मत करो।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये जो कृतज्ञता ज्ञापन का प्रस्ताव होता है। सामान्य रूप से ये महत्वपूर्ण होता है और हम राज्यपाल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। अगर ऐसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव पर भी सरकार के सब मंत्री उपस्थित नहीं रहे हैं। जब मुख्यमंत्री जी का भाषण में विधायक उपस्थित नहीं रहे हैं। ये राज्यपाल जी की अवमानना है। माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी और मुख्यमंत्री जी दोनों से मैं आग्रह करना चाहूंगा कि ये प्रथम सत्र है, सदन का सम्मान राज्यपाल जी का सम्मान .....।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- सारे लोग उपस्थित हैं, देख नहीं रहे हैं आप।

श्री अमितेश शुक्ल :- प्राकृतिक काल के लिए जाना है, मंत्रियों में क्यों जा रहे हो। (व्यवधान)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- कोरम पूरा है कि नहीं सारे मंत्री उपस्थित हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- कम से कम सत्यनारायण भैया आपको तो इस सदन की उच्च परंपराओं की हम बात करें तो आपको तो समर्थन करना चाहिए। अगर राज्यपाल जी के सम्मान में ये मुख्यमंत्री जी का भाषण हो रहा है तो पूरा सदन खचाखच पूरा भरा होना चाहिए। सदन के पूरे सदस्य उपस्थित होने चाहिए और माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी से हमारा आपसे आग्रह है कि सदन का पहला सत्र, पहला अभिभाषण का जवाब और उसमें आधा सदन खाली हो तो ये राज्यपाल जी की भी अवमानना है, ये सदन की भी अवमानना है और पूरा सदन रहना चाहिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी हम मुख्यमंत्री की अवमानना स्वीकार नहीं करते।

श्री अमितेश शुक्ल :- आपके पूर्व मुख्यमंत्री जी कहां हैं उसका पहले जवाब दीजिए। आपके पूर्व मुख्यमंत्री कहां हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- आपकी जिम्मेदारी है हमारी नहीं है।

श्री अमितेश शुक्ल :- आप अपनी जिम्मेदारी को संभालों, पूर्व मुख्यमंत्री जी को ला के बैठाओ न।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अध्यक्ष महोदय, बहुत अच्छा लगा, बहुत अच्छा प्रस्ताव पर आपने बोला। ये संसदीय मर्यादाएं हम सब के लिए हैं न। इस अभिभाषण में आपके दल के पहले वक्ता कहां हैं, जरा बताओ तो। कहां हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- जिम्मेदारी पहले आपकी है। माननीय मुख्यमंत्री जी जब पहला भाषण कर रहे हैं, पहले धन्यवाद प्रस्ताव में पूरी दीर्घा, पूरे मंत्रिमंडल के साथी उसकी अवमानना कर रहे हैं।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- कहां हैं, आपके पूर्व वक्ता।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी की अवमानना पसंद नहीं करते। हमारा दल भी पसंद नहीं करता। मुख्यमंत्री जी सदन में नेता होता है। सदन के नेता हैं और सदन की नेता की आप अवमानना कर रहे हैं और उदाहरण दे रहे हैं इधर का उधर का। ये स्वीकार कीजिए कि आप सदन के नेता का अवमानना करवा रहे है।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- ये अच्छा लगा कि सदन के नेता का आप सम्मान कर रहे हैं ।

श्री अजय चंद्राकर :- क्यों नहीं क्यों नहीं वो आपके एकाधिकार का सम्मान कर रहा हूं।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- ये अच्छा लगा। मैं समझ रहा हूं लेकिन ये मान्यताएं सब के लिए है और पूरा सदन भरा हुआ है किसकी अनुपस्थिति पे चर्चा कर रहे हैं आप ।

श्री अजय चंद्राकर :- ये भरा हुआ है, कहां मंत्रीगण अभी आये, इधर भी खाली है अभी।

श्री रविन्द्र चौबे :- कहां है, कहां हैं ये नेता कहां हैं बताइये आप। पहले वक्ता सभी लोग हैं सभी लोग।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी इसको आपको आपको अवमानना नहीं मानना चाहिए, क्योंकि शुरूआत है। शुरूआत में हम आपका ध्यान दिला रहे हैं। भविष्य में कम से कम अगर मुख्यमंत्री जी का भाषण हो और राज्यपाल जी को कृतज्ञता ज्ञापन करने का मामला हो उस समय पर सदन का सम्मान बढ़ना चाहिए। उससे खाली हमारा सम्मान नहीं बढ़ेगा, आपका सम्मान भी बढ़ेगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

पूरे सदन का सम्मान बढ़ेगा तो मुझे लगता है अध्यक्ष जी का भी सम्मान बढ़ेगा। इसको हमको पालन करना चाहिए।

श्री अजय चंद्राकर :- एक विधायक पानी पीने गये थे, आज माननीय जयसिंह जी कहां गये थे पूछिये तो।

श्री अमितेश शुक्ल :- सारे मंत्रीगण आ गये हैं, सारे बैठे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आज भोजन अवकाश नहीं होगा। मैं समझता हूं कि सभा सहमत है। भोजन की व्यवस्था माननीय मुख्यमंत्री जी ओर से माननीय सदस्यों के लिए लाबी में स्थित कक्ष में की गई है एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर व्यवस्था है। कृपया सुविधानुसार भोजन ग्रहण करें।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- आप सब सादर आमंत्रित हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी सदन में सदस्यों की अनुपस्थिति की चर्चा हो रही है। पहले इस सदन के जो नेता थे, पूर्व नेता थे वो आज अनुपस्थित हैं। जैसे बच्चे क्रिकेट खेलते हैं। बैटिंग करते हैं और चले जाते हैं। पहले बैटिंग किये उसके बाद गायब। (मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती सविता

सविता\10-01-2019\d10\01.30-01.35

जारी श्री भूपेश बघेल :- बैटिंग करते हैं और चले जाते हैं, पहले बैटिंग किये, उसके बाद गायब। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर :- हमने उनके सम्मान की बात नहीं कही थी, हमने आपके सम्मान की बात कही थी।

नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री(डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- मतलब इनका सम्मान करते हो, उनका सम्मान नहीं करते हो ? इसका मतलब है कि अपने नेता का सम्मान खुद नहीं करते।बधाई हो।

श्री शिवरतन शर्मा :- वे दिल्ली पार्टी मिटिंग में गये हैं।

श्री भूपेश बघेल :- दिल्ली पार्टी मिटिंग में आप सब जाने वाले हैं। इसलिए तो 11 तारीख तक जो बैठक चलने वाली थी, उसको 10 तारीख किया गया। आपके नेता प्रतिपक्ष भी जाने वाले हैं, वे पहले से बैठक में जाकर क्या करेंगे?

माननीय अध्यक्ष महोदय, ये इस अमर वचन के आईने में स्वतंत्रता संग्राम को देखने की जरूरत है, उसमें किसका त्याग और बलिदान दर्ज है। बहुत सारे लोगों ने हमारे राष्ट्रीय नेताओं के कद को छोटा करने का प्रयास किया, उसे मिटाने की कोशिश की गई, लेकिन आप कभी सफल नहीं हो पाएंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, 7 दशकों के इतिहास को भी देखने की आवश्यकता है आज देश का विकास जिन बुलंदियों पर है, उसकी बुनियाद किसने और कैसे रखी ? इसे समझने की आवश्यकता है। इस अमर वचन के उजाले में छत्तीसगढ़ के बीते 15 सालों को भी समझने की आवश्यकता है। भारत को

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

गुलामी के अंधेरे से उजाले में लाने के लिए जिन महान नेताओं ने योगदान दिया, मैं उन सभी को नमन करता हूँ महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, डॉ. अबुल कलाम आजाद, बाबा साहब अम्बेडकर, इन सबका योगदान रहा है। मैं उन्हें नमन करता हूँ। शहादत की परम्परा, महात्मा गांधी, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी जी के बलिदानों का सही अर्थों में समझने की जरूरत है, जिसे भूलाने की लाख कोशिश करें, लेकिन भुलाया नहीं जा सकता। आपने 15 साल जिन दीवारों पर लिखा, सरकारी लेटर हेड में लिखा, आपने किसके चित्र सजाये ? आप 15 सालों में दीवारों पर चित्रों में रंग भरने का काम किया है, हम समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन में रंग भरने का काम, हमारी सरकार कर रही है। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके समय में कुछ अधिकारियों ने लिख दिया उसके बारे में हम नहीं जानते, उसको आपने प्रताड़ित करने का काम किया। इतना उनका दोष था कि जिसको आप महापुरूष बता रहे हैं मैं उसको नहीं जानता, उसकी जीवनी के बारे में नहीं जानता। उसको प्रताड़ित करने का काम आपके शासनकाल में किया गया। (शेम-शेम की आवाज) इसलिए राज्यपाल महोदया जी ने जो अभिभाषण में कहा, मैं उसका शतप्रतिशत समर्थन करता हूँ। दीवारों के चित्रों को बदलकर इतिहास के तथ्य को नहीं बदला जा सकता।

श्री अजय चन्द्राकर :- आज जो विधेयक लाये हैं, वही काम कर रहे हैं। आप जवाहर लाल नेहरू जी के बारे में बोल रहे हैं कौन सा नया कह रहे हो।

श्री बृहस्पत सिंह :- भाई क्यों चिड़मिड़ा रहे हैं ?

श्री अरूण वोरा :- माननीय चन्द्राकर जी, सदन के नेता बोल रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये समझ ही नहीं पा रहे हैं कि सत्ता में है या विपक्ष में है। अभी तक भूल नहीं पाये हैं। राज्यपाल महोदया जी अभिभाषण में कृतज्ञता प्रस्ताव पर चर्चा कर रहे हैं कि आगामी बजट सत्र के बारे में चर्चा कर रहे हैं, ये भी समझ नहीं है। पूरा भाषण वही है। थोड़ा सा सब्र करिये। आज तक तो हमने देखा, हम लोग भी विपक्ष में रहे हैं तीन-तीन बार विपक्ष में रहे हैं हम लोग सरकार को 6 महीना, साल भर का समय देते थे, वे काम करें, जो घोषणा पत्र में जनता से जो वायदे किये हैं उसको पूरा करने में हम लोग 6 महीना, साल भर का समय देते थे ये तो पहले दिन ही, एक दिन भी नहीं बीता ....

जारी श्री चौधरी

चौधरी\10-01-2019\d11\01.35-01.40

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पूर्व जारी.. श्री भूपेश बघेल :- यह तो पहले दिन ही, एक दिन भी नहीं बीता, वह जनघोषणा-पत्र को बिल्कुल रट करके घोटकर पी गये हैं। अध्यक्ष महोदय, इनको अपने घोषणा-पत्र के बारे में नहीं मालूम होगा।

श्री बृहस्पत सिंह :- 2100 रुपये और बोनस भी भूल गये थे।

श्री भूपेश बघेल :- तीन बार सरकार में आये, उन तीन बार का जो घोषणा-पत्र है, उसके बारे में एक सदस्य भी जिक्र करता कि हमने ये कहा था और हमने ये किया। एकाध बार जिक्र कर देते।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपको तो प्रसन्नता होनी चाहिए कि आपके घोषणा-पत्र को हम लोगों ने याद किया है।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- उसको 20 साल याद करना है, ठीक से याद करिये।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इतनी जल्दी स्मृति विलोप के शिकार हो जायेंगे, मुझे नहीं पता था। सदस्यों ने बार-बार राज्यपाल की अवमानना, सदन की अवमानना, आसंदी की अवमानना का जिक्र किया, यह जैसे कोई घटना नहीं है, जैसे तकिया कलाम हो गया है। इस चीज का बार-बार उल्लेख कर रहे हैं। आप राज्यपाल महोदया की अवमानना के बारे में कह रहे हैं, सारा सदन, पूरा प्रदेश उनका सम्मान करता है। (XX)[1] कम से कम आप उसका तो ख्याल रख लेते। आप उनका नाम बार-बार घसीट रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल की कोई विचारधारा नहीं होती, फिर ये आपत्तिजनक बात है। राज्यपाल का पद कोई विचाराधारा का नहीं होता।

श्री भूपेश बघेल :- उसके पहले का याद कर लें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उनकी विचारधारा वाली बात है, मुख्यमंत्री जी ने जिन शब्दों का उल्लेख किया है, उसको विलोपित किया जाये।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह घोर आपत्तिजनक है। उसको विलोपित किया जाये।

श्री भूपेश बघेल :- चलिये मैं वापिस ले लेता हूं। विलोपित करने की जरूरत नहीं है, मैं वापस ले लेता हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- यदि आपको लगता है कि राज्यपाल की कोई विचारधारा है, आप कहते हैं तो हम उसको आपके ऊपर छोड़ते हैं।

श्री भूपेश बघेल :- वापिस ले लिया, आपको बहुत तकलीफ हो रही है। वैसे अजय जी, पीड़ा बहुत है, बयान भी करते नहीं बन रहा है। यहां बैठने का चक्कर था, वहां बैठ नहीं पाये, उसकी भी पीड़ा है। (मेजों की थपथपाहट)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

(XX)[1] माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा शब्द वापिस लिये गये।

श्री अजय चन्द्राकर :- वह पीड़ा से तो सबसे ज्यादा ताम्रध्वज साहू जी गुजर रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अनुपूरक बजट के बारे में कह रहे थे, राज्यपाल महोदया जी ने अभिभाषण कर लिया, उसके कृतज्ञता ज्ञापन पर चर्चा होनी थी, अनुपूरक बजट पर चर्चा हो गई, इसमें राज्यपाल महोदया की अवमानना हो रही है, अध्यक्ष महोदय, कौन सी अवमानना हो गई ? इसमें कौन सी गरिमा में कमी आ गई ? हम तो तीन दिन चर्चा करना चाहते थे, लेकिन आपने कहा कि आपकी व्यस्तताएं अलग हैं, दिल्ली में अनुरोध कर लेते।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, फिर मुझे इसमें आपत्ति है। हम लोग जो कक्ष में बात करते हैं, कक्ष में किसी तरह की बात करें, उसका उल्लेख यहां नहीं होता, जो बात हुई वह आपसी सहमति से हुआ। यहां कक्ष की बात का उल्लेख हो रहा है। हम दिल्ली अनुरोध कर लें या क्या कर लें। ये नई-नई बातें आ रही हैं। कक्ष की बात का यहां कभी उल्लेख नहीं हुआ।

श्री भूपेश बघेल :- हमने आपका सम्मान किया। आपके सम्मान की बात हो रही है। हमने आपकी भावनाओं का आदर किया है, इसमें कौन सी आपत्ति हुई ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ के पिछले 60 सालों के इतिहास में सिर्फ दो बार राज्यपाल के अभिभाषण के पहले अनुपूरक बजट रखा गया है, 60 सालों में सिर्फ दो बार रखा गया है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- रखा तो गया है न।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सत्तू भैया, आप सुन तो लीजिए। अध्यक्ष महोदय, इसलिए विधानसभाओं की परंपराओं का उल्लेख करना, उसकी जानकारी देना और आपका संरक्षण प्राप्त करना ये हमारा अधिकार है। माननीय मुख्यमंत्री जी आपने भी जानकारी निकलवाई होगी, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की विधानसभा में 60 साल में दो बार हुआ है। इसलिए इन परंपराओं को तोड़ा गया, हमने ध्यान दिलाया है। माननीय अध्यक्ष जी ने रूलिंग दी, हमने उसको माना है, जिन बातों को हमने अध्यक्ष जी के कक्ष में बोला था, परन्तु इसका उल्लेख करना मुझे लगता है कि उचित नहीं है।

श्रीमती नीर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जारी.........श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपका संरक्षण प्राप्त करना यह हमारा अधिकार है और माननीय मुख्यमंत्री जी आपने भी जानकारी निकलवायी होगी । मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की विधानसभा में 60 साल में दो बार हुआ है और इसलिये इन परम्पराओं को तोड़ा गया हमने ध्यान दिलाया है, माननीय अध्यक्ष जी ने रूलिंग दी, हमने उसको माना है, जिन बातों को हमने अध्यक्ष जी के कक्ष में बोला था, परंतु इसका उल्लेख करना मुझे लगता है कि यह उचित नहीं है । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय, आपने कहा था कि आज तक ऐसी घटना नहीं हुई है ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अब तो आगे बढ़ गये हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- परंतु उल्लेख करना हमारा दायित्व है कि नहीं, ध्यान दिलाना हमारा दायित्व है कि नहीं ? (व्यवधान)

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह परम्परा है, कानून की किसी किताब में नहीं लिखा है, परम्परा है । माननीय अध्यक्ष महोदय, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर जी का लिखा हुआ कानून वह चलता है, उससे हम सब लोग गवर्न होते हैं । आपके कानून से तो ग्राम पंचायत भी नहीं चलता, यहां से आदेश कर देते हैं, पंचायत के पैसे को फलाने कंपनी का टॉवर लगाने के लिये जमा कर दो तो आपसे तो पंचायत भी नहीं चलता फिर आपको वापिस भी करना पड़ता है। कल एक घटना घटी, उसके हम सब लोग चश्मदीद गवाह हैं । घटना घटी, किसी सदस्य की भावना आहत हुई, आंखें नम हो गयी, हम लोग किसी का अपमान नहीं करना चाहते और हम लोग यह भी नहीं चाहते कि किसी को इस परिस्थिति का सामना करना पड़े, यह दुखद घटना है और सबने खेद भी जताया, यह एक अच्छी परम्परा है लेकिन क्या कभी श्री नंदकुमार पटेल, श्री महेंद्र कर्मा, श्री विद्या भैया, श्री उदय मुदलियार, श्री योगेंद्र शर्मा जो शहीद हो गये, इनकी आंखों को नम होते हुए तो नहीं देखा, झलियामारी काण्ड हो जाता है, बच्चियों के साथ दुराचार होता है तब इनकी आंखों को नम होते हुए तो हमने नहीं देखा, 76 जवान ताड़मेटला में शहीद हो जाते हैं तब इनकी आंखों को नम होते हुए नहीं देखा । 13 महिलाओं की नसबंदी काण्ड में मौत हो जाती है तब हमने इनकी आंखों को नम होते हुए नहीं देखा, मंत्री को अट्टहास करते हमने देखा है, हमने वह भी मंजर देखा है जब अटल जी के श्रद्धांजलि सभा में मंत्रीगण किस प्रकार से अट्टहास कर रहे थे ? (शेम-शेम की आवाज) हमने वह मंजर भी देखा है ।

श्री अमरजीत भगत :- अभी कुछ नहीं बोलेंगे ।

श्री अजय चंद्राकर :- मुख्यमंत्री जी के बाद बोलने का समय मिलेगा तो जरूर उस विषय पर बोलेंगे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे लगता है कि यह गलत उल्लेख हो रहा है । इस सदन के सदस्य श्री नंदकुमार पटेल जी, श्री उदय मुदलियार जी, श्री विद्याचरण जी, श्री महेंद्र कर्मा जी जब इनकी घटना हुई तो आप शायद नहीं जानते इस सदन के सभी सदस्यों के आंखों में आंसू

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

थे । वे सब हमारे मित्र थे, हमारे दोस्त थे । हमारे हमसफर थे, हमारे साथी थे और उस घटना का उल्लेख करके इस सदन में इस प्रकार की बात करना मुझे लगता है यह सबका अपमान है । यह सबका अपमान है, बाकी घटनाओं का आप बोल सकते हैं लेकिन झीरम की घटना से इस सदन का कोई भी सदस्य नहीं होगा जो दुखी नहीं होगा जिसने उस घटना की निंदा नहीं की होगी । मैं स्वयं, हमारे सदस्य श्री नंदकुमार पटेल जी की अंत्येष्टि में गये, हम श्री महेंद्र कर्मा, श्री विद्याचरण शुक्ल जी की अंत्येष्टि में गये, उनकी घर पर जाकर हमने संवेदना व्यक्त की, हमारे भी आंखों में आंसू थे और आज भी आंसू हैं, आज भी हम दुखी हैं, इस घटना का उल्लेख करना मुझे लगता है कि बाकी आप सरकार की आलोचना कर सकते हैं । आप बाकी मामलों में परंतु संवेदना के मामले में आप जो उल्लेख कर रहे हैं मुझे लगता है कि यह उचित नहीं है और यह औचित्यपूर्ण नहीं है ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- फिर भी आपके कार्यकाल में अपराधी नहीं पकड़े गये।

श्री भूपेश बघेल :- आप उस समय थे, नहीं थे । नेता प्रतिपक्ष जी ने जब झीरम घाटी के मामले में एस.आई.टी. के गठन करने की बात कही तब उसका विरोध करते नजर आये । जब एन.आई.ए. जांच हो रही है, आयोग जांच कर रहा है तो एस.आई.टी. गठन करने की क्या आवश्यकता है ? इसी पवित्र सदन में सारे सदस्यों ने सी.बी.आई. जांच की मांग की थी और उस समय तत्कालीन मंत्री ने और संसदीय कार्यमंत्री ने घोषणा की थी कि सी.बी.आई. जांच होनी चाहिए लेकिन क्या हुआ ?

श्री अजय चंद्राकर :- अब आप बताईये ।

श्री भूपेश बघेल :- वह तो आपको बताना पड़ेगा ।

श्री अजय चंद्राकर :- अब उधर आप चल दिये हैं तो आपको बताना पड़ेगा कि मेरे घोषणा के बाद, उधर तत्कालीन सरकार की घोषणा के बाद क्या हो रहा है और क्यों जांच नहीं हो रही है उसको भी सदन को भी बताईये ।

श्री भूपेश बघेल :- वह भी बतायेंगे ।

श्री अजय चंद्राकर :- क्योंकि हम तो असत्य थे, आप सत्य हैं । आप सत्य हैं तो उद्घाटित करिये कि क्यों जांच नहीं हो रही है, उद्घाटित करिये । हम भी सुनने को आतुर हैं ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- एस.आई.टी. तो उसी दिशा में पहल है और बतायेंगे, हमारी जवाबदारी है...........जारी

..........श्री कुरैशी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कुरैशी\10-01-2019\d13\01.45-01.50

श्री रविन्द्र चौबे :- एसआईटी तो उसी दिशा में पहल है और बताएंगे, हमारी जवाबदारी है, जनता ने दिया है, जनादेश दिया है और हम ही बताएंगे । हम ही बताएंगे उसको । जनता ने जनादेश दिया है, हम ही बताएंगे उसको ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बिल्कुल, बिल्कुल ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अरे, आपके एक निर्णय ने बता दिया कि आप क्या करने वाले हो । कल तक जो [XX][2] था वह एसआईटी का प्रमुख है। आपकी नीयत का पता चल गया ।

श्री भूपेश बघेल :- दूसरा पहलू तो यह भी है कि जो आपके प्रिय थे, उन्हीं से तो जांच करवा रहे हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने कहा था वह व्यक्ति [XX] है, आपका क्या सांठगांठ है पता चल गया ।

श्री भूपेश बघेल :- जो आपके प्रिय थे उसी को जांच की जिम्मेदारी दी है । आपने जिसे पूरा बस्तर सौंप दिया था । यह जो कर रहे हैं वह ठीक कर रहे हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- हमारे सब प्रिय थे साहब, 15 साल में ।

श्री भूपेश बघेल :- हां,हां प्रिय थे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी भी हैं ।

श्री भूपेश बघेल :- तभी तो झीरम घाटी की घटना घटी । इसी सदन में आपके नेता ने कहा था मैन्यूफैक्चरिंग डिफेक्ट है ।

अध्यक्ष महोदय :- किसी सदस्य ने [XX][3] शब्द का प्रयोग किया है, मैं उसे विलोपित करता हूं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, मैंने जिस शब्द का उपयोग किया है, इस सदन के रिकॉर्ड में है । जब हमारे नेता जी विपक्ष में बैठते थे तो आप निकलवाकर देख लीजिए, बोलो तो मैं निकलवाकर दे दूंगा ।

श्री भूपेश बघेल :- हां, निकलवा लीजिएगा । [XX] जैसे शब्द का प्रयोग आप ही कर सकते हैं, मैं नहीं कर सकता ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैंने उपयोग नहीं किया ।

[2] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

[3] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, जो कल तक आपके प्रिय थे, आपको विश्वास हो, इसीलिए तो उसी अधिकारी को, कौन सी.एम. मैडम हैं, कौन सी.एम. सर हैं, कौन डॉक्टर साहब हैं यह जानने की जिम्मेदारी दी है ताकि आपको अविश्वास न हो । इसीलिए उसको जिम्मेदारी दी गई है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बिल्कुल ।

श्री भूपेश बघेल :- दे दिया गया है भाई, शुरू हो गया है । आप तो वैसे भी प्रसन्न हो रहे होंगे । यहां भले ही कुछ भी कहें, लेकिन आपके दिल में क्या है यह मैं भी जानता हूं और आप भी जानते हैं और पूरा सदन जानता है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, किसानों की आत्महत्या के बारे में बड़ी चर्चा हो रही थी । जिन्होंने कहा कि बड़े किसान आत्महत्या करते हैं । दोनों सदस्य अभी अनुपस्थित हैं । अध्यक्ष महोदय, पिछले सत्र में हमने हर आत्महत्या के बारे में इस सदन में चर्चा की है । ध्यानाकर्षण लाए, स्थगन लाए और उस पर चर्चा की । तब सत्ता पक्ष के लोगों ने कहा कि शराब पीकर आत्महत्या कर रहे हैं । पारिवारिक संबंध ठीक नहीं था । अध्यक्ष महोदय, मेरे पास कुछ सूची है । जहां हम और हमारे साथी जांच करने गए थे । रामध्वज साहू, वीरेन्द्र नगर जिला कवर्धा, जिसमें आदरणीय चौबे जी गए थे, अकबर साहब भी गए थे । मंथी पिता □लसिंह ध्रुव बागबाहरा, महासमुंद जहां धनेन्द्र भैया और हम गए थे । ज्ञानिकराम जिला कांकेर, हीराधर, रेणु निषाद महासमुंद, बिजली का बिल अधिक आया था, जिसे बर्दाश्त नहीं कर पाया, खेत में काम कर रहा था, दो एकड़ का किसान, उसके पास कोई ट्रैक्टर नहीं था ।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक चीज भूल गए आप, आप बगदेही भी गए थे । प्रदेश कांग्रेस कमेटी की ओर से पैसे देने की घोषणा की थी, उसे अभी तक नहीं मिला है । उसको भी बता दीजिए कि प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने एक लाख रूपए देने की घोषणा की थी ।

श्री भूपेश बघेल :- बैठिये, आपने उस समय क्या कहा था ? यहां हम लोग पिकनिक मनाने गए थे, अभी तत्कालीन विधान सभा अध्यक्ष जी भी उस समय गए थे । आपके द्वारा बयान आया कि हम लोग पिकनिक मनाने गए है और जनता सब देख रही थी और इसी कारण आपको वहां बिठा दिया (मेजो की थपथपाहट) ।

श्री अजय चन्द्राकर :- प्रदेश कांग्रेस कमेटी की ओर से जो बोले थे उसको तो दिलवा दीजिए ।

श्री भूपेश बघेल :- वह पैसा पहुंच गया है, आप पता कर लीजिए । मैं अधिकारिक तौर पर कह रहा हूं कि वह पैसा पहुंच गया है । अध्यक्ष महोदय, चन्द्रहास साहू के पास कौन सा ट्रैक्टर है बताइए आप । वे कितने बड़े किसान हैं । वे बोल रहे थे और आप चुपचाप सुन रहे थे क्योंकि आपका सहयोगी दल है । यदि आपके सहयोगी नहीं होते तो तुरंत खड़े होकर बोलते कि बगदेही के जो किसान हैं

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

चन्द्रहास साहू उसके पास कोई ट्रैक्टर नहीं है, कोई बड़ा किसान नहीं है । अध्यक्ष महोदय, आप लगातार कहते रहे, बड़े किसान के हितैषी बनते रहे । आप यह भी डिफरेंशिएट नहीं कर पाए कि ....जारी

--- श्री ठाकुर-

ठाकुर\10-01-2019\d14\01.50-01.55

जारी.............श्री भूपेश बघेल : - चंद्रहास साहू। उसके पास कौन सा ट्रेक्टर है बताइए आप। कितने बड़े किसान हैं वो और वो बोल रहे थे और आप चुपचाप सुन रहे थे क्योंकि आपके सहयोगी दल हैं और यदि आपके सहयोगी नहीं होते तो तुरंत खड़ा होकर बोलते कि बगदही के जो किसान हैं चंद्रहास साहू उसके पास कोई ट्रेक्टर नहीं है। कोई बड़ा किसान नहीं है। आप लगातार कहते रहे बड़े किसान के हितैषी बनते रहे। आप ये भी डिफ्रेन्सीएट नहीं कर पाए कि जो कृषि ऋण है, उसमें और मध्यकालीन और दीर्घकालीन ऋण में अंतर क्या होता है। ट्रेक्टर खरीदना है, प्लाट खरीदना है मकान बनाने के लिए लोन लेना या खाद दवाई के लिए लोन लेना इसमें अंतर नहीं समझ पाएं। हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष ने जो बातें कहीं, हम लोगों ने किसानों से जिन बातों को कहा, उसको किसानों ने समझा और इसी कारण से तीन चौथाई बहुमत दिलाकर के सत्ता पक्ष में बैठाया है। (मेजों की थपथपाहट) हमने 6,100 करोड़ रूपये अभी हमने कहा हम ऋण माफ करेंगे और ये आंकड़े बढ़ेंगे ये भी मैंने कहा क्योंकि राष्ट्रीयकृत बैंक के भी आंकड़े आना बाकी हैं। उसको भी हम माफ करेंगे। हो सकता है कि वह सात हजार करोड़ हो जाए, आठ हजार करोड़ हो जाए, नौ हजार करोड़ हो लेकिन आपने क्या किया था आपके समय में ऋण माफी की बात की, 2500 रूपया आपने दिया। 5 लाख किसानों का 106 करोड़ रूपया माफ कर दिया और आज आप बात कर रहे हैं किसानों के हित की बात। कहां 106 करोड़ और 6,000 करोड़ । माननीय अध्यक्ष महोदय, आप लगातार बस्तर की बात किये। 15 साल में आपकी नीति क्या थी नक्सलियों से निपटने की। आप कह रहे हमारे शासन काल में नहीं आया। आपके शासनकाल में नहीं आया तो आप करते क्या रहें। 3 ब्लॉक से बढ़ाकर 15 जिला और वो भी कबीरधाम में इस साल नया नोटिफीकेशन हुआ। जहां आपके पूर्व नेता निवास करते हैं। 15 जिला हमने यही कहा 15 साल तक के बंदूक की नली से समस्या का हल ढूंढ रहे थे। गोली के बदले गोली। इसे आप ढूंढ रहे थे। इससे समस्या का निदान नहीं हुआ बल्कि विस्तार हो गया है। मैंने कभी नहीं कहा गले लगाने की बात। आपके नेता तो ऐसे हैं जो हम लोगों ने नहीं कहा वो भी सुन लिये और उसको भी बयान दे दिये कि हम गले लगाने वाले हैं। गले लगाने की बात खुद उन्होंने कही थी। बिगड़े हुए हमारे बेटे हैं ये भी उन्होंने कहा था। भाई भी उन्होंने कहा था। जब जैसा अवसर आया वैसा-वैसा उन्होंने बयान दिया। हमने तो केवल इतना कहा कि हम पीड़ित पक्ष से बात करेंगे। प्रभावित लोगों से बात करेंगे जो वहां बुद्धिजीवी हैं उनसे बात करेंगे, जो

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पत्रकार हैं उनसे बात करेंगे जो जवान हैं, उनसे बात करेंगे। उसमें तकलीफ क्या है ? अब जो है नीति बदलने की आवश्यकता है। सबसे विचार करने की आवश्यकता है। इसी पवित्र सदन में क्लोज डोर मीटिंग हुई थी। सब लोगों ने, हम लोगों ने राय दिया था। उसमें कौन सा आप ने किन-किन बातों का अमलीजामा पहनाया है। केवल जवान वहां मरते रहे। हम लोग श्रद्धांजलि देते रहे, शहीद होते रहे। आप तो उन जवानों का भी सम्मान नहीं किये साहब। जवानों के लाश को आपने कचरे के गाड़ी में आपने ुलाकर लाया। इसी रायपुर जवानों के वर्दी को आपने कूड़ेदान में फेंक दिया। ये आपकी भावना है। आपको पसंद नहीं आ रहा है। आपको नींद आ रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय।

श्री अजय चंद्राकर : - आप इधर बैठते थे तो आपसे इशारेबाजी होती थी कभी-कभी। इसीलिए थोड़ी-थोड़ी चल रही थी अपनी।

श्री शिवरतन शर्मा : - माननीय मुख्यमंत्री जी, नक्सलवाद की आप चर्चा कर रहे हैं। चुनाव के दौरान आपके राष्ट्रीय नेता आये थे राज बब्बर जी और उन्होंने नक्सलवादियों की तुलना क्रांतिकारियों से की थी और आपके दल के किसी भी नेता ने इस बात का खंडन नहीं किया। वो इस बात को इंगित करता है कि कहीं न कहीं चुनाव के दौरान नक्सलवादियों से आपकी सेटिंग थी।

श्री भूपेश बघेल : - अरे, जो बात कही नहीं गयी थी वही बात तो कह रहा हूं मैं। जो हमने कहा ही नहीं है, उसको आप बोल देते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा : - ये पूरे प्रदेश के समाचार पत्रों में छपा है उस पीरिएड का देख सकते हैं कि क्रांतिकारियों से नक्सलवादियों की तुलना माननीय राज बब्बर जी ने की।

श्री भूपेश बघेल : - अरे, सरकार आपकी थी हुजूर।

श्री शिवरतन शर्मा : - तो खंडन तो कर सकते थे कम से कम।

श्री भूपेश बघेल : - अरे, आपका दबाव कितना है मालूम है। मैं कहना नहीं चाहता। सदन में कही हुई बातें भी आप न छपे ये व्यवस्था करते थे, दबाव डालते थे, ये भी हमने देखा है।

जारी.........श्री अरविंद

अरविंद\10-01-2019\d15\01.55-01.60

श्री सत्यनारायण शर्मा :- कितने करोड़ों रूपये बर्बाद कर दिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- अगर गलत छपा था तो कम से कम खण्ड कर देते।

श्री भूपेश बघेल :- आपका कितना दबाव था, हमें मालूम है। आपका दबाव कितना था, यह हमें मालूम है। मैं कहना नहीं चाहता हूँ। सदन में कही हुई बातें भी न छपे, यह व्यवस्था भी करते थे। दबाव डालते थे, हमने यह भी देखा है। आप तो कन्ट्रोल करने के लिए, आप 15 चैनल को कन्ट्रोल करने के

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

लिए एक चैनल को दे देते हैं, उसका भी पैसा दे देते हैं। हमारी पत्रकारों से चर्चा होती रही है। क्या-क्या नहीं हुआ, हम सब जानते हैं। लेकिन जब कहने का वक्त आयेगा तो हम निश्चित रूप से कहेंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपकी कर्जमाफी के लिए बड़ी चिंता रही है। छत्तीसगढ़ में इतनी बड़ी संख्या में कभी ऋणमाफी नहीं हुआ। हमने अभी साढ़े 16 लाख किसानों का 6100 करोड़ रूपया माफ किया है और उसके बाद भी आप किन्तु-परन्तु लगा रहे हैं। किसानों में बहुत उत्साह है। मैंने पहले भी उल्लेख किया था कि किसान मुझे मुख्यमंत्री सहायता कोष के लिए किस प्रकार से चैक दे रहे हैं। मैं उस बात का बार-बार उल्लेख नहीं करना चाहता हूँ। आज पूरे छत्तीसगढ़ के किसान महसूस कर रहे हैं कि पहली बार हमारी सरकार बनी है, किसानों की सरकार बनी है, हम सबकी सरकार बनी है। (मेजों की थपथपाहट) आप यहां पर कुछ भी कहते रहिये, क्योंकि आपकी बाध्यता है। आप छः महीने भी चुप नहीं बैठ सके, बर्दाश्त नहीं कर पाये, आप मौका नहीं दे पा रहे हैं। आप 20 ही दिन में सवाल पूछना शुरू कर दिए कि आपने यह फैसला क्यों नहीं किया, वह फैसला क्यों नहीं किया। आप 15 साल में नहीं कर पाये, आपने 2100 रूपया देने की बात कही थी। आपने कभी देने का सोचा ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आप जब जैसा कहेंगे, वैसा हम लोग बोलना शुरू करे ?

श्री भूपेश बघेल :- बिलकुल नहीं सरकार।

श्री अजय चन्द्राकर :- तो आपके हिसाब से बता दो कि कब बोलना है, उस दिन से हम बोलना शुरू कर देंगे।

श्री भूपेश बघेल :- नहीं-नहीं, आप तो बोल चुके, उसके बाद क्या है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- हम विधान सभा में उसी दिन आयेंगे, जिस दिन आप अनुमति दोगे उस दिन से बोलो, उसी दिन से बोलेंगे, बाकी दिन नहीं आते। आप बता दीजिये।

श्री भूपेश बघेल :- मैं बिलकुल नहीं कह रहा हूँ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप अभी कह रहे हैं। छः महीना भी नहीं देखे, कहना शुरू कर दिए, किन्तु-परन्तु लगाना शुरू कर दिए।

श्री भूपेश बघेल :- हां-हां, मैं उसमें आ रहा हूँ न।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं लगाते। आप बोल दीजिये, मत बोलिये। आपकी बात मान लेंगे, आप सदन के नेता हैं।

श्री भूपेश बघेल :- अजय जी, मैं नेता प्रतिपक्ष की बात कर रहा हूँ।

डॉ0 शिव कुमार डहरिया :- जो इस्तीफा देने की घोषणा किए हो, वह घोषणा कब पूरा करोगे ? कब इस्तीफा दोगे, पहले यह बताओ ? उसके बाद यहां दूसरी बात करना।

श्री अमरजीत भगत :- यहां कर्ज माफी की बात चल रही थी और आप लोग बहिर्गमन कर रहे थे। जनता सब देखती है, ऐसा थोड़ी न है।

अशासकीय/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री भूपेश बघेल :- आप यहां जितनी बात कह रहे हैं न, उसको चुनाव के लिए बचाकर रखिये।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो नेता प्रतिपक्ष से बात कर रहा था, जो अभिभाषण में कह रहे थे। आपने शराबबंदी की बात कही, आपके पूर्व नेता ने भी शराबबंदी के बारे में बात कही। आपने एक आदेश का उल्लेख भी किया। आपने 26.12. के जिस परिपत्र का उल्लेख किया। वह नये ठेके बारे में नहीं था, आबकारी विभाग द्वारा जो 28.12. के द्वारा स्पष्टीकरण दिया गया है, वह इसलिए नहीं। जो रेग्युलर काम हो रह हैं, उसके बारे में है। शराब नीति के बारे में कह रहे हैं कि तुरन्त एक झटके में बंद कर दो, यह कोई नोटबंदी नहीं है, जिसमें आपने कर दिया और सैकड़ों लोग मर गए, जिसका ईलाज नहीं हुआ। आपने एक झटके में बंद कर दिया। आपने भारत के लोगों को विश्वास में नहीं लिया। न गरीब मजदूरों को विशवास में लिया न किसानों को, न व्यापारियों को विशवास में लिया। किसी को भी विश्वास में नहीं लिया और बोल दिया कि आज से पांच सौर, हजार रूपये के नोट रद्दी हो गए। लोग कहीं आ जा नहीं सके। होटल में खाने का सामान रखा हुआ है, जेब में पैसा है, वह बेचना चाहता है, ये खरीदकर खाना चाहता है, लेकिन आपने ऐसी व्यवस्था कर दी कि न तो लोग ले पाये और न वह बेच पाये। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम शराबबंदी लागू करेंगे, हम प्रतिबद्ध हैं। लेकिन हमने यह भी कहा कि यहां 85 तहसील अनुसूचित क्षेत्र में आता है। वहां सर्वोपरि ग्राम सभा है, उनसे राय ली जायेगी। हम यहां के लोगों को विश्वास में लेंगे, एक्सपर्ट लोगों से अध्ययन भी करायेंगे। हम आपकी तरह से कमेटी नहीं बनायेंगे जो यह रिपोर्ट दे कि और भी दुकान खोली जानी चाहिए, वाइन और बीयर के शॉप और खोले जाने चाहिए। हम यह नहीं करने वाले हैं। (मेजों की थपथपाहट) लेकिन 20 दिन में यह सब फैसला हो जायेगा? हमको 5 साल के लिए जनादेश मिला है। हम ऐसा काम करेंगे जिसमें घर पहुंच सेवा न हो। दुकान बंद हो जाये और घर पहुंच सेवा हो जाए, यह भी ठीक नहीं है।

.......जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\10-01-2019\d16\2.00-05

समय :

2:00 बजे

जारी....श्री भूपेश बघेल :- घर पहुंच सेवा हो जाए, ये भी ठीक नहीं है । शराब एक सामाजिक बुराई है, उसे दूर करने के लिए सरकार के साथ-साथ पूरे समाज को भी आगे आना होगा और हम लोग वह काम कर रहे हैं, विभिन्न समाजों के बीच में जा रहे हैं, उनको आहवान कर रहे हैं, इस प्रकार से एक वातावरण बनाईए, सामाजिक व्यवस्था भी बननी चाहिए, तब शराब बंदी होगी।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, इनको बड़ी चिन्ता है कि ठेकेदारी शुरू हो जाएगी, एक बात कहना चाहूंगा कि चाहे आपकी नक्सल नीति हो, चाहे आपकी शराब नीति हो, जब तक नई व्यवस्था लागू नहीं हो जाती, जब तक किसी निष्कर्ष में नहीं पहुंच जाते, ये व्यवस्था चलती रहेगी चाहे वह 6 महीना लगे, चाहे 4 महीना लगे, चाहे साल भर लगे, लेकिन उसको कोई कांक्रीट निष्कर्ष में पहुंचकर निर्णय लेकर, सबको विश्वास में लेकर हम कदम बढ़ाएंगे। नक्सल समस्या तो एक झटके में समाप्त नहीं हो सकती, उसमें सबसे राय शुमारी लेनी पड़ेगी, सबसे चर्चा करनी पड़ेगी, जो आपने नहीं किया और वैसे भी आपने बस्तर के लोगों का विश्वास खो दिया । एक बार नहीं, दो बार । पिछले कार्यकाल में आप 8 विधान सभा क्षेत्र हारे थे, इस समय 11 विधान सभा क्षेत्र में आप हार गए । (मेजों की थपथपाहट) वहां की जनता हमारे साथ है, हम उनसे चर्चा करेंगे, बात करेंगे और बिना विश्वास में लिए कोई कदम नहीं उठाएंगे ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आप अभी चिटफंड कम्पनी के बारे में कह रहे थे, वह आप ही का बढ़ाया हुआ है । आप ही के लोगों ने उद्घाटन किया। जब आप विधान सभा अध्यक्ष थे तो जांजगीर में एक कार्यक्रम में आप खुद ही गए थे और जहां रोजगार मेला लगा हुआ था, उस रोजगार मेले में आपने चिटफंड कम्पनी के एजेन्ट को आप सर्टिफिकेट बांट रहे हैं कि आपको रोजगार मिल गया और पिछले समय आपकी सरकार ने उसी के खिलाफ कार्यवाही कर दी । आपने 300 से अधिक एफ.आई.आर. कर दिया और उनको जेल में ठूंस दिया । वे हमारे बच्चे हैं और वे केवल चिटफंड कम्पनी के एजेंट नहीं, बल्कि वे निवेशक भी हैं । पहले उन्होंने निवेश किया, उसके बाद वे एजेंट बने और जो डायरेक्टर हैं, जो मालिक हैं, उनके साथ तो आप गलबैया डाले घूम रहे थे, चुनाव में उसका उपयोग कर रहे थे । पिछले समय आपके यहां चुनाव लड़े, आपने उनका पूरा उपयोग किया, आपने उद्घाटन किया । मैं आपसे कहना चाहता हूं कि अभी सरकार बने 23-24 दिन ही हुए हैं, सबसे पहले उनके खिलाफ जो केश है, उनको वापस करने का काम और केबिनेट में हम उनके बारे में उनका कैसे पैसा वापस हो, ये केवल प्रयास नहीं, सुनिश्चित करेंगे कि उनका पैसा वापस होना चाहिए । ये गरीबों के खून-पसीने की कमाई का पैसा है, ये कमीशन का पैसा नहीं है (मेजों की थपथपाहट) उसको कराएंगे, लेकिन आप कहते हैं कि सब 20 दिन में हो जाएगा । कैसे 20 दिन में संभव है, अभी केबिनेट की तीसरी मीटिंग भी नहीं हुई और सब चीज अभी हो जाए ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षा कर्मियों से पंचायत कर्मियों के बारे में आपने फैसला ले लिया, लेकिन उनके लिए दूसरे अनुपूरक में प्रावधान ही नहीं किया । उसको हम अभी प्रावधानित कर रहे हैं । हम दे रहे हैं, उनको देंगे, चाहे वे पेंशनधारी लोग हों, जिसको बढ़ाने की बात हमने कही, चाहे वह शिक्षाकर्मी हो, चाहे आंगनबाड़ी कार्यकर्ता हो, उन सबके बारे में हमारी चिन्ता है और हम निश्चित रूप से करेंगे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, अब बार-बार बदलापुर-बदलापुर । वह आपके दिमाग में भरा हुआ है, वे अभी नहीं हैं । बदले ही भावना इतनी भरी हुई थी, हम लोगों को छोड़ दीजिए, उन्होंने अपने लोगों को तक नहीं छोड़ा और इसी कारण से इस गति में प्राप्त हुए हैं । हम बदले की बात नहीं, बदलाव की बात कर रहे हैं । (मेजों की थपथपाहट) और ये वक्त बदलाव का है । इसमें बदले की कोई बात नहीं, लेकिन न्याय की बात जरूर होगी । चाहे झीरम की बात हो, चाहे अगस्ता वेस्टलैण्ड खरीदी की बात हो, चाहे नान का हो, चाहे अंतागढ़ का हो । उनके पास खरीद-फरोख्त करने के लिए, प्रजातंत्र को कलंकित करने के लिए उनके पास बहुत पैसा था । न्याय मिलनी चाहिए, न्याय के लिए करेंगे, बदले के लिए नहीं और चिट्ठी के बारे में आपके नेता बात कर रहे थे, चिट्ठी में तो .....।

श्री श्रीवास

श्रीवास\10-01-2019\d17\02.05-02.10

जारी....श्री भूपेश बघेल :- और चिटठी के बारे में आपके नेता बात कर रहे थे । चिटठी में आदरणीय ननकीराम कंवर जी ने भी पत्र लिखा था, आदरणीय प्रधानमंत्री को, आपके मुख्यमंत्री को । वह पत्र भी पटल में रखो । बहुत सम्माननीय है, आदिवासी नेता है, जमीन से जुड़े हुये हैं, समाज से जुड़े हुये नेता हैं, हम उनका सम्मान करते हैं । लेकिन उनके पत्रों का आपने क्या किया ? रददी के टोकरी में डाल दिये । आप हमारे पत्रों के बारे में जानकारी दे रहे थे.....।

श्री ननकीराम कंवर :- कीजिए, हम भी चाहते हैं ।

श्री भूपेश बघेल :- दादा मैं बहुत सम्मान करता हूॅ । आपने जो कहा, हम उसका पालन भी करेंगे । इन्होंने सम्मान तो नहीं किया, लेकिन आपका सम्मान हम जरूर करेंगे । आपकी बातों का हम जरूर ध्यान रखेंगे । (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत छोटे समय में सरकार ने जो फैसला लिया, मैं एक-एक लाईन में बताना चाहूंगा । इस 23-24 दिनों में हमने जो फैसला किया, उसमें अल्पकालीन कर्जा माफ 6100 करोड़ रूपया, इसके तहत 16 लाख 65 हजार किसानों का कर्जा माफ किया, दूसरा 2500 रूपया में धान खरीदने का निर्णय लिया, जो पूरे देश में पहला राज्य है टाटा के किसानों का 1700 हेक्टेअर से अधिक जमीन हमने वापस की । सिंगूर में तो सुप्रीम कोर्ट का आदेश हुआ था, तीसरा फैसला हमारी सरकार ने किया है । माननीय अध्यक्ष महोदय, आप रबी फसल का विरोध करते रहे, हमने किसानों को रबी फसल के लिए पानी देने का फैसला किया । सिंचाई मंत्री जी बता रहे हैं कि एक लाख हेक्टेअर की सिंचाई।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब सरकार बन गई है तो सिंचाई मंत्री जी को श्रेय दे देते हैं । उधर के लोग बता देंगे कि उसकी घोषणा वर्षा ऋतु समाप्ति के बाद हो चुकी थी कि इस साल देंगे करके । श्रेय ले सकते हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री भूपेश बघेल :- आप घोषणा करते रहे, 2100 की घोषणा आपने किया था, 300 का भी आपने घोषणा किया था ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :-आपने इस्तीफा दूंगा करके घोषणा किया था, वह तो दो । अपनी घोषणा का तो ख्याल रखो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- 100 बार बात हो सकती है, 100 बार खड़े हो सकते हैं । हम लोग इधर वाले आपसे हाथ जोड़ते हैं ।

श्री अरूण वोरा :- माननीय चन्द्राकर जी, आप आज दवाई लिये हैं कि नहीं ?

श्री भूपेश बघेल :- वह अपनी जमीन नहीं बेच पा रहे थे । शादी ब्याह के लिए, अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए, अन्य आवश्यकताओं के लिए, उसको हमने मुक्त किया । अभी 1244 रजिस्ट्रियां हो गयी है । (मेजों की थपथपाहट) छठवां कार्यवाही, चिटफंड कंपनी जिसके बारे में आप चर्चा कर रहे थे । पहला रिलीफ देने का काम किया, सब केस हमको वापस लेना है, जिसको 300 से अधिक आपने केस किया था । माननीय अध्यक्ष महोदय, सातवां फैसला-आपने जो शराबबंदी के लिए रिपोर्ट बनाई थी, उसको हमने निरस्त किया और उसके लिए नई कमेटी हम बना रहे हैं । आठवां फैसला-तेंदूपत्ता जो मजदूर हैं, पहले आप 2500 रूपये देते थे, 4000 रूपया प्रति मानक बोरा हम लेंगे । (मेजों की थपथपाहट) नवां फैसला-सहायक प्राध्यापकों की भर्ती, 1384 पद रिक्त थे, उसको भरने के लिए हमने निर्देश जारी कर दिया है । वनाधिकार पटटा, सबसे ज्यादा पूरे देश में कहीं निरस्त हुआ है तो छत्तीसगढ़ में निरस्त हुआ है, चार लाख से अधिक आवेदन आपने निरस्त किये हैं । उसका फिर से जांच करने के लिए उसका पुनरीक्षण करने के लिए पटटा देने का निर्देश दे दिया है । माननीय अध्यक्ष महोदय, बीमे का फण्ड आपने बनाया । कलेक्टर को आपने सर्वेसर्वा बना दिया । हम फिर से समीक्षा कर रहे हैं । कहां-कहां गडबड़ी किये हैं, उसकी भी जांच करायेंगे । जो जनप्रतिनिधि हैं, उसके अनुरूप बनना चाहिये । जो एक्ट है, उसके अनुरूप होना चाहिये । बारहवां फैसला आदरणीय ननकीराम कंवर जी, आपने जो फैसला दिया है, उसकी भी जांच करने का आदेश हमने दे दिया है ....

जारी....श्री मिश्रा

मिश्रा\10-01-2019\d18\02.10-02.15

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय से निवेदन करना चाहूंगा कि जो ओ.डी.एफ. घोषित हुआ है, जिस कलेक्टर ने घोषित किया और वहां शौचालय नहीं बना, उसके विरूद्ध क्या कार्रवाई करेंगे? ये घोषणा करेंगे?

श्री भूपेश बघेल :- बिल्कुल, बिल्कुल।

श्री मनोज मंडावी :- जो पीछे बैठे हैं उनके ऊपर पहले कार्रवाई हो।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, ओ.डी.एफ. जिस कलेक्टर ने घोषित किया है और नहीं हुआ है तो उसके खिलाफ कार्रवाई होगी। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर :- आप कार्यवाही कीजिए, बिल्कुल कीजिए। ओ.डी.एफ. घोषित करने का अधिकार कलेक्टर को नहीं है।

एक माननीय सदस्य :- माननीय चन्द्राकर जी, बी.पी., शुगर चेक करा लेंगे।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, मामला फंस गया लगता है। ये हमेशा बचाने के लिए यही पेंच फंसाने का काम करते हैं। कलेक्टर को बचाने में लगे हुए हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- जरूर जांच करिये और जल्दी करना है तो उसके लिए एस.आई.टी. बनाईये।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, आपको बहुत चिन्ता है। एस.आई.टी. से इतना घबराते क्यों हो? आखिरी बात- हमने ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए चूंकि बहुत सारे लोग चिन्तित हैं कि ऋण माफी से किसानों का क्या भला होगा। एक बार रिलीफ मिल जायेगा तो उससे क्या होगा? लेकिन उसके साथ-साथ 2500 रूपये क्विंटल में खरीदने का भी फैसला किया। इसके साथ ही जो ग्रामीण व्यवस्था है, आप गाय की बहुत चिन्ता करते हैं। आप गौशाला बना दिये, गौशालाओं के लिए खूब पैसा बांटे, खूब भ्रष्टाचार हुआ, यहां तक कि मरी हुई गाय के चमड़े, हड्डियां, उसके गोस्त सबको आपके नेताओं ने बेंच खाया। गऊ की बहुत चिन्ता कर रहे हैं। (शेम-शेम की आवाज) अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में हमारा जो नारा है -

छत्तीसगढ़ के चार चिन्हारी
नरवा-गरवा-घुरवा-बारी,
येला बचाना हे संगवारी,

इसके लिए भी हम कार्ययोजना बना रहे हैं। गांव को व्यवस्थित करना है, उसकी अर्थव्यवस्था सुधारना है। खेतों के लिए पानी, मवेशी के लिए चारा और उसकी सुरक्षा। खेत को घेरने की जरूरत नहीं, आपके जो गौठान हैं उन्हीं को घेर लीजिए, उसमें शेड बना लीजिए, उसके चारा और पानी की व्यवस्था कर दीजिए तब देखिए कि गांव की स्थिति में क्या सुधार आता है। अध्यक्ष महोदय, ये हमारे 14 फैसले। आप जो 22 दिन का पूछ रहे थे तो रोज नये फैसले और ये केवल फैसले नहीं बल्कि इनका क्रियान्वयन भी हो रहा है। मैं पुन: राज्यपाल महोदया के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए, सदन के सभी सदस्यों ने जिन्होंने इस महत्वपूर्ण अवसर पर अपने बहुमूल्य विचार रखे, उसके लिए उन्हें धन्यवाद देते हुए, विशेष तौर पर अध्यक्ष महोदय, आपको धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कि बहुत शानदार ढ़ंग से आपने सदन को संचालित किया, अवसर दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। धन्यवाद, जयहिन्द।

श्री कुलदीप जुनेजा :- अभी कई सारे और फैसले आयेंगे, आप इंतजार करिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, आपने व्यवस्था दी थी कि हमारे संशोधनों और धन्यवाद प्रस्ताव पर साथ-साथ चर्चा होगी। ये संशोधन की किताब है। माननीय मुख्यमंत्री जी के भाषण में हमारे संशोधनों पर एक भी लाईन बात नहीं हुई, इसलिए इस भाषण को जिसमें अपनी पीठ थपथपाई गई उसे क्या कहा जाए? संशोधनों पर चर्चा होती तब हम कहते कि पूरी चर्चा हुई। संशोधन पर आपने एक लाईन बात नहीं की।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, संशोधन में है कि नक्सलवाद के बारे में कुछ नहीं कहा गया, मैंने इसका जवाब दे दिया। चिटफंड कंपनी के बारे में कहा गया है मैंने उसके बारे में जवाब दे दिया।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने संशोधनों में व्यवस्था दी है कि उसके साथ-साथ चर्चा होगी। या तो आप हमको लिखकर सूचित करिये कि चर्चा में भाग नहीं लेते तो आपके संसोधन में सरकार का ये दृष्टिकोण है। आप अपनी पीठ भर थपथपा रहे थे। आपने सब किया मान लिये लेकिन असली चीज पर जिस पर व्यवस्था आई थी उस पर तो कुछ बोले नहीं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अभी प्रस्ताव आयेगा, इतनी हड़बड़ी में क्यों हो?

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय,

सवाल जहर का नहीं था, वह तो मैं पी गया।
तकलीफें कुछ लोगों को तब हुई जब मैं जी गया।।

श्री प्रमेश

प्रमेश\10-01-2019\d19\02.15-02.20

अध्यक्ष महोदय:- मैं समझता हूं कि माननीय राज्यपाल महोदया, के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव में जितने संशोधन प्रस्तुत किये गये हैं उन पर एक साथ मत ले लिया जाए।

प्रश्न यह है कि जो माननीय सदस्य इस संशोधन के पक्ष में हो वो कृपया हां कहे।

(सत्ता पक्ष के सदस्यों द्वारा हां कहा गया)

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय सत्ता पक्ष के लोग संशोधन के पक्ष में हां कह रहे हैं लगता है ठीक से ट्रेनिंग नहीं हुई है।

अध्यक्ष महोदय :- समस्त संशोधन अस्वीकृत हुए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सामान्यत: एक परंपरा रही है कि हम जो संशोधन देते हैं उन संशोधनों का प्रस्ताव सरकार की तरफ से, मंत्रियों की तरफ से मिलता है परंतु एक भी मंत्री ने हमें संशोधनों के ऊपर में जवाब नहीं दिया है और वो जवाब हमें सामान्यत: देना चाहिए। हम चाहेंगे कि आपका निर्देश हो जाए कि उन संशोधनों के जवाब मंत्रीगण हमें उपलब्ध करवायें।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि माननीय राज्यपाल महोदया, ने जो अभिभाषण दिया है। उसके लिए छत्तीसगढ़ विधानसभा के इस सत्र में संवेद सदस्यगण कृतज्ञ हैं।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

(मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि छत्तीसगढ़ राजिम कुंभ कल्प मेला संशोधन विधेयक 2019 को प्रवर समिति को सौंपा जाए।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- इतने जल्दी में क्यों हो, इतनी हड़बड़ी क्या है।

श्री अजय चंद्राकर :- मैंने लिख के दिया है वो सवाल ही पैदा नहीं होता।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे इस प्रस्ताव के प्रस्तुत करने पर आपत्ति है। हमारी नियम प्रक्रिया के अध्याय 5 में विधेयक पुनर्स्थापना और प्रकाशन के संबंध में.....।

श्री अजय चंद्राकर :- काहे हड़बड़ा रहे हो आप चर्चा तो पूरी होनी है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उनको भी मौका नहीं है, अभी मौका हमको पहले है। हमारी इस पर आपत्ति है। प्रस्ताव आने के पहले ही आपत्ति है। आप नियम पढ़िए।

श्री अमितेश शुक्ल :- बृज भाई ज्यादा चिंता मत कीजिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस प्रस्ताव की जो पुनर्स्थापना है, वही पूरी तरह गलत हुई है। इसमें लिखा गया है कि अध्याय 5 के विधान विधेयक पुनर्स्थापना प्रकाशन नियम 23 के 2 में इस निर्दे के अधीन नियम को पुनर्स्थापित करने की अनुमति के लिए प्रस्ताव की सूचना देने की अवधि 7 दिन की होगी जबकि ये जो प्रस्ताव है वो 7 दिन के बजाय आज ही प्रस्तुत किया गया है। इसके बारे में दूसरा यहां के विधानसभा का निर्णय है कि पुनर्स्थापना के लिए कोई विधेयक किसी दिन की कार्यसूची में तब तक सम्मिलित नहीं किया जाएगा जब तक उसकी प्रतियां उस दिन से जब विधेयक पुनर्स्थापित या आसित हो। कम से कम दो दिन पूर्व सदस्यों के उपयोग के लिए सूचना कार्यालय में उपलब्ध न करा दी गई हो। अब मैं आपसे ये चाहता हूं कि आपको नियमों को शिथिल करने का अधिकार है परंतु जब वो अधिकार जब आवश्यक हो। इसमें ये भी है कि जब पुनर्स्थापना के बाद नियमों में इस बात का उल्लेख है, पुनर्स्थापना के बाद इस विधेयक का प्रकाशन हमारे राजपत्र में होना चाहिए। अगर आज ही पुनर्स्थापना होगी, आज ही इसके ऊपर में विचारण होगा, आप ही पालन होगा तो राजपत्र में प्रकाशित कहां हुआ। जब तक राजपत्र में प्रकाशित नहीं होगा तब तक इसके ऊपर में विचार

अशासकीय/प्रकाशन के लिए नहीं

नहीं किया जा सकता। दो दिन पहले इसकी सूचना देनी चाहिए। हमें अधिकार है मैं आपको और पढ़कर बता देता हूं। आप मेरी पूरी बात सुनिये।

अध्यक्ष महोदय:- एक मिनट, आप नहीं आये थे क्या उस समय। उस समय आप यहां नहीं थे। जब मैंने नियमों को शिथिल करके पुनर्स्थापित करने की अनुमति दिया था।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप मेरी पूरी बात सुनिये न।

अध्यक्ष महोदय:- नहीं,नहीं मैं नहीं सुनूंगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपको सुनना पड़ेगा।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ शिवकुमार डहरिया) :- आप आये नहीं थे, आप आये नहीं थे।

अध्यक्ष महोदय:- हमने उस समय नियमों को शिथिल करके पुनर्स्थापित के लिए दे दिये। हम नियम को शिथिल करके .....।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप मेरी आपत्तियों को खारिज कर दीजिएगा। मुझे आपत्ति नहीं है परंतु आप मेरी बात सुन लें। पहले मेरी बात हो जाने दीजिए। मैं ये जानना चाहता हूं कि इस विधेयक को पुनर्स्थापित करने की उपयोगिता इतनी जल्दबाजी क्या है कि इसको उसी दिन प्रस्तुत कर उसी दिन पालन करवाना आवश्यक है। ऐसा कौन सा पहाड़ टूट रहा है। ये अगर पारित नहीं होगा तो पूरे छत्तीसगढ़ में बवाल मच जाएगा। पूरे छत्तीसगढ़ में अव्यवस्था हो जाएगी। आप अध्यक्ष जी अगर नियमों को शिथिल करते हैं तो नियम शिथिल उन्हीं परिस्थितियों में होना चाहिए, जब वो बहुत आवश्यक हो।

श्रीमती सविता

सविता\10-01-2019\e10\02.20-02.25

अध्यक्ष महोदय :- नियम को शिथिल पहले किया जा चुका है, उस समय आपको आपत्ति करनी थी ?त

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं उसी में आपत्ति ले रहा हूं।

श्री रविन्द्र चौबे :- वह समय निकल गया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अभी भी आपत्ति ले सकते हैं। मैं आपत्ति ले रहा हूँ।(व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय,जिस समय विधेयक पुर: स्थापित किया गया, उस समय आपत्ति लेना था। समय चला गया। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसकी पुर: स्थापना गलत हुई है इसलिए इसके ऊपर में विचार नहीं किया जा सकता, इसकी पुर: स्थापना ही पूरी तरह गलत है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मिनट। ये बेहद विद्वान सदस्य हैं और आपने जैसा कहा कि जिस समय पुर: स्थापित हुआ, शायद उस समय आपत्ति करते तो गुण दोष में बात होती। आपने, आसंदी ने नियम शिथिल करते हुए, यहां पुर: स्थापन कर दिया और आज ये पहली बार नहीं हुआ, यहां ये परम्पराएं रही हैं और पहले भी कभी कई बार आपके समय भी हुआ और अनेक बार हुआ। आपने कहा कि आज बहुत ऐसा पारित हो जाएगा तो क्या जल्दी थी ? और हो ही जाएगा तो क्या देरी थी ? और आपने अगर पुर: स्थापन के समय आपत्ति की होती और इसमें प्रावधान है इसमें नियम 65 में लिखा हुआ है कि विधेयक जब पुर: स्थापित किया जाए, उसी समय अगर आप आपत्ति करते तो शायद इसके गुण दोष में विचार होता। अब माननीय मंत्री जी जब पुर: स्थापित कर चुके हैं कि विचार किया जाए, विचार किया जाए में आ जाए, उसके बाद आप अपनी बात कह लें। लेकिन अगर आप पुर: स्थापन के समय अपनी आपत्ति नहीं कर पाये और आसंदी ने अनुमति दी, इसलिए चूंकि आसंदी माननीय मंत्री जी को पुर: स्थापित करने की अनुमति दे चुकी है इसलिए विचार प्रारंभ होना चाहिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप मेरी बात पहले सुन लें। आप जो निर्णय करेंगे, वह हमें मान्य होगा। आप मेरी बात सुन लें। क्योंकि इस विधेयक में, विधेयक के साथ वित्तीय ज्ञापन होगा, जिसमें व्यय अंतरग्रस्त होने वाले खण्डों की विशेषतया ध्यान दिलाया जाएगा और उसमें उस आवर्तक या अनावर्तक व्यय का भी प्राक्कलन दिया जायेगा, जो विधेयक के विधि के रूप में पारित होने की व्यवस्था के अंतर्गत हो, इसका उल्लेख क्योंकि राजिम कुम्भ के लिए बजट में व्यवस्था की गई है इसमें व्यय का उल्लेख है उसको मोटे अक्षरों में अलग से उल्लेख करना चाहिए, यह उल्लेख भी इस विधेयक में नहीं किया गया है।

श्री अमितेश शुक्ल :- आपने व्यय का उल्लेख तो अपने जवाब में 5 सालों में नहीं दिया। मैं तो लगातार खड़े होकर पूछता था।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपको समझ में नहीं आएगा।

श्री अमितेश शुक्ल :-सब समझ में आएगा। मैं 5 सालों तक चिल्लाया हूँ। आज आप जहां खड़े हैं मैं वहां चिल्लाता था। आपके भ्रष्टाचारों से राज्य पूरा परेशान हो गया था। मुझे सब समझ में आता है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन में नियम, कायदे, कानून की बात बहुत कम होती है। अगर हम यहां पर इस बात को कह रहे हैं तो आपको सुनना चाहिए, आपको समझना चाहिए और उसके आधार पर आप जो निर्णय देंगे, हमें मान्य होगा। विधेयक के पुर: स्थापन किये जाने के बाद यथा संभव शीघ्र विधेयक राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जायेगा, यदि वह पहले से प्रकाशित न किया जा चुका हो। अगर ये राजपत्र में प्रकाशित नहीं हुआ, हमें इसमें संशोधन का अधिकार है संशोधन के बारे में भी नियम है कि हमको एक दिन पहले संशोधन देना होगा। आपने उन नियमों को

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

शिथिल नहीं किया, आपको उन नियमों को शिथिल करना चाहिए था कि जो संशोधन देना चाहते हैं, वह संशोधन दे सकते हैं, आज ही संशोधन दे सकते हैं क्या 3 घण्टे के समय में आपने उन नियमों को शिथिल नहीं किया है। क्या आपको संशोधन का अधिकार है ? हमारे संशोधन के अधिकारों को भी छिना जा रहा है। मैं चाहूंगा कि विधान सभा या लोकसभा का सबसे बड़ा अधिकार होता है लेजिसलेशन बनाना, कानून बनाना और कानून के मामले में हम कहीं पर लापरवाही करते हैं, ये उचित नहीं होगा। मैं चाहूंगा कि आप इसके बारे में,क्योंकि बहुत सारी चीजों का इसमें वित्तीय ज्ञापन नहीं दिया गया है, वित्तीय ज्ञापन को मोटे अक्षरों में प्रकाशित नहीं किया गया है, इसको राजपत्र में प्रकाशित नहीं किया गया है। हमको संशोधन की जो सूचना मिलनी चाहिए, वह हमें नहीं दी गई है और इसलिये कृपया आप इसको रोक दें और रोकने के बाद हमारे एक सदस्य ने प्रवर समिति को भेजने के लिए इसमें आवेदन दिया है, उस प्रस्ताव को आप स्वीकार करें। इसके बारे में अगर आप पूरी व्यवस्था दे देंगे तो उसके बाद में इस पर विचार नहीं किया जा सकता, इस संबंध में भी मैं कुछ विषय रखना चाहूंगा। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप उसको भी सुनेंगे।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने कहा कि माननीय सदस्य ने जो आपत्ति की, वह समय बाद, पुरः स्थापित हो चुका है, सदन का वह मेटर हो चुका है पहली बात। दूसरी बात आपने आपत्ति की, वित्तीय ज्ञापन, आपने विधेयक को पूरा प[illegible] ? विधेयक में तो केवल नाम का संशोधन है, क्या है विधेयक में ? इसमें लिखा हुआ है कि छत्तीसगढ़ राजिम कुम्भ (कल्प) मेला है माघी पुन्नी मेला (संशोधन), एक मिनट। आप विद्वान हैं आपने पूरा विधेयक पढ़ा ? इसमें किन वित्तीय व्यवस्थाओं के बारे में बात हुई है ? नामकरण, केवल नाम चेंज, बाकी पुराना विधेयक ऑलरेडी है इसमें आपको वित्तीय ज्ञापन की जरूरत क्यों पड़ रही है .....

जारी श्री चौधरी

चौधरी\10-01-2019\e11\02.25-02.30

पूर्व जारी.. श्री रविन्द्र चौबे :- इसमें आपको वित्तीय ज्ञापन की जरूरत क्यों पड़ रही है? आपने बजट आवंटन किया, वित्तीय व्यवस्थायें की, वह विधेयक का अंग है,ये विधेयक में केवल मूल अधिनियम का संशोधन है। प्रस्तावना में शब्द ''कुंभ (कल्प)'' मेला के स्थान पर शब्द ''माघी पुन्नी मेला'' प्रतिस्थापित किया जाये। केवल एक लाईन का संशोधन है, दूसरी बात और तीसरी बात विचार में आने तो दो। अभी आपने मंत्री जी का नाम पुकारा। आसंदी ने नियमों को शिथिल करके माननीय मंत्री जी को पुर्नस्थापन की अनुमति दी। उन्होंने उसके पश्चात विधानसभा में नियमों के तहत नियम 65- विधेयक के पुर्नस्थापन के बाद का प्रस्ताव के तहत उनको अनुमति दी। नियम- 65 में लिखा हुआ है माननीय मंत्री जी भारसाधक सदस्य उसको प्रस्तुत करेंगे। जब प्रस्तुत हो जाये उसके बाद जो आपने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

प्रस्ताव दिया है उसमें चर्चा हो जायेगी। जरूरत पड़ेगी तो आप सदन में रखेंगे। लेकिन अभी तो आपने विचार करने लिए के रखा। इसलिए मैं आसंदी से अनुरोध करूंगा कि आगे बढ़े।

श्री अजय चन्द्राकर :- आगे नहीं, हम सब चर्चा कर लेंगे, लेकिन जो विषय उठाये गये हैं, उसमें बहस होनी चाहिए।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वह विषय उठाने का समय निकल गया। पुर्नस्थापित करने के समय आपको रोकना था।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस धारा का उल्लेख माननीय बृजमोहन जी ने किया। जब मैं प्रवर समिति के लिए बोलूंगा, तब मैं उस बात को बोलूंगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- हॉ, आप उसको बोलिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं अभी दूसरी चीज बोल रहा हूं।

श्री रविन्द्र चौबे :- वह प्रस्तुत होने के बाद, विचार करने के बाद।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं नियम में बोल रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये मेरी व्यवस्था सुन लीजिए। आपने बहुत कह लिया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी व्यवस्था आने के पहले आप हमारी भी एक बात सुन लें।

अध्यक्ष महोदय :- आप व्यवस्था के पहले व्यवस्था का प्रश्न उठायेंगे ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अध्याय- 10 के विधान, विधेयकों का प्रकाशन तथा पुर:स्थापन की धारा 78 (1) में है- जो सदस्य किसी विधेयक में किसी संशोधन का प्रस्ताव करना चाहे वह, उस दिन के विधेयक पर विचार किया जाना हो, उस दिन से एक दिन पूर्व अपने विचार की सूचना देगा, और वह जिस संशोधन का प्रस्ताव करना चाहता है, उसकी एक प्रति सूचना के साथ प्रस्तुत करेगा। अगर विधेयक आज ही प्रस्तुत हुआ है तो हम एक दिन पहले कैसे संशोधन की सूचना देंगे ? आपने उसमें किसी प्रकार की कोई तिथि नहीं दिया है। कानून बनाना इस सदन की सबसे बड़ी नियम प्रक्रिया है, अगर हम नियम प्रक्रियाओं के उल्लंघन के बारे में बातचीत चर्चा कर रहे हैं तो मैं चाहूंगा कि इस बात को आपको पूरा सुनना भी चाहिए और सुनने के बाद में आपका जो निर्णय होगा वह हमको शिरोधार्य होगा। परन्तु अगर हमको एक दिन पहले संशोधन की सूचना देना है। आपने इसको पुर्नस्थापित करने के लिए तैयार किया, उसको मैंने पढ़ लिया, आपके आदेश को भी पढ़ लिया है। परन्तु उसमें आपने ये नहीं कहा है कि जो संशोधन देना चाहते हैं, जो प्रवर समिति को भेजना चाहते हैं वह आज ही दो बजे, तीन बजे तक सूचना दे दें। आपने ये संशोधन नहीं किया। जब आपने ही संशोधन नहीं किया तो हमें संशोधन की सूचना या प्रवर समिति को भेजने की सूचना एक दिन पूर्व देनी है और आज ये विधेयक प्रस्तुत होगा तो हमारे इस अधिकार का यह हनन होगा। इसलिए मैं चाहूंगा कि इसकी कोई

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

आवश्यकता नहीं है, आपको इसको स्थगित करके अगले दिन के लिए इसको करना चाहिए।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये विधेयक पहले आलरेडी सर्कुलेट हो चुका है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप ये बताईये कि सर्कुलेट कितने दिन पहले होना चाहिए ?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- सर्कुलेट दो दिन पहले होना चाहिए। उसके बाद माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने चर्चा आगे बढ़ा दी तो अब पीछे नहीं लौटाया जा सकता है। हम पीछे लौट नहीं सकते हैं। कार्यवाही आगे बढ़ गई है तो पीछे लौटने का सवाल ही नहीं है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम विचार पर आपत्ति कर रहे हैं, जो विचार के लिए आप स्थापना करना चाहते हैं, वह स्थापना गैर कानूनी, गैर जरूरी है। उतना आवश्यक नहीं है, इसलिए इसका पुनर्विचार आप आने वाले सत्र में करवा लें। आप सत्र स्थगित कर रहे हैं तो आने वाले सत्र में करवा लें।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, जो विषय आपने आगे बढ़ा दिया, उसे पीछे नही लौटाया जा सकता है।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- जो प्रक्रियायें हैं, वह नियम शिथिल करने के पहले का है और नियम शिथिल करने के बाद इन प्रक्रियाओं की कोई जरूरत नहीं है।

श्री अमितेश शुक्ल :- हमारे शंकराचार्य जी ने बोला है कि कुंभ नहीं है, महामंडलेश्वर को शंकराचार्य जी की तो बात माननी चाहिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको और जानकारी देता हूं। इसी किताब के विधेयकों के पारण तथा प्रमाणीकरण में यदि कोई विधेयक में संशोधन किया गया गया हो तो भी सदस्य ऐसे प्रस्ताव कि विधेयक पारित किया जाये के उस दिन किये जाने पर आपत्ति कर सकेगा। यह हमें आपत्ति करने का अधिकार है। हम इसके ऊपर में आपत्ति ले रहे हैं।

श्रीमती नीर

नीरमणी\10-01-2019\e12\02.30-02.35

जारी......श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह हमें आपत्ति करने का अधिकार है और हम इसके ऊपर में आपत्ति ले रहे हैं । (व्यवधान)

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- आपने आपत्ति नहीं की जब संशोधन लाया गया है । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम इसी विधानसभा के द्वारा... (व्यवधान)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अध्यक्ष जी, आपने विधेयक प्रस्तुत करने की अनुमति दी । माननीय मंत्री विधेयक प्रस्तुत करें सीधी सी बात है । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सत्यनारायण जी, आप तो वरिष्ठ हैं । आप संसदीय कार्यमंत्री रहे हैं । मैं विधानसभा की नियम-प्रक्रिया पढ़कर बोल रहा हूं । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- आपको इतनी जल्दी क्या है पारित करवाने की ? समय बहुत है, जो तथ्य आ रहे हैं उसको पूरा सुनिये । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मैंने आपकी बात सुन ली । (व्यवधान)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- क्यों नहीं कर सकते ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सत्तू भैया जो कहें वही सही । (व्यवधान)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- बिल्कुल वह सही । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- सदन नियम-प्रक्रियाओं के तहत् चलता है ।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने आपकी पूरी बात सुन ली । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने आज इस संशोधन विधेयक को प्रस्तुत किया है इसके पहले इसी विषय को लेकर के हमने विशेषाधिकार हनन का प्रस्ताव दिया है जो आपके पास विचाराधीन है । राजिम कुंभ कल्प और जब तक उसमें इन्होंने सदन के बार घोषणा की कि अब उसका नाम राजिम पुन्नी मेला होगा । (व्यवधान) उस विषय से रिलेटेड है । हमारे विशेषाधिकार हनन के प्रस्ताव पर आपका निर्णय आ जाये । आपका निर्णय आने के पश्चात् ही इस विधेयक पर चर्चा हो तो ज्यादा अच्छा होगा । इसी विषय से संबंधित मामला आपके पास विचाराधीन है । यह विधेयक सिर्फ इसलिये प्रस्तुत किया गया है कि विशेषाधिकार हनन का मामला आपके सामने है । (व्यवधान)

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- किया है । उसमें होगी चर्चा ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी, आप वरिष्ठ और अनुभवी हैं । जिस विषय पर विशेषाधिकार हनन का मामला आसंदी के पास लंबित है और उसी विषय से संबंधित आप प्रस्ताव लेकर आ रहे हो खाली इसको ठीक करने के लिये । पहले आसंदी से विशेषाधिकार हनन के मामले में निर्णय आ जाये उसके बाद आप इस पर विचार करें । (व्यवधान) इस पर निर्णय आ जाये । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमारा सत्तापक्ष पर यह आरोप है कि विशेषाधिकार की सूचना को विलोपित करने के लिये अध्यादेश लाया गया है, यह जो विधेयक लाया गया है यह शर्मनाक है । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अमितेश शुक्ल :- आपके समय में कुंभ में बहुत भ्रष्टाचार हुआ है । आप पर हमारा यह आरोप है । (मेजों की थपथपाहट) आपने जरा भी (व्यवधान) नहीं की, हम लोग चिल्लाते रहे । (व्यवधान) आरोप बोलेंगे तो आपके ऊपर आरोप ही आरोप हैं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, आखिर इतनी छटपटाहट क्यों है ?

श्री अजय चंद्राकर :- कहने में क्या छटपटाहट रहेगी । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह भाषण की बात नहीं हो रही है, हम भाषण नहीं दे रहे हैं, हम संविधान की किताब की बात कर रहे हैं । नियम सम्मत बात कर रहे हैं, भाषण नहीं दे रहे हैं ।

अध्यक्षीय व्यवस्था

विधेयक के पुर:स्थापन पर □ पत्ति

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्य इस बात का ख्याल रखें कि आप जिस किताब को पढ़ रहे हैं वो किताब सब जगह है, मेरे पास भी है । इसी तरह से आपत्ति आपने वर्ष 2006 में भी उठायी थी और तत्कालीन अध्यक्ष ने जो व्यवस्था दी थी, पुर:स्थापन के समय कोई आपत्ति नहीं आयी है अब विचार के प्रस्ताव के समय आपत्ति स्वीकार योग्य नहीं है इसलिये आपकी सब आपत्ति अस्वीकार करता हूं । (मेजों की थपथपाहट) (व्यवधान)

समय :
2:33 बजे

शासकीय विधि विषयक कार्य

छत्तीसगढ़ राजिम कुंभ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019

धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि छत्तीसगढ़ राजिम कुंभ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) पर विचार किया जाये । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपकी व्यवस्था शिरोधार्य है, परंतु हमारा इस पर विचारण किये जाने पर आपत्ति है । (व्यवधान) विचारण किये जाने के ऊपर हमारी आपत्ति है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, आप बोलिये ।

श्री अजय चंद्राकर :- पूरी बात सुनी जानी चाहिए । (व्यवधान) या तो फिर बिना चर्चा के बहुमत का इस्तेमाल कर लें ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजिम कुंभ कल्प मेला विधेयक जो हमने प्रस्तुत किया है । (व्यवधान) उसके विषय में मैं आपके सामने कुछ चर्चा करना चाहता हूं ।(व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- बिना चर्चा के आप बहुमत से पारित कर लीजिये।(व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय सदस्य ने जो बिंदु उठाये हैं उसकी भी जानकारी मैं सदन को देना चाहता हूं । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 5 बिंदु उठाये हैं । आप बाकी बिंदुओं पर भी व्यवस्था दे दें कि संशोधन का अधिकार है । संशोधन के अधिकार का उपयोग हम नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि आपने संशोधन की सूचना देने के लिये हमें समय नहीं दिया और इसलिये इसके ऊपर में विचार नहीं किया जा सकता । (व्यवधान)

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह विधेयक जो प्रस्तुत किया गया है वह कोई जल्दबाजी की बात नहीं है, कोई मंशा को लेकर बात नहीं है, किसी के विरोध की बात नहीं है । इसमें हम लोगों ने ऐतिहासिक महत्व को ध्यान में रखा है । (व्यवधान) धार्मिक शास्त्रों में जो है उसको भी ध्यान में रखा है । छत्तीसगढ़ की संस्कृति को भी ध्यान में रखा है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज तो आपने प्रस्तुत किया है और विशेषाधिकार हनन..........जारी

.......श्री कुरैशी

कुरैशी\10-01-2019\e13\02.35-02.40

श्री शिवरतन शर्मा :- आज तो आपने प्रस्तुत किया है और विशेषाधिकार हनन के प्रस्ताव से बच गए । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको संशोधन के लिए तो समय का निर्धारण करना चाहिए ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- आदरणीय, मैं खड़ा हूं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अरे आदरणीय, हम भी उसी विषय पर बोलने के लिए खड़े हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, पहले हमारे संशोधन पर व्यवस्था आनी चाहिए ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- छत्तीसगढ़ की संस्कृति को भी ध्यान में रखा है । इस विधेयक को हम लोगों ने प्रस्तुत किया है । मैं सदन के सामने कुछ बातें लाना चाहता हूं । छत्तीसगढ़ मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम का ननिहाल है । ऐसी मान्यता है कि आदिकाल में भगवान राम छत्तीसगढ़ की पावन धरती पर (व्यवधान) समस्त छत्तीसगढ़ के निवासियों को गर्व है । छत्तीसगढ़ की धार्मिक नगरी राजिम विशेष महत्व रखने वाला एक छोटा सा शहर, गरियाबंद की एक तहसील है । राजिम मुख्य रूप से भगवान राजीव लोचन के मंदिर के कारण प्रसिद्ध है । यह मंदिर आठवीं शताब्दी का है । यहां कुलेश्वर महादेव जी का मंदिर है । शास्त्रों में केवल चार कुंभ का उल्लेख है । जो इस प्रकार है - प्रयागराज इलाहाबाद, उज्जैन, नासिक तथा हरिद्वार में प्रत्येक चार वर्ष के अंतराल में कुंभ पर्व वृहद स्वरूप में आयोजित किया जाता है । इसके अतिरिक्त भारतवर्ष में कहीं भी मान्यता प्राप्त पांचवा कुंभ नहीं है । मात्र तीन नदियों के संगम से कोई स्थान .....(व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी, इस पर माननीय नेता प्रतिपक्ष जी कुछ कहना चाहते हैं । इसलिए बैठिये ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सदस्य, हमारे वरिष्ठ सदस्य हैं, संसदीय कार्यमंत्री रहे हैं । सदन नियम, कायदे और परम्पराओं से चलाते हैं । इस बिल पर पांच कंडिकाएं आपके समक्ष विचार के लिए रखी गई हैं । आसंदी के द्वारा एक पर निर्णय दिया गया । हम चाहते हैं कि चर्चा के पूर्व शेष बचे हुए संशोधन के लिए आसंदी से निर्णय आ जाए । हमें उस पर संशोधन के लिए समय दिया जाय ताकि हम अपनी बात कह सकें । उसके बाद उस पर चर्चा प्रारंभ हो तो मुझे लगता है कि ज्यादा अच्छा है । मैं आपसे यही आग्रह करता हूं ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :-माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय बृजमोहन जी ने, अजय जी ने, शिवरतन जी ने अपनी बातें कही । संसदीय कार्यमंत्री एवं आदरणीय सत्यनारायण जी ने भी अपने विचार रखे । उसके बाद आसंदी से व्यवस्था आ गई । उसके बाद आपने भारसाधक सदस्य को प्रस्ताव पर विचार करने के लिए आमंत्रित किया । तब तक नेता प्रतिपक्ष जी चुपचाप बैठे रहे । जब फिर से बृजमोहन जी ने बात कही उसके बाद नेता प्रतिपक्ष खड़े हुए, तब तक मंत्री जी ने आधी से ज्यादा अपनी बात कह चुके थे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप कभी भी पढ़वा सकते हैं साहब । कानून बनाने के लिए आपको इतनी जल्दबाजी क्यों है ?

श्री भूपेश बघेल :-आसंदी ने उन्हें अपनी बात रखने की अनुमति दी । उसके बाद बीच में खड़े होकर आप पुरानी आपत्ति कर रहे हैं । जो व्यवस्था आसंदी से आ चुकी है, हमें उसका सम्मान करना चाहिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आसंदी की व्यवस्था का पूरा सम्मान है । लेकिन हमारा आग्रह करने का अधिकार है और करेंगे । हमको आग्रह करने का अधिकार है। हम कहीं नियम का उल्लंघन नहीं कर रहे हैं । हम कहना चाहेंगे कि आप इसमें अनुमति दीजिए । ज़ोर जबदरस्ती से करा लेना, बहुमत से करा लेना अलग बात है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, यह सदन कानून बनाने का सदन है। यह जो विधेयक आया है, यह कानून बनेगा और अगर कानून के ऊपर इस सदन में ठीक से चर्चा नहीं होगी ।

श्री कवासी लखमा :- मैं भी इस सदन में 20 साल से बैठा हूं । थोड़ा आसंदी का सम्मान भी तो करना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय:- माननीय मंत्री जी, आप बैठें ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैंने 5 बिंदुओं पर आपत्ति की है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी ने अपने प्रस्ताव पर विचार करना शुरू कर दिया था । मैंने नेता प्रतिपक्ष का सम्मान करने के लिए उनकी बात सुनी है । आपकी व्यवस्था दी जा चुकी है । माननीय मंत्री जी अपनी बात कहें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपकी व्यवस्था शिरोधार्य है । आपने व्यवस्था दी कि पुर:स्थापित करके, आप आपत्ति नहीं कर सकते । मेरी बाकी आपत्ति पर विचार करें । (व्यवधान)

श्री ताम्रध्वज साहू :- मात्र तीन नदियों के संगम से किसी स्थान को कुंभ नहीं माना जा सकता । पूर्व में शंकराचार्य जी द्वारा दी गई व्यवस्था के उपरांत राजिम कुंभ के स्थान पर, राजिम कुंभ कल्प वर्ष 2017 से प्रतिवर्ष माघी पूर्णिमा से महाशिवरात्रि तक 15 दिवस तक मनाया जाता रहा है । कल्प का शाब्दिक अर्थ पूर्ण या वास्तविक न होने पर भी बहुत कुछ किसी दूसरे के बराबरी का या समान हो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- ये अपनी संस्कृति के बारे में देखकर पढ़ रहे हैं । ये धार्मिक कानून बना रहे हैं, ये देखकर पढ़ रहे हैं पुन्नी मेला के बारे में ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- अजय जी, मैं आपसे ज्यादा जानता हूं यह आखिरी में प्रमाणित करूंगा । (मेजो की थपथपाहट) मैं आपसे ज्यादा जानता हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- इसीलिए देखकर पढ़ रहे हो । ....

--- श्री ठाकुर -

ठाकुर\10-01-2019\e14\02.40-02.45

श्री अजय चंद्राकर : - इसीलिए इतनी जल्दबाजी कर रहे हो।

श्री ताम्रध्वज साहू : - जोर से चिल्लाके या बहस करने से कोई काम बनता नहीं। मेरी बात सुन लें, उसके बाद आप जितना कहना चाहेंगे, कह लेंगे।

श्री अमितेश शुक्ल : - अजय जी, जब से आपका जन्म नहीं हुआ न तब से वो राजिम पुन्नी मेला जा रहे हैं।

श्री ताम्रध्वज साहू : - यही बात मैं कहने वाला था पर माननीय सदन के नेता ने कह दिये हैं।

श्री शिवरतन शर्मा : - नहीं, पर नेता जी संशोधन की इतनी हड़बड़ी क्या है? वो बताओं न।

श्री ताम्रध्वज साहू : - अरे, वो बताऊंगा न, सुनने का साहस रखो और बैठो पूरी बात सुन लो। साहस है तो शांत रहें। मैं 110 साल पुरानी बात का भी उल्लेख करूंगा आप शांत बैठे।

श्री अजय चंद्राकर : - 1000 साल पुरानी बात भी बताएंगे।

श्री ताम्रध्वज साहू : - उसको तो आप समझ ही नहीं पाओगे 1000 साल पुरानी को तो कहने का कोई फायदा नहीं होगा। प्रतिष्ठित संतों द्वारा दी गई व्यवस्था द्वारा राजिम कुंभ कल्प मेला का नाम परिवर्तन कर राजिम माघी पुन्नी मेला किया जाना उचित प्रतीत होता है। अत: राजिम कुंभ कल्प मेला के स्थान पर राजिम माघी पुन्नी मेला प्रतिस्थापित किया जाना उचित होगा। छत्तीसगढ़ में प्राचीनकाल

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

से नदियों के किनारे माघ पूर्णिमा के अवसर पर आध्यात्मिक, सांस्कृतिक मनोरंजक तथा ग्रामीण परिवेश से परिपूर्ण मेले की परंपरा रही है। खाली राजिम की बात नहीं, जहां भी शिवरात्रि होता है भगवान शंकर जी का मंदिर है वहां सब माघी पूर्णिमा छोटे जगह बड़े जगहों में भी होता है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति से जुड़े इन मेलों को पून्नी मेला कहा जाता है। युगों-युगों से राजिम आध्यात्मिक, धार्मिक पुण्य भूमि रही है। इसलिए प्रतिवर्ष यहां आयोजित किये जाने वाले राजिम कुंभ कल्प मेला का नाम परिवर्तित कर राजिम माघी पुन्नी मेला करने से छत्तीसगढ़ की संस्कृति, परंपराएं ज्यादा मजबूत होंगी। माननीय अध्यक्ष जी, मैं छोटा था। अब अजय जी को बता देता हूं हमारे आसपास अगर आप जानते हैं मैं जब छोटा था तब से राजिम मेला जा रहा हूं और पुरानी परंपरा रही है राजिम मेले की। आसपास के जितने मालगुजारी परिवार हैं गाड़ी बैला में क्विंटल दर क्विंटल चावल लेकर वहां जाया करते थे और पूरा मेला लगता था। भंडारा लगता था। अंचल के लोग वहां आकर खाना खाते थे। ये परंपरा रही है। जब आप पैदा नहीं हुए थे तब मैं वहां जाता था। (मेजों की थपथपाहट) उसके बाद आदरणीय राजिम पुन्नी मेला के नाम से छत्तीसगढ़ी भाषा संस्कृति का बोध होता है। राजिम कुंभ कल्प के नाम पर देश के बड़े संतों ने भी आपत्ति ली है तथा उन्होंने ध्यानाकर्षण किया है कि प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले राजिम कुंभ नाम व प्राचीन कुंभों के नाम में समरूपता के कारण भ्रम उत्पन्न होता है अत: राजिम कुंभ कल्प मेला का नाम परिवर्तन कर राजिम माघी पुन्नी मेला किया जाना उचित प्रतीत होता है। अब मैं गजेटियर का एक हवाला देकर बताना चाहूंगा सम्माननीय अध्यक्ष जी। पुराने जब भी कोई विवादास्पद बात होती है ये गजेटियर है,1909 में लिखा गया है । अब 2019 है। 110 साल पुरानी ये गजेटियर है। ये गजेटियर ऑफ इंडिया मध्यप्रदेश रायपुर डिस्ट्रीक्ट, उस समय रायपुर डिस्ट्रीक्ट हुआ करता था और इसको लिखने वाला है और इसमें जो दिया गया है वो मैं आपको पढ़कर बता देता हूं राजिम पुन्नी के विषय में एज एन्वल इज हेल्ड एट राजिम एंड लास्ट फॉर अ मंथ फ्रॉम माघ सुदी एट टू फागून सुदी पूनम। पुन्नी को उन लोग पूनम लिखे हैं। एट एन्वल फेयर इज हेल्ड इन राजिम एंड लास्ट फॉर अ मंथ फ्रॉम माघ सुदी एट टू फागून सुदी पूनम फब्रुअरी मार्च ये महीने का नाम भी लिखा है। पीपुल कम नॉट वनली फ्रॉम छत्तीसगढ़ डिवीजन बट आलसो फ्रॉम एज फॉर अपहेल्ड एज नागपुर, भंडारा, मंडला, नरसिंहपुर, कटक, एक्स्ट्रा एंड ऑन माघ पूनम फुल मून डे वीच इज द प्रिंसिपल डे एंड ऑन शिवरात्रि द अटेंडेन्स मे बी अबाउट फिफ्टी थाउजेंट। उस समय लोग आते थे।

श्री अजय चंद्राकर : - उससे आप क्या साबित करना चाह रहे हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा : - समझ में आ रहा है या नहीं ये बता दीजिए।

श्री ताम्रध्वज साहू : - मैं साबित कर रहा हूं, मैं बता रहा हूं। द विजिटर बॉथ इन महादेव घाट। अब उसके बाद साबित क्या कर रहा हूं ।

जारी ....श्री अरविंद

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

अरविंद\10-01-2019\e15\02.45-02.50

श्री अजय चन्द्राकर :- उससे आप क्या साबित करना चाहे रहे हैं ?

श्री ताम्रध्वज साहू :- मैं साबित कर रहा हूँ, मैं बता रहा हूँ न।

श्री मनोज सिंह मण्डावी :- समझ में आ रहा है कि नहीं आ रहा है ?

श्री ताम्रध्वज साहू :- मैं साबित कर रहा हूँ। the visitors bath in mahadev ghat. अब उसके बाद साबित क्या कर रहा हूँ, वह बता रहा हूँ। अभी आप लोगों ने कहा न कि दीवारों पर चित्र बदलने से इतिहास नहीं बदलता। आपने और बृजमोहन जी ने खड़े होकर कहा कि आप लोग नाम बदल रहे हो। आप लोग नाम बदले थे, मैं उसको सही कर रहा हूँ। ठीक है। (मेजों की थपथपाहट) हम नाम नहीं बदल रहे हैं। आपने नाम बदला। ये गजेटियर में दिया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- कानून निरस्त कर दीजिये न। दूसरा कानून क्यों हटा रहे हो, कानून निरस्त कर दीजिये। आपको कानून बनाने के लिए किसने कहा ? निरस्त कर दीजिये। अधिकार है, निरस्तीकरण का ले आईये। आप क्यों दूसरा नाम रख रहे हैं ?

श्री ताम्रध्वज साहू :- मेला चलता था, हम मेला निरस्त नहीं कर रहे हैं। अध्यक्ष जी, सैकड़ों साल से मेला चलते आया है, वह चलता रहेगा। व्यवस्थाओं में कोई कमी नहीं होगी। हम सारा चीज करेंगे। जो उसका वास्तविक नाम था, उसको इन्होंने परिवर्तित किया, हम उसको वास्तविक स्वरूप में ला रहे हैं अध्यक्ष जी। इसके अलावा कुछ नहीं है। नाम परिवर्तन से उस पवित्र स्थल का न कोई महत्व कम नहीं करने जा रहे हैं और न कोई व्यवस्था में कमी करने जा रहे हैं, न कोई धार्मिक भावना को परिवर्तित करने जा रहे हैं। बल्कि हम चाहते हैं कि हमारी छत्तीसगढ़ की संस्कृति के हिसाब से, छत्तीसगढ़ के बोली-भाषा के हिसाब से हमारे राज्य छत्तीसगढ़ में संचालित हों, यह हम लोगों की मान्यता है, इसलिए हम लोग चाहते हैं कि नाम परिवर्तन इसीलिए करने की बात है। इस पर कहीं पर भी किसी की भावना को ठेस पहुंचेगा, न कुछ होगा। इस प्रकार मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि इसका नाम परिवर्तित किया जाये। इसका जो नाम दिया गया है, राजिम मांघी-पुन्नी मेला करने की अनुमति प्रदान की जाये। (मेजों की थपथपाहट)

श्री बृहस्पत सिंह :- छटपटाहट का कारण तो असली था कि बाम्बे से जो गायक लाते थे, ये नहीं आ रहा है, इसलिए छटपटा रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ कि छत्तीसगढ़ राजिम कुंभ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) पर विचार किया जाए।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि छत्तीसगढ़ राजिम कुंभ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) पर विचार किया जाए।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- माननीय चन्द्राकर जी, आपने प्रवर समिति को सौपे जाने का कहा है, उस सम्बन्ध में क्या कहना चाहते हैं, कहिये।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने इस विधेयक पर बोलने के लिए भी नाम दिया है। माननीय ताम्रध्वज जी साहू, वरिष्ठ मंत्री जी ने जो कहा है, उस पर अपनी बात रखूंगा। लेकिन प्रवर समिति के बारे में मेरी राय यह है कि छत्तीसगढ़ में ऐसी कौन सी स्थिति बन गई, ऐसे कौन से कारण बन गए, ऐसी क्या सांस्कृतिक गतिविधियां घट गईं, छत्तीसगढ़ की महान सांस्कृतिक परम्पराओं में ऐसे क्या प्रश्नचिन्ह खड़े हो गए, जिसके कारण इसका नाम परिवर्तन करना अत्यावश्यक हो गया। अत्यावश्यक उस स्थिति में हो गया, जबकि उसमें आपकी व्यवस्था सुरक्षित है। क्या उन्होंने सदन की अवमानना की ? सदन की अवमानना के बाद हमारे प्रिवलेज नोटिस के लिए उस प्रभाव से एक मंत्री को मुक्त करने के लिए दो दिन एक विषय में कैबिनेट की बैठक सिर्फ एक मुद्दे पर हुई। ऐसी कौन सी महत्वपूर्ण चीजें थीं, जिसमें आपके प्रिवलेज का इस्तेमाल किया गया इसके लिए, और संशोधन से लेकर सारी चीजों में सारी परम्पराएं ताक में रखी गई। माननीय अध्यक्ष महोदय, जो विद्वान सदस्य माननीय रविन्द्र चौबे जी कह रहे थे, वित्त विधेयक, मैं जो बोलना चाह रहा था। वित्त विधेयक की जरूरत नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- इसको आप अपने भाषण में बोलियेगा न। प्रवर समिति को क्यों सौंपा जाए, यह बताईये।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्यों प्रवर समिति को देना चाहिए, उस पर मैं बोल रहा हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- हां, उस पर बात करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- फिर मैं विधेयक के खण्डों पर बोलूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- फिर भाषण बाद में दीजियेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह मेरा अधिकार है। आपने मुझे बोलने के लिए पुकारा है।

अध्यक्ष महोदय :- पहले प्रस्ताव तो पढ़ लो।

श्री अजय चन्द्राकर :- जी-जी। मैं बोलता हूँ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी, आपसे मेरा हाथ जोड़कर करबद्ध प्रार्थना है कि अगर कानून के सम्बन्ध में कोई विषय चल रहा है तो आप उसमें हड़बड़ी मत करिये।

अध्यक्ष महोदय :- मैं हड़बड़ी नहीं कर रहा हूँ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- विधान सभा का सबसे महत्वपूर्ण विषय है। आपने हमारी आपत्तियों को नहीं सुना। आपने उसका निराकरण नहीं किया। आप इसमें भी हड़बड़ी कर रहे हैं।

श्री कवासी लखमा :- ये परम्परा को तोड़ रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप लोकसभा के सदस्य भी रहे हैं, आप केन्द्रीय मंत्री भी रहे हैं। आप मध्यप्रदेश में मंत्री भी रहे हैं। आप हड़बड़ी में जल्दबाजी में पास मत करवाईये। ....(व्यवधान)

........श्री अग्रवाल

अग्रवाल\10-01-2019\e16\2.50-55

श्री सत्यनारायण शर्मा :- ये गलत बात है, आसंदी पर भी आक्षेप करने की कोशिश की गई है, आसंदी को भी डिक्टेट करने की कोशिश कर रहे हैं ।....(व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ये भगवान के लिए, इस देश के लिए, संविधान के लिए क्यों इतनी हड़बड़ी में पास करवा रहे हैं ? कानून के मामले में इतिहास हमको माफ नहीं करेगा । इतिहास हमको माफ नहीं करेगा कि छत्तीसगढ़ की विधान सभा में किसी कानून को पास करने के लिए इतनीजल्दबाजी की गई । हमको इतिहास माफ नहीं करने वाला है और इसको कानून के मामले में माननीय सदस्य कुछ बोलना चाह रहे हैं, उसको आप सुनें। ....(व्यवधान)

श्री लालजीत सिंह राठिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पुन्नी के मेला मांघ में मनात रिहिन हे, एमन नाम ला बदल दे रिहीन हे, तेकरे बर छत्तीसगढ़ी के नाम पुन्नी के मेला.....।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट बैठो । माननीय अग्रवाल जी, आपने भाषण देने में अपना नाम दिया है, उस समय भी आप इसी तरह से व्यवहार करेंगे, यह मुझे पता है। कम से कम मुझे कानून...।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- विधान सभा में बोलना विवाद नहीं है । इस सदन में हम जो कुछ कहते हैं, अपनी बात कहते हैं, हम विवाद नहीं करते हैं इसलिए आपने जो विवाद शब्द का उपयोग किया, ये उचित नहीं है । मेरी दृष्टि से हम सदन में जो कहते हैं, वह विवाद नहीं करते ।

अध्यक्ष महोदय :- देखिए, विवाद शब्द आपत्तिजनक है ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- इस प्रकार से आप विवाद करेंगे...।

अध्यक्ष महोदय :- विवाद शब्द आपत्तिजनक है क्या ? ....(व्यवधान) मैं खड़ा हूं ....(व्यवधान)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- बृजमोहन जी, आप बेवजह विवाद पैदा कर रहे हैं....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- विवाद शब्द आपत्तिजनक है क्या ? आप विवाद करेंगे बोला ? जब इस पर विवाद होगा....

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वाद-विवाद होगा ।

अध्यक्ष महोदय :- वाद-विवाद होगा तो आप पूरा विवाद करेंगे, वाद तो करते नहीं हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप वाद-विवाद करेंगे, विवाद नहीं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- ये आधा सुनते हैं न । वे वाद-विवाद बोले, आप विवाद करने लग गए ।....(व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- मैं खड़ा हूं, प्लीज ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- रविन्द्र भैया, अध्यक्ष जी ने विवाद कहा, वाद-विवाद नहीं कहा और वे वाद-विवाद कहते तो हम कुछ नहीं कहते ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आप पहला कानून बना रहे हैं, उसमें इतनी हड़बड़ी क्यों है ?

अध्यक्ष महोदय :- हड़बड़ी बिल्कुल नहीं है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके कार्यकाल का पहला कानून है ।

अध्यक्ष महोदय :- कानून बनाने में जिन नियमों का पालन करना है, आपको अपना प्रवर समिति में सौंपने के लिए आप पहले निवेदन तो करो ।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- जी, मैं पढ़ देता हूं । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि छत्तीसगढ़ राजिम कुम्भ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) को प्रवर समिति को सौंपा जाये।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने सारे नियमों को शिथिल कर आपका प्रीविलेज है, आपने अनुमति दी, मैं जानता था कि आज ये प्रस्तुत होगा । मैं बस उपस्थित था, मैं जल्दी में उसको लिखा । मैं पुर्न:स्थापन में आपत्ति लेना चाहता था, ये बात सत्य है, पर मेरे पास उतना समय नहीं था । यह भी उतना ही सत्य है, यह मैं आपके सामने स्वीकारता हूं । दूसरी महत्वपूर्ण बात ये है कि मैं आपकी गरिमा और मुख्यमंत्री जी से, संसदीय कार्यमंत्री जी से यह कहता हूं कि आपकी गरिमा की ऐसी कौन सी राजनीतिक परिस्थिति, राजनीति को छोड़ दीजिए, सांस्कृतिक स्थिति में छत्तीसगढ़ में संकट खड़ा हो गया, हमारी इतिहास, संस्कृति के साथ ऐसी कौन सी महान घटना घट गई, जिसके कारण हमको तुरंत ये संशोधन विधेयक लाना पड़ा । इसके पीछे जो सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है कि इसके लिए आपकी अवमानना हुई, मैं यही मानता हूं, आप स्वीकार करते हैं या नहीं करते हैं, ये आपके ऊपर है कि आपके सामने हमने प्रीवीलेज मोशन किया था कि माननीय मंत्री जी ने अपने अधिकार का दुरूपयोग किया और विधान सभा की और आपकी अवमानना की, उसको देखते हुए दो दिन पहले एक केबिनेट बनाकर एक विषय में और आपको कहा गया कि तत्काल करना है, हम बिल्कुल आपके उस अधिकार के पक्षधर हैं, जब प्रदेश के हित और छत्तीसगढ़ की जनता के हित के लिए ऐसे निर्णय लिये जाते हैं । एक नामकरण के लिए सारी परम्पराएं ध्वस्त की जाएं या उसको परम्परा के तौर पर मान लिया जाए, इसलिए मैंने कहा, बाकी चीजें मैं आगे बोलूंगा, जो माननीय मुख्यमंत्री जी से कहना चाहता था कि कानून, इस विधान सभा का या लेजिस्लेटिव हाऊस का पहला काम है-कानून बनाना। मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि एक नामकरण जैसे छोटे मामले में आपत्तियों को क्यों दरकिनार किया जा रहा है और क्यों सब बोल रहे हैं

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

तो आप पढ़ने के लिए उतावले हैं, मुझे समझ में नहीं आ रहा है । माननीय मुख्यमंत्री जी, यह कानून आपके कार्यकाल का पहला कानून है, इतिहास में आप याद रखे जाएंगे कि आपने पहला कानून कौन सा बनाया है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, तीसरी बात जो मैं आपसे कहना चाहता था। आपने आपत्ति सुनी हो या न सुनी हो, विधेयक में जब यदि वित्तीय पत्रक नहीं लगा है तो भी ये मोटे अक्षरों में लिखा जाता है कि इसमें वित्त विभाग के अभिमत की जरूरत नहीं है, यह विधेयक में लिखा जाता है, वह भी औपचारिकताएं पूरी नहीं की गईं है। अब इन्हीं परिस्थितियों के कारण ये असाधारण स्थितियां क्यों उत्पन्न हुईं ? इसमें जनता की राय ली जाए इसलिए मैंने प्रवर समिति में भेजने के लिए आग्रह किया है । आपसे आग्रह करता हूं कि ये नियमों में है कि आप प्रवर समिति को भेज सकते हैं या चर्चा भी करा सकते हैं । दोनों आपके अधिकार में है । मैं आपको कहना चाहूंगा, ये आग्रह करता हूं कि आप इसको चर्चा कराने की बजाय अपने अधिकार का इस्तेमाल करके प्रवर समिति को भेजने का कष्ट करें ।

जारी श्री श्रीवास

श्रीवास\10-01-2019\e17\02.55-02.60

जारी...श्री अजय चन्द्राकर :- मैं आपसे कहना चाहता हूँ, आग्रह करता हूँ कि इसको चर्चा करने के बजाय अपने अधिकार का इस्तेमाल करके प्रवर समिति को भेजने का कष्ट करें ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- सिलेक्ट कमेटी को भेजने के लिए आपने प्रस्ताव रखा । इतनी चिन्ता क्यों है....

श्री अजय चन्द्राकर :- हम जानना चाहते हैं कि इतनी हड़बड़ी क्यों है ? इसमें जनता का राय लें । नाम परिवर्तन के लिए सारे नियम शिथिल किये जा रहे हैं ।

श्री धनेन्द्र साहू :- आपने नाम परिवर्तन किया तो जनता का राय लिया था क्या ? जब आपने राजिम माघी पुन्नी मेला को कुंभ मेला नाम लिया तो जनता की राय लिया था क्या ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आप इसीलिए कर रहे हैं क्या ? उत्तर दीजिए, हम इसीलिए कर रहे हैं करके ?

श्री मनोज मण्डावी :- अपने पूर्वज को, अपनी संस्कृति को, अपने परम्परा को, दफनाने की जब बात करते हो, अनुमति लिये थे क्या ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कानून बनाने में इतनी हड़बड़ी, इतने विद्वान संसदीय कार्यमंत्री क्यों हड़बड़ा रहे हैं, मुझको समझ में नहीं आता ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- कुंभ का नामकरण, केवल माघी पुन्नी मेला लिखने में आप इतना परेशान क्यों हो रहे हैं.....।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप क्यों परेशान है, मैं यह जानना चाहता हूँ । आप उसमें बोलिये, हमारी परेशानी में मत बोलिये । आप क्यों परेशान है कि तुरन्त ला रहे हैं । आप यह बताईये ?

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- आपने जो बड़ी गलती की है, उसको हमको सुधारना है।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप खाली विशेषाधिकार का निर्णय आ जाने देते । आसन्दी क्या निर्णय करती है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- उसको छोड़िये, आप क्यों लाये, यह बताईये ?

अध्यक्ष महोदय :- चौबे जी, परेशानी बढ़ती जा रही है, समय कम है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, कुंभ घोषित किया, लगातार 15 साल आपने स्नान किये, हमने तो अखबारों में देखा, खाली बृजमोहन जी दो-चार नागाओं को लेकर अकेले डुबकी लगाते थे, करोड़ो रूपये खर्च करके कुंभ आयोजन करते थे, आपको हर लाईन में खड़ा होना है .....।

श्री अजय चन्द्राकर :- इतने विद्वान है, औचित्य पर बोल सकते हैं । मैं चाहता हूं कि आपका औचित्य पर अच्छा भाषण हो । राजनीतिक मत हो ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- थोड़ा-बहुत सुनने का भी साहस रखो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- औचित्य पर बढ़िया भाषण करिये । क्यों जरूरी था, तत्काल उसमें ?

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- जरूरी है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- ठीक है, आप बोलिये ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजिम कुंभ में बहुत बार इस सदन में हम लोगों ने अपनी बात कही है । बहुत बार । मैंने एक बार बृजमोहन जी से पूछा भी था, क्या आप इसको कुंभ घोषित कर रहे हैं, कुंभ का दर्जा दे रहे हैं, आपके मुख्यमंत्री जी वहां पर जाकर लम्बी-लम्बी तकरीरें करते हैं, एकाध डुबकी तो उनको लगाकर दिखवा दो । डुबकी, एक बार भी नहीं । ये हमारी विरासत है । शिवरीनारायण, राजिम, हमारी आस्था का केन्द्र है, माघी पुन्नी मेला अभी शुरूआत होने जा रहा है, 19 तारीख से । कितना समय बचा है । रही बात राजिम में तो राजीवलोचन से बड़े फोटो बृजमोहन जी के लगते रहे । लगे है कि नहीं लगे हे । कुंभ घोषित करते रहे । आप लगाते रहे । हमारी विरासत को बचाने के लिए केवल नामकरण, इतनी परेशानी क्यों.....

श्री अजय चन्द्राकर :- कोई परेशानी नहीं है, आप औचित्य भर बता दीजिए, नाम परिवर्तन के लिए इतनी जल्दबाजी क्यों है । बृजमोहन का फोटा छोटे हो, जल्दबाजी इसीलिए है ।

श्री रविन्द्र चौबे :-मैंने कहा ना, विरासत को खत्म करने की साजिश, 19 तारीख से मेले की शुरूआत, मुझे लगता है कि जो माघी पुन्नी मेले का पुरानी परम्परायें थी, माननीय मंत्री जी ने तो केवल

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उतना ही प्रस्ताव रखा । इसमें सिलेक्ट कमेटी को भेजो, विचार किया जाये, परिचालन किया जाये, यह सारी बातें कहां से आ गयी । माननीय मंत्री जी ने विचार के लिए प्रस्तुत किया......।

श्री अजय चन्द्राकर :-इन बातों को नहीं सुनना है, सिर्फ कानून बनाना है। आपके साथ एक असंसदीय शब्द लेकर एप्रोप्रियेट वर्ड का उपयोग कर रहा हूँ । जो संसदीय प्रणाली में उपयोग किया जाता है । (XX) यह संसदीय किताबों में है। (व्यवधान) उसका इस्तेमाल कर लीजिए ।

श्री मनोज सिंह मंडावी :- माफी मांगनी चाहिये । (व्यवधान)

जारी...श्री मिश्रा

मिश्रा\10-01-2019\e18\02.55-02.60

श्री ताम्रध्वज साहू :- हार गये इसका मतलब जो चाहे वह बोलेंगे और हम सब सुनते रहेंगे। नाम परिवर्तन की बात है। हम बिल्कुल नहीं सुनेंगे। क्या (XX)[4] है बतायेंगे। जो संस्कृति है आपकी है, बाकी लोगों की संस्कृति नहीं है। यही अकेले यहां पढ़े लिखे हैं बाकी लोग यहां क्या अंगूठा छाप हैं कि संस्कृति की जानकारी उन्हीं भर को है? हम सब यहां (XX) हैं क्या? क्या हम लोगों को अपने संस्कृति की जानकारी नहीं है। क्या चर्चा की बात करते हैं? (XX) करते हो। कुछ भी बोलते जा रहे हैं? क्या हम पैसा कमाने के लिए बदल रहे हैं? आप औचित्य की बात पूछते हो क्या हम और कुछ करने के लिए बदल रहे है? (व्यवधान)

सुश्री शकुंतला साहू :- छत्तीसगढ़ियों का सम्मान करो।

श्री मनोज मंडावी :- आपमें न परंपरा की सोच है न संस्कार की सोच है और न छत्तीसगढ़ के बारे में सोच है।

श्री धनेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाईंट ऑफ आर्डर है। माननीय सदस्य ने इस बात का उल्लेख किया है कि (XX) ये संसदीय है। मैं आपसे आग्रह करना चाहता हूं कि यदि यह बात असंसदीय है तो माननीय सदस्य को इस सदन के सामने माफी मांगनी चाहिए। कृपया हम आपसे व्यवस्था का अनुरोध करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- मैं (XX) शब्द का विलोपन करता हूं। माननीय चौबे जी, इस प्रस्ताव में जो प्रवर समिति को भेजने को कहा है उसका यदि आप विरोध कर रहे हैं तो उसकी बात आप रखिए।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय अजय जी, दो दिन हो गया, इतनी उत्तेजना, आप ऐसे शब्दों का इस्तेमाल क्यों करते हैं? ये छत्तीसगढ़ की जनता का जनादेश है आपको इतना भय क्यों? आप इतना डर क्यों रहे हैं? हमारी हर बात का विरोध आप क्यों कर रहे हैं?

[4] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार विलोपित

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

ये जनादेश, जनता का अपमान इसको आप (XX) कहते हैं, ये उचित भी नहीं है और ये व्यवहार भी ठीक नहीं है। अध्यक्ष महोदय, आप केवल विलोपित मत करिये, ऐसे शब्दों का बार-बार उपयोग किया जायेगा तो न तो यह सदन के लिए और न लोकतंत्र के लिए उचित है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप सदन नहीं चलने देना चाहते क्या? माननीय अध्यक्ष जी ने आपको कहा है कि प्रवर समिति को भेजना है या नहीं उस पर बोलिए, आपने भाषण शुरू कर दिया। आप निर्देश का अपमान कर रहे हैं? अध्यक्ष जी ने आपको प्रवर समिति के बारे में बोलने के लिए निर्देशित किया है।

श्री रविन्द्र चौबे :- मुझे क्या बोलना है यह आपसे पूछकर बोलूंगा?

श्री शिवरतन शर्मा :- आप आसंदी के निर्देश पर बोल रहे हैं, विषय भी निर्देशित किया गया है। आसंदी ने आपको विषय भी निर्देशित किया है कि किस विषय पर आपको बोलना है।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, मुझे लगता है कि निराशा, हताशा से उबर नहीं पा रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट)

श्री प्रमेश

प्रमेश\10-01-2019\e19\03.00-03.05

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अध्यक्ष जी मुझे लगता है कि निराशा, हताशा से ऊबर नहीं पा रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) ये जनादेश है जनता का फैसला है, स्वीकार करिये आप और थोड़ा सा व्यवहार में परिवर्तन लाइए। गलतफहमी मत पालिये, आप कहां बैठे हैं ख्याल रखिये। जनता ने आपको आपके कर्मो के कारण वहां बैठाया है। अब ये क्या बातें कर रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) इसलिए माननीय अध्यक्ष महोदय जो शब्द उन्होंने कहा आपने विलोपित किया लेकिन फिर से मैं आपसे आग्रह करता हूं, ऐसी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए, निर्देश होना चाहिए और जिस विधेयक को सलेक्ट कमेटी को सौंपने के बारे में आपने प्रस्ताव किया, मैं उसकी जरूरत महसूस नहीं करता। चूंकि विधेयक स्वीकार करने के लिए सदन में प्रस्तुत हो गया है, उसका पालन किया जाना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय:- बृजमोहन जी आप इसमें कुछ कहना चाहते हैं। प्रवर समिति को क्यों सौंपा जाना चाहिए, वहीं तक सीमित रहे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- अध्यक्ष महोदय, मैं प्रवर समिति पर नहीं इस विधेयक के बारे में कहना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय:- उसमें बाद में चर्चा करूंगा,चर्चा करूंगा जब आयेगा तो।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- प्रवर समिति को भेजने के मामले में अध्यक्ष महोदय, प्रवर समिति को इस विधेयक को इसलिए भेजा जाना चाहिए, क्योंकि इस विधेयक की इतनी ज्यादा जल्दबाजी नहीं है कि इसको पारित किया जाए और सभी नियमों को शिथिल कर आपके माध्यम से इस विधेयक के ऊपर में

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

चर्चा करने की जल्दबाजी की जा रही है जो कि आवश्यक नहीं है। ये विधेयक पारित नहीं होगा, तो कोई प्रदेश में कोई बहुत बड़ी अव्यवस्था नहीं हो जाएगी। ये विधेयक पारित नहीं होगा तो हमारे राजिम का कुंभ कल्प मेला नहीं होगा, ऐसी भी स्थिति नहीं है। ये विधेयक पारित नहीं होगा, तो पूर प्रदेश में कोई बवाल खड़ा हो जाएगा, ऐसी स्थिति भी नहीं है और इसलिए इस विधेयक को पारित करने की कोई जल्दबाजी नहीं है, उसमें ऐसे कोई निहतार्थ नहीं है और इसलिए विधेयक को जल्दबाजी में नियमों को शिथिल कर, इसका राज्यपाल जी से, मैं तो ये भी जानना चाहूंगा, मेरी जानकारी में है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष जी, ये तो प्रवर समिति के बारे में बात नहीं कर रहे है, दूसरी चीज के बारे में बात कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय:- प्लीज प्लीज।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- क्या है, ये क्या है। अगर मंत्री लोग ऐसा करेंगे।

अध्यक्ष महोदय:- नहीं, नहीं सब कर रहे हैं यहां तो मंत्री और जो मंत्री नहीं हैं, सब लोग ऐसा कर रहे हैं। मैं देख रहा हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- नहीं हम अपने नियम की बात कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय:- मैं नियम की बात भी जानता हूं, सुनता हूं। आप सब करिये मैं बोल तो रहा हूं न, प्रवर समिति में रिपोर्ट सौंपने जाना है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपकी आज्ञा हो तो हम बाहर चले जाते हैं।

अध्यक्ष महोदय:- नहीं मैं चाहता नहीं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- अगर मंत्री इस प्रकार से डिस्टर्ब करेंगे, ये हमारा अधिकार है। अगर आप नहीं चाहते, आप बोले तो हम बाहर चले जाते हैं। हम सदन में नहीं बोलेंगे। आपने मुझे बोलने का अवसर दिया और मंत्री खड़े हो के मुझे बोलने नहीं दे रहे हैं। ये स्थिति अच्छी थोड़ी है। अध्यक्ष महोदय, आप उनको नियंत्रित नहीं करेंगे तो ये स्थिति अच्छी नहीं होगी।

अध्यक्ष महोदय:- प्रश्न यह है कि छत्तीसगढ़ राजिम कुंभ कल्प मेला संशोधन विधेयक 2019 क्रमांक 2 सन् 2019 को प्रवर समिति को सौंपा जाए।)प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ)

अध्यक्ष महोदय:- अब इस विधेयक के खंडों पर चर्चा होनी है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे लगता है कि संसदीय इतिहास में छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में 1950 से लेकर आज तक के 69 सालों के कार्यकाल में और इस सदन के लिए आज का दिन एक काला दिन होगा। जिस दिन बिना किसी कारण के, बिना किसी उद्ददेश्य के, बिना किसी महत्व के और सदन के सब नियमों को शिथिल कर किसी विधेयक को उसी दिन उसी तारीख में प्रस्तुत किया जाए, संशोधन का अवसर न दिया जाए। उस विधेयक को पारित करवाने के लिए प्रयास किया जाए और शासन पक्ष अपने बहुमत के दम पर, उसको पारित करवाना चाहे। माननीय

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय, मैं अभी सुन रहा था, माननीय संस्कृति मंत्री जी को, छत्तीसगढ़ का इतिहास बहुत गौरवशाली इतिहास रहा है। छत्तीसगढ़ में 200 से ज्यादा स्थानों पर पुन्नी मेले भरते हैं। पूरे देश में 5 हजार से ज्यादा नदियों के किनारे पुन्नी मेले भरते हैं। ....जारी

श्रीमती सविता

सविता\10-01-2019\f10\03.10-03.15

जारी श्री बृजमोहन अग्रवाल :- पूरे देश में 5000 से ज्यादा स्थानों पर नदियों के किनारे पुन्नी मेले भरते हैं, आपने राजिम माघी पुन्नी मेला करके, आप छत्तीसगढ़ के महत्व को कहां ले जा रहे हैं ? छत्तीसगढ़ की धरती वह धरती है जो धरती प्रभु राम का वन गमन मार्ग है, जिस धरती पर लोमस ऋषि का आश्रम है, जिस धरती पर सप्त ऋषियों का आश्रम है, जिस धरती पर वल्लभाचार्य जी की जन्मभूमि है, जिस धरती पर सबरी के बेर प्रभु राम ने खाये थे। हमारी सरकार ने ये निर्णय, कोई हमारा निर्णय नहीं था, तत्कालीन राज्यपाल उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में कोई ऐसा आयोजन होना चाहिए, जिससे कि पूरे देश और दुनिया में छत्तीसगढ़ का नाम हो, छत्तीसगढ़ की एक पहचान बने, तत्कालीन राज्यपाल, मुख्यमंत्री जी और हम लोग बैठे थे, हमने बैठने के बाद में विचार किया। देश के पूरे साहित्यकारों को बुलाया, देश के लेखकों को बुलाया, यहां के पत्रकारों, संपादकों, राजनेताओं को बुलाया, उनसे चर्चा की, सब लोगों ने कहा कि अगर ऐसा कोई आयोजन हो, तो एयरपोर्ट के नजदीक होना चाहिए, ऐसा कोई आयोजन हो तो महत्वपूर्ण जगह होनी चाहिए। ऐसा कोई आयोजन हो तो उसका धार्मिक महत्व होना चाहिए, ऐसा कोई आयोजन हो तो उसका पारंपरिक, ऐतिहासिक महत्व होना चाहिए।

समय :
3:11 बजे

(सभापति महोदय (श्री सत्यनारायण शर्मा) पीठासीन हुए)

माननीय सभापति महोदय, अभी जिस गजट को माननीय ताम्रध्वज साहू जी पढ़कर सुना रहे थे, हमने उससे पुराने भी बजट-गजट निकाले, हमने देखा कि एक मात्र आयोजन छत्तीसगढ़ की धरती पर राजिम का माघी पूर्णिमा का मेला है, जिस मेले में महाराष्ट्र के लोग भी आते है, जिस मेले में उड़ीसा, झारखण्ड के लोग भी आते थे और वह माघी पूर्णिमा का मेला सुकुड़ कर धीरे-धीरे पुन्नी मेला, छोटी मेली हो गई थी और उसको छत्तीसगढ़ की पहचान बनाने के लिए, छत्तीसगढ़ को देश और दुनिया में एक अवसर मिले, क्योंकि इस देश के कोई सबसे बड़े अम्बेसडर हैं तो वह साधु संत है। साधु संत जहां पर भी जाते हैं, वह उस धरती की, उस पुन्य भूमि की गाथा को कहते हैं। हमारे छत्तीसगढ़ को, छत्तीसगढ़ की चर्चा, छत्तीसगढ़ शब्द का उपयोग ये हजारों साल पहले हो चुका है, परन्तु छत्तीसगढ़ के बारे में जब हम लोगों के बीच में जाते थे, अच्छा ये छत्तीसगढ़ वही है, यह झारखण्ड में पड़ता है ये छत्तीसगढ़ की राजधानी रांची है ? परन्तु हमने राजिम कुम्भ मेले के माध्यम से साधु संत पूरे देश में कहने लगे कि छत्तीसगढ़ में एक राजिम है और वह राजिम पुन्य भूमि है, वह त्रिवेणी संगम है। अगर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सेन्ट्रल इण्डिया में इलाहाबाद के बाद कोई त्रिवेणी संगम पड़ता है तो हमारी राजिम का त्रिवेणी संगम पड़ता है जहां पर लोग अस्थियों का विसर्जन करते हैं, जहां पर लोग अपने क्रिया कर्म करते हैं। हमारे यहां और भी त्रिवेणी संगम है, माघी पूर्णिमा के 500 से ज्यादा मेले भरते हैं क्या वहां पर अस्थियों का विसर्जन होता है? माननीय धनेन्द्र साहू जी, यहां उप उपस्थित हैं उसी क्षेत्र से हैं, राजिम कुम्भ, राजिम क्षेत्र का अपना एक महत्व है, वहां पर हमारी महानदी, सों□र, पैरी नदियों का संगम होने के कारण, इसको गंगा का स्वरूप भी महानदी को माना जाता है, इसके स्वरूप को गंगा का स्वरूप माना जाता है, जिसको चित्रोत्पतला माना जाता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, ताम्रध्वज जी जिस बात को कह रहे थे, मैं नहीं कहना चाहता। अभी हमारे संसदीय कार्यमंत्री जी के गुरू शंकराचार्य जी हैं, उन्होंने कहा कि जहां पर संतो का समागम होता है, जहां पर संतों की वाणियां बरसती है, जहां पर पानी होता है, जहां पर साधु संत आते हैं, वह कुम्भ का स्वरूप ले लेता है। आजकल तो कर्मचारी कुम्भ हो रहे हैं, आदिवासी कुम्भ हो रहे हैं।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय बृजमोहन जी, जब आप इतनी बात कर रहे हैं तो मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि एक शंकराचार्य स्वरूपानंद जी हमारे आये थे, उनने बोला था कि ये कुम्भ हो नहीं सकता क्योंकि पूरे देश में 4 कुम्भ ही होते हैं। उनने ये बात भी बोली थी तो उसको तो आपने ध्यान रखा नहीं। आपने उसे कुम्भ का नाम दे दिया, जिसके कारण आप जिस पूरे साधु संत की बात कर रहे हैं वे मानते नहीं थे कि वह कुम्भ है शंकराचार्य जी बोलते थे कि वह कुम्भ है, वे मानते ही नहीं थे कि वह कुम्भ है और आप कुम्भ का नाम ले रहे हैं फिर में आपने राजिम कुम्भ (कल्प) किया, आपने ये सब किया इसके कारण साधु संत, सब लोग नाराज है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, वहां पर एक समय ऐसा भी था। जब इस देश के चारों शंकराचार्य उपस्थित हुए, इन्होंने उस कुम्भ मेले का अनुमोदन किया। इस देश के अखाड़े हैं उन अखाड़ों के प्रमुख जूना अखाड़ा के प्रमुख अवधेशानंद जी हैं हमने वर्ष 2017 में, वर्ष 2006 में जो विधेयक लाया था, मुझे मालूम था, हमारी सरकार भी जानती थी कि कुम्भ पर आपत्ति हो सकती है, आप इस विधेयक में देखेंगे .....

जारी श्री चौधरी

चौधरी\10-01-2019\f11\03.15-03.20

पूर्व जारी .. श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमारी सरकार भी जानती थी कि कुंभ पर आपत्ति हो सकती है, इसलिए इस विधेयक में आप देखेंगे हमने इसमें प्रतिवर्ष होने वाला राजिम कुंभ लिखा है। क्योकि बाकी कुंभ 12 साल में होते हैं, हमने इसके साथ में प्रतिवर्ष शब्द जोड़ा। बाद में कुछ संतों की और आपत्ति हुई, अवधेशानंद जी ने कहा कि आप इसके साथ में ''कल्प'' शब्द जोड़े देंगे तो मैं स्वयं आऊंगा। जो अखाड़ों के प्रमुख हैं। हमने 2017 में संशोधन लाया और इसके साथ में ''कुंभ कल्प'' शब्द

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जोड़ा। ये कोई मजाक नहीं है, छत्तीसगढ़ की संस्कृति, संस्कारों, इतिहास की बात कर रहे हैं। आज छत्तीसगढ़ से बाहर कितने लोग जानते हैं कि छत्तीसगढ़ में भानजों के पैर को क्यों धोया जाता है, उसका पानी क्यों पीया जाता है ? क्योंकि यहां की धरती प्रभु राम की मॉ कौशल्या की जन्मभूमि है, प्रभु राम को पूरा प्रदेश भानजा मानता है।

श्री अमितेश शुक्ल :- बृजमोहन भैया, आपने यह बहुत अच्छी बात कही। तो सदन को यह भी बता दें कि आपने कौशल्या मंदिर क्यों नहीं बनाया? पवन दीवान जी चिल्लाते रह गये और अब वह शांत हो गये हैं। आपने राजिम में कौशल्या माता का मंदिर नहीं बनाया, हमारे पवन दीवान जी का चिल्लाते-चिल्लाते निधन हो गया।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी आपको छत्तीसगढ़ का इतिहास पढ़ना पड़ेगा और परंपरा जाननी पड़ेगी, आप पूरा नहीं जानते हैं। कौशल्या मंदिर के बारे में किसी दिन अलग से चर्चा कराईये, हम उत्तर देंगे।

श्री अमितेश शुक्ल :- आप अभी उत्तर दे दो कि मंदिर क्यों नहीं बनाये? पवन दीवान जी चिल्लाते रह गये और उनकी मृत्यु हो गई। माननीय बृजमोहन जी खुद ही बोल रहे हैं।

श्री दलेश्वर साहू :- चंदखुरी में 100 साल से कौशल्या माता का मंदिर बंद है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ में प्रभु राम का वन गमन मार्ग कौशल प्रदेश, मॉ कौशल्या की जन्मभूमि है। अगर हमने कुंभ नाम रखकर पूरे देश के साधु-संतो को आकर्षित किया, 5 हजार से ज्यादा साधु संत आने लगे। छत्तीसगढ़ की जनता आर्थिक रूप से कमजोर है, वह चारों कुंभों में नहीं जा पाती है, इतना पैसा नहीं है। छत्तीसगढ़ के जो धार्मिक, श्रद्धावान लोग हैं, उनकी श्रद्धा यहीं पर पूरी हो इसलिए हमने इसके साथ में प्रतिवर्ष होना वाला कुंभ शब्द रखा और जब इस पर आपत्ति आई तो उसके साथ में हमने ''कल्प'' शब्द जोड़ा। आपने इसका नाम ''माघी पूर्णिमा मेला'' करके कौन सा नया काम कर रहे हैं ? आप सिर्फ क्योकि पूर्व शासन ने इसका नाम ''कुंभ कल्प'' रख दिया।

सभापति महोदय :-माननीय बृजमोहन जी आपकी पूरी बात आ गई। रिपीटेशन मत करिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, मैं कानून के ऊपर में कह रहा हूं। मैं दिशाभ्रम नहीं कर रहा हूं, मैंने कोई दूसरी बात नहीं कहीं।

सभापति महोदय :- आप उन्हीं बातों का बार-बार रिपीटेशन मत करिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं रिपीटेशन नहीं कर रहा हूं। (XX)[5] । मैं विषय पर बात कर रहा हूं। माननीय

[5] (XX) अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार विलोपित किया गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय, मैं इसलिए चाहता हूं कि राजिम कुंभ कल्प मेला जो इसका नाम रखा गया, ये साधु संत शंकराचार्य, महात्मा, महामंडलेश्वर..।

सभापति महोदय :- माननीय बृजमोहन जी ने कहा है कि (XX) इसे मैं विलोपित करता हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- धन्यवाद। माननीय सभापति महोदय, ऐसे राजिम कुंभ कल्प के माध्यम से पिछले 15 सालों में 2006 में ये कानून पास हुआ, वर्ष 2017 में इसमें ''कल्प'' जोड़ा गया और आज आपको इसको परिवर्तित करने की इतनी जल्दबाजी है ? आप एक दिन के अंदर उसी दिन इस विधेयक को प्रस्तुत करते हैं, उसी दिन आप इसके ऊपर में प्रवर समिति को भेजने के आवेदन को निरस्त करते हैं, उसी दिन उसमें संशोधन का कोई अवसर नहीं देते, उसी दिन उसको पारित करवाते हैं। मुझे लगता है कि यह छत्तीसगढ़ के इतिहास में, हम एम.एल.ए. (Member of the Legislative Assembly) हैं। यह legislation बनाने की संस्था है, अगर legislation बनाने की संस्था में ही legislation का अपमान होगा, legislation बनाने के नियमों को तोड़ा जायेगा, legislation बनाने के नियमों को सुना नहीं जायेगा, उसके ऊपर में बहस नहीं होगी तो देश हमको माफ नहीं करेगा। ये इतिहास हमको माफ नहीं करेगा। देश के आने वाले लोग हमको माफ नहीं करेंगे। इसलिए हम चाहेंगे कि शासन को इतनी जल्दबाजी में ये विधेयक लाने की बजाय इसको वापिस ले लेना चाहिए। पूरा सदन इस पर चर्चा करे। क्या राजिम कुंभ कल्प होने से छत्तीसगढ़ का अपमान हो रहा है। हमने छत्तीसगढ़ का सम्मान ब□ा़या है और उस सम्मान को बढ़ाने वाला राजिम कुंभ कल्प है, इस शब्द को नहीं हटाया जाना चाहिए और इस विधेयक को वापिस लिया जाना चाहिए। माननीय सभापति महोदय, मैं इस बात का आपसे आग्रह करते हुए आपने अवसर दिया, इसके लिए धन्यवाद।

श्रीमती नीर

नीरमणी\10-01-2019\f12\03.20-03.25

श्री धनेंद्र साहू (अभनपुर) :- माननीय सभापति महोदय, आज यह जो राजिम का माघी पुन्नी मेला के नामकरण के संबंध में यह जो विधेयक प्रस्तुत हुआ है यह हमारे लिये आज एक ऐतिहासिक दिन है । अभी माननीय पूर्व धर्मस्व मंत्री जी कह रहे थे कि इतिहास का आज काला दिन है । मैं कहूंगा कि यह हमारा ऐतिहासिक और स्वर्णिम दिन है । जिस इतिहास को इन्होंने काला कर दिया था उसको आज सुधारने का अवसर आया है । चूंकि बातें बहुत कुछ आयी हैं, हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक भावनाओं से जुड़ा हुआ विषय है, मैं इस पर थोड़ा समय लेते हुए कुछ कहना चाहूंगा कि छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के लिये हमारे स्वप्नदृष्टाओं ने जो सपना देखा था कि हमारा छत्तीसग□ राज्य अलग राज्य क्यों बनना चाहिए उसके पीछे सिर्फ हमारे विकासों के प्रति उपेक्षायें, आर्थिक विकास, सामाजिक विकास ही कारण नहीं थे । सांस्कृतिक विकास भी हमारा जो नहीं हो रहा था सांस्कृतिक शोषण जो आज

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

छत्तीसगढ़ियों के प्रति हो रहा था, यह एक बहुत बड़ा कारण था कि हम लोग अपने ही छत्तीसगढ़ में जिस तरह से हमारे सांस्कृतिक शोषण हो रहे थे, धार्मिक शोषण हो रहे थे इसको लेकर के छत्तीसगढ़ राज्य निर्माणकी यह मांग बलवती हुई और यह छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण हुआ ।

माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण होने के बाद में मुझे गर्व है कि इस सरकार में मुझे धर्मस्व, संस्कृति, पर्यटन मंत्री बनने का अवसर मिला था और मंत्री बनने के बाद हमने, हमारी सरकार ने धार्मिक नीति बनायी, इस प्रदेश की नयी सांस्कृतिक नीति बनायी, कोई मनमर्जी से नहीं किया । संस्कृति नीति बनायी, सदन ने स्वीकार किया और उस संस्कृति नीति को आप सुन लीजिये ।

श्री अजय चंद्राकर :- उस सदन में आपकी नीति में कभी बहस नहीं हुई, उस सदन में मैं सदस्य था ।

श्री धनेंद्र साहू :- आप शांति से सुन लीजिये ।

श्री शिवरतन शर्मा :- श्री धनेंद्र भैया, उस समय आप कैसे मंत्री बने थे पूरा प्रदेश जानता है । अभी भी वैसा ही कुछ कर लो ।

श्री धनेंद्र साहू :- अब आप लोग व्यवधान मत करिये । अभी आप थोड़ा सा शांत बैठें तो ज्यादा अच्छा होगा ।

श्री अजय चंद्राकर :- भाटो, आप वैसा ही कुछ कर लें ।

सभापति महोदय :- श्री अजय चंद्राकर जी, आप बैठे-बैठे न बोलें । यह गलत है न । आप संसदीय कार्यमंत्री रहे हैं ।

श्री धनेंद्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, हमारी संस्कृति नीति, हम लोगों ने जो कार्य किया था राज्य बनने के बाद कि हम लोग नयी कोई धार्मिक परंपरा स्थापित नहीं करेंगे जो जन आस्था का विषय है । जो हमारे मेला हैं, जो संस्कृति के विभिन्न आयाम हैं वे यथावत् चलते रहेंगे । सरकार का दायित्व है कि जनता के साथ जुड़कर जनसुविधाएं वहां पर लोगों को उपलब्ध करायें । यह हमारी संस्कृति नीति थी । सभी धर्मों का सम्मान करें यह हमारी धार्मिक नीति थी, किसी नयी परंपरा को लादें, किसी नयी परंपरा को थोपें यहां की जनता पर यह हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक नीति नहीं थी । जनता की आस्था के जुड़कर कैसे हम उनके लिये आम सुविधा, जनसुविधा दें । जो नागरिक सुविधायें हैं उस पर कैसे विस्तार करें, वहां होने वाली दिक्कतों को कैसे दूर किया जाये, कैसे उसके लिये सरकार जुड़कर के आम जनता के कानून की सुरक्षा-सुविधायें यह तमाम् सारी चीजें दी जा सकें यह सरकार की जिम्मेदारी होती थी और राज्य बनने के बाद हम लोगों ने वर्ष 2000 से शुरू की, आप अच्छी तरह से जानते हैं, आप गवाही हैं । आपके सामने वालों को नहीं मालूम है । वर्ष 2000 में सिर्फ राजिम ही नहीं पूरे छत्तीसगढ़ के जितने हमारे धार्मिक स्थान हैं, जितने हमारे सांस्कृतिक स्थान हैं, विभिन्न आयोजन हम लोगों ने शुरू करवाया, हमारी सरकार ने शुरू करवाया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- आपने क्या शुरू करवाया बताऊं ? अभी भी देख लीजिये धर्मस्व के पूरे बजट का उस समय श्री चनेशराम राठिया जी ने अपने गांव में, अपने घर के सामने मंदिर बनवा लिया, पूरे छत्तीसगढ़ के पैसे का, चलकर अभी आप देख लीजिये । यह आपकी संस्कृति नीति है ।

श्री धनेंद्र साहू :- यह मध्यप्रदेश सरकार की बात है ।

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं-नहीं, आप छत्तीसगढ़ बनने के बाद अभी चलकर देख लीजिये ।

श्री धनेंद्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, यह पुराने मध्यप्रदेश की बात है। मैं आपसे छत्तीसगढ़ की बात कर रहा हूं, उसके बाद ही इस विभाग की पहचान बनी। धर्म-संस्कृति विभाग तो कोई जानते भी नहीं थे क्या होता है उसके बाद ही यहां पर कार्य प्रारंभ हुए हैं और राज्य निर्माण के बाद हम लोगों ने अपने पुरखों की जो विरासत में मिली हुई जो भी धरोहर हमारी थी ।........जारी

........श्री कुरैशी

कुरैशी\10-01-2019\f13\03.25-03.30

जारी.........श्री धनेन्द्र साहू :- राज्य निर्माण के बाद हम लोगों ने अपने पुरखों की विरासत में मिली हुई धरोहर को अधिक से अधिक आम जनता में अधिक ख्याति प्राप्त हो उसके लिए तमाम काम हम लोगों ने प्रारंभ किये । हम लोगों ने राजिम महोत्सव प्रारंभ किया, आपने प्रारंभ नहीं किया था, हमने और हमारी सरकार ने प्रारंभ किया था । चित्रकूट महोत्सव हमारी सरकार ने प्रारंभ किया था, शिवरीनारायण महोत्सव हमारी सरकार ने प्रारंभ किया था । अनेक महोत्सव हमने हमारी सरकार के माध्यम से प्रारंभ करवाये थे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- भाटो, हमन तो केवल गोबर सइंते हन अउ छेना थोपे हन, बाकी सब तैं कर ले ।

श्री धनेन्द्र साहू :- आपने केवल सांस्कृतिक और धार्मिक प्रदूषण किया है यहां पर । आप लोगों ने सिर्फ प्रदूषण फैलाया है ।

श्री दलेश्वर साहू :- आपने संस्कृति विभाग का कितना दुरूपयोग किया है उसकी सूची है । पटल पर रख देता हूं या तो पत्रकारों को दे देता हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- भाटो, आज एक बात माननीय मुख्यमंत्री जी की उपस्थिति में बताता हूं । मेरी उनसे राजनीतिक, वैचारिक असहमति हो सकती है । मैं और मेरा परिवार और मेरे लोग छत्तीसगढ़ की संस्कृति की कितनी सेवा की है एक-एक व्यक्ति को वे बहुत अच्छे से जानते हैं और अभी भी कर रहे हैं । ये शोषण वोषण नहीं चलता, पूछ लीजिए । वे मुझसे ज्यादा बता देंगे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री दलेश्वर साहू :- अजय जी, ये मेरे पास सूची है बोलो तो पटल पर रख देता हूं कि आपने पैसे का कितना.. अभी पेपर में दे देता हूं इसको देख लीजिएगा ।

श्री धनेन्द्र साहू :- सभापति महोदय, मैं कहना चाह रहा हूं कि राजिम की ख्याति अपने नाम से है । उसे कृत्रिम कुंभ नाम देने की आवश्यकता नहीं है । इसकी महत्ता हजारों वर्षों से है । आदरणीय मंत्री जी ने जिस बात का उल्लेख किया गेजेटियर में । पूरे मध्य भारत का यदि कोई सर्वोच्च तीर्थ था तो वह राजिम था । जिस तरह से सारे संस्कार के काम इलाहाबाद, प्रयाग में होते हैं, उसी तरह से मध्य भारत में राजिम मे हजारों वर्षों से सांस्कृतिक और धार्मिक कार्य होते थे । यह मेला केवल 15 दिनों का नहीं बल्कि महीनों चलता था । उस समय यातायात के साधन नहीं थे । बैलगाड़ियों से मध्य भारत के लोग यहां तीर्थ के लिए आते थे और अपनी साल भर की आवश्यकताओं का सामान ले जाते थे । यह कोई साधारण बाजार नहीं होता था । बहुत बड़ा बाजार होता था, पूरे मध्य भारत के लोग आकर मेले में भाग लेते थे । भगवान राजीव लोचन मंदिर का पुरातात्विक इतिहास पांचवी शताब्दी काहै। आप हमसे ज्यादा नहीं जानोगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप फिर गेजेटियर खोलवा लीजिए, 9वी से 10वीं शताब्दी का है।

श्री धनेन्द्र साहू :- पांचवी शताब्दी में बना था और उसका पुनर्निमाण 9वीं शताब्दी में हुआ था ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप गेजेटियर खुलवा लीजिए, उधर संस्कृति विभाग के डायरेक्टर बैठे हैं।

सभापति महोदय :- चन्द्राकर जी, आपका नाम बोलने वालों में है । उस वक्त बोलना ना । आपको जब अवसर मिलेगा तब बोलना । मेरी अनुमति के बगैर जो बोलेगा वह रिकॉर्ड में नहीं आएगा ।

श्री शिवरतन शर्मा :- (xx)[6]

श्री बृजमोहन अग्रवाल :-(xx)

श्री अजय चन्द्राकर :-(xx)

सभापति महोदय :- ये कोई रिकॉर्ड में नहीं आएगा ।

श्री धनेन्द्र साहू :- सभापति महोदय, राजिम का महत्व अपने राजिम नाम से है । किसी पुराण में उल्लेख है । महानदी को भगवान से आशीर्वाद प्राप्त है कि कलयुग में वह गंगा के रूप में विद्यमान रहेगी । इसलिए आज भी इलाहाबाद के प्रयास से कम महत्व नहीं है । राजिम में तीनों नदियों का जो संगम है, इसका आज भी उतना ही महत्व है । इसके नाम को बदलकर आप क्यों प्रदूषित करना चाहते हैं। वहां आज कृत्रिम कुंभ में लाखों लोग आते हैं लेकिन राजिम में पहले ही लाखों लोग आते रहे हैं । आप भ्रम मत पालिए कि आपके कारण आ रहे हैं । ऐसा नहीं है कि सरकारी कुंभ नाम देने के कारण

[6] (xx) अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार रिकॉर्ड नहीं किया गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आ रहे हैं । पूर्व में हजारों साल से लोग आते रहे हैं। सभापति महोदय, जब भी हम लोग कुंभ की बात करते हैं, कुंभ का मतलब पौराणिक युग से जो चार कुंभ स्थापित हैं । जैसे ही कुंभ का नाम आता है, प्राचीन कुंभों का स्मरण होता है जो पौराणिक काल से हैं । हमारे द्वारा स्थापित नहीं, देवताओं के द्वारा स्थापित । ये चारों कुंभ देवताओं के द्वारा स्थापित हैं । ये कोई सरकार के द्वारा............जारी

---जारी श्री ठाकुर-

ठाकुर\10-01-2019\f14\03.30-03.35

......जारी श्री धनेन्द्र साहू : - हमारे द्वारा नहीं देवताओं के द्वारा स्थापित कुंभ है चारों कुंभ है जो। ये कोई सरकार के द्वारा, सरकार के किसी मंत्री के द्वारा स्थापित कुंभ नहीं है। ये कृत्रिम कुंभ बनाने की जो कोशिश की गई है, हो सकता है कि आपका उद्देश्य हो कि इस स्थान का महत्व बढ़े लेकिन मेरा यह मानना है कि उससे उस स्थान का महत्व घटा है, बढ़ा नहीं है। क्योंकि जब भी हम उसे कृत्रिम नाम देने के कोशिश करें। कृत्रिम परंपराएं स्थापित करने की कोशिश करें जो यहां छत्तीसगढ़ की जनता की परंपरा नहीं थी। यहां पर कहीं कोई शाही स्नान नहीं होते थे। आप वो सारे वो क्या कहना चाहिए नागा साधुओं को लाकर, यहां हमारे लाखों, हजारों महिलाएं, माताएं बहनें आती हैं यहां पर उनका प्रदर्शन, उनका जूलुस उसका स्नान करवा रहे हैं। ये हमारी छत्तीसगढ़ की परंपरा यहां पर कभी नहीं रही है। वो तमाम परंपराएं स्थापित करने की कोशिश की गई है। माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे यही आग्रह करना चाहता हूं कि आज हमें राजिम की महिमा का बखान करने की जरूरत है। आपने इतने दिनों तक राजिम कुंभ का आयोजन किया। भगवान राजीव लोचन की महिमा में कोई आयोजन नहीं हुए। भगवान भुवनेश्वर की महिमा में कोई आयोजन नहीं हुए। और तो और जितने लोग आते थे, मुझे तो यह जानकारी है कि अनेकों नामी गिरामी लोग भगवान राजीव लोचन के दर्शन करने भी नहीं जाते। भुवनेश्वर मंदिर दर्शन करने भी नहीं जाते रहे हैं। कभी उनका आयोजन नहीं होता था। कभी उनका गुणगान, उनकी महिमा राजिम के महत्व की बात नहीं होती थी वहां पर और आज पुन: ये कोई नाम परिवर्तन नहीं हो रहा है, नाम परिवर्तन आपने किया था। ये तो राजिम माघी पुन्नी मेला था। सरकार जुड़ी और सरकार इससे जुड़कर के इसे राजीव लोचन महोत्सव का रूप जरूर दिया था। लेकिन आज हम अपने पुराने जो हमारे पुरखों ने जो विरासत से नाम दिया है राजिम माघी पुन्नी मेला। इससे हमारा गौरव बढ़ता है, इससे हमारा सम्मान बढ़ता है। इससे हमारी सांस्कृतिक ऊंचाई बढ़ेगी। ये नकली कुंभ नाम से हमारी महिमा समाप्त हो रही थी इस स्थान की। माननीय सभापति महोदय, इसलिए मैं यह आग्रह करूंगा कि सदन पूरे सर्वसम्मत से इसे जो विधेयक का रूप इसको पारित करे। मैं आपसे भी आग्रह करूंगा आपने मुझे समय दिया माननीय सभापति जी। धन्यवाद।

सभापति महोदय : - माननीय अजय चंद्राकर जी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर : - माननीय सभापति महोदय, मैं आपको शेक्सपियर की एक लाइन से अपनी बात शुरू करूंगा और नाम में क्या रखा है कल गुलाब को हम किसी और नाम से भी पुकारे तो वो वैसे ही खूबसूरत महकेगी। रोमियो-जुलियट की एक विश्वविख्यात पंक्ति है माननीय संस्कृति मंत्री जी। मैंने कल विद्वान, वरिष्ठ जिसका मैं बेहद सम्मान करता हूं। एक शब्द का उपयोग किया था जिसमें उत्तेजित हो गये थे लोग आज उस शब्द का उपयोग नहीं करूंगा। कोई राष्ट्र, कोई प्रदेश, कोई क्षेत्र यदि दुनिया में जाना जाता है तो वो अपने निर्माण कार्यों से नहीं जाना जाता। वो जाना जाता है अपनी महान संस्कृति, महान परंपराओं से। माननीय आपने उद्देश्यों के कथन में लिखा है। ये शास्त्र सम्मत नहीं है। मैं एक मिनट भाषण रोकता हूं। आप कौन सा शास्त्र पढ़े हैं ये बताइये मुझे और जिसके सम्मत नहीं है। मैं रोकता हूं।

सभापति महोदय : - आप रूकिए मत, जारी रखिए। चंद्राकर जी आप जारी रखें।

श्री अजय चंद्राकर : - माननीय यदि आपने उपयोग किया। उद्देश्यों में कथन किया है तो आपको बताना पड़ेगा कि कौन से शास्त्र के ये सम्मत नहीं है। आपको मैं बताना चाहूंगा कि इस छत्तीसगढ़ प्रांत में आज की तारीख में एक मात्र सांस्कृतिक महोत्सव है, जिसने छत्तीसगढ़ को पूरे देश दुनिया में पहचान दिलाई है और 5000 मेले हो या छत्तीसगढ़ के ढाई सौ मेले हों, संसाधनों के अभाव में संस्कृतियां दम तोड़ रही हैं। किसी भी जनप्रतिनिधि को चिंता नहीं थी। किसी भी संस्थान को चिंता नहीं है।

श्री अमितेश शुक्ल : - माननीय सभापति महोदय, इसका जवाब है, इसका जवाब देता हूं मैं।

सभापति महोदय : - आप दीजिएगा जवाब, आपका नंबर आयेगा।

श्री अमितेश शुक्ल : - कौन सा उसमें शास्त्र है मैं जवाब देता हूं। शंकराचार्य जी से ज्यादा शास्त्र कोई नहीं जानता। मंत्री जी का जवाब मैं बताता हूं।

सभापति महोदय : - इसके बाद आप ही को बुलाऊंगा। अमितेश जी, वो बोल रहे हैं उनको बोलने दीजिए। आप ही को बोलना है इसके बाद।

श्री अजय चंद्राकर : - माननीय सभापति महोदय।

श्री शिवरतन शर्मा : - क्या है सभापति जी, वो भी मार्गदर्शक है, उन सदस्यों को भी बोलने का अवसर दिया कीजिए माननीय सभापति जी।

सभापति महोदय : - फिर वही। आप बैठिए शर्मा जी।

श्री अजय चंद्राकर : - माननीय सभापति महोदय, एक भी महोत्सव और एक भी चीज ऐसी नहीं है जो छत्तीसगढ़ की संस्कृति को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करे। इस महान परंपरा को स्थापित करे। इस छत्तीसगढ़ की संस्कृति और परंपराओं पर जिस दिन माननीय धनेन्द्र साहू जी या माननीय संस्कृति मंत्री जी बहस करें तो......जारी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

.........जारी श्री अरविंद

अरविंद\10-01-2019\f15\03.35-03.40

..........जारी श्री अजय चन्द्राकर :- 139 की चर्चा कर लें, उसको करेंगे। अब, नाम बदलने से प्रदूषण हुआ, यह मैं पहली बार सुन रहा हूं। आपको बता दूं, आप चल दिए। आप सुन लीजिये। छत्तीसगढ़ कैसे जाना गया ? संस्कृति, विनिमय से समृद्ध होती है। आप बाहर के लोगों को नहीं बुलायेंगे, छठवीं शताब्दी में व्हेनसांग जी छत्तीसगढ़ आये। छत्तीसगढ़ में महायान शाखा का प्रवर्तन हुआ, बौद्ध धर्म का। शून्यवाद का प्रवर्तन छत्तीसगढ़ की भूमि से हुआ। उसके महान आचार्य पैदा हुए। लोग कैसे जाने ? छत्तीसगढ़ का योगदान है, लोग कैसे जाने ? जब हम आदान-प्रदान किया, तब लोग जाने। जो सांस्कृतिक साक्षरता है, वह उद्देश्यों को पूरा करती है। आदान-प्रदान हमारी विरासत को समृद्ध करती है। आप कहते हैं कि नाम बदलने से, साधु-संतों के आने से प्रदूषण होता है। आप इससे क्या कहना चाहते हैं ? जो मेलें थे, सांस्कृतिक आयोजन थे, संसाधनों के अभाव में वह हमारी महान संस्कृति सिमटने लगी। जब सिमटने लगी तो पहली बार उज्जैन के कुम्भ का अधिनियम बुलाकर कम से कम एक मेला ऐसा है, छत्तीसगढ़ की संस्कृति को रक्षित करता है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति को आगे बढ़ाता है। हम उसे लेजिसलेटिव सपोर्ट दें। लेजिसलेटिव सपोर्ट देकर वित्तीय प्रबंधन करें। यदि आपको नाम में प्रदर्शन होता है, पौराणिक रूप में ले जाना चाहते हैं, तो कानून की क्या जरूरत है, नाम बदलने की क्या जरूरत है ? आप पूरा कानून निरस्त कर दीजिये। होने दीजिये पुन्नी मेला, न मेरा बस है, न आपका बस है। सब जगह होगा। आधा-अधूरा काम क्यों कर रहे हैं ?

माननीय सभापति महोदय, दूसरी बात, यदि आपने शास्त्र सम्मत उल्लेख कर दिया तो मैं आपसे एक हजार प्रतिशत अपेक्षा करूंगा कि मुझे उन शास्त्रों का नाम जरूर बतायेंगे, जो आपको शास्त्र सम्मत और शास्त्र विरोधी कहे हैं। मैं आपको बताता हूँ। आप किन्हीं भी किताबों में पढ़ लीजिये। माननीय ताम्रध्वज जी, कुम्भ का इतिहास, फिर बाद में कह दीजियेगा। उधर बैठे हैं, चिट मंगवा लीजियेगा। कुम्भ का इतिहास राजा विक्रमादित्य से मिलता है कि चार कुम्भ राजा विक्रमादित्य ने शुरू किए। ये जो देवी-देवता का नाम ले रहे हैं न, वह कभी पढ़े नहीं हैं। राजिम के बाहर निकले नहीं हैं। वह उस समय के तत्कालीन राजा थे। यदि लोकतन्त्र से जीता राजा रमन सिंह जी हों, उनके सहयोग बृजमोहन जी हों या आज आप हों या माननीय भूपेश बघेल जी हों, यदि उस कुम्भ को मान्यता देते हैं, एक राजा, एक दौर भी मेला शुरू करता है, एक आयोजन शुरू करता है, यह हिन्दुस्तान के इतिहास में सौ बार है।(मेजों की थपथपाहट)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय सभापति महोदय, तीसरी बात यदि आप ऐतिहासिक, पौराणिक लेते हैं तो लखेश्वर बघेल जी से पूछिये कि दशहरा उत्सव कब, किसने शुरू किया ? वह भी देवताओं ने शुरू किया क्या ? परम्पराएं धीरे-धीरे मजबूत होकर संस्कृति बनती है। परम्पराएं कौन स्थापित करता है ? परम्पराएं हम स्थापित करते हैं। जो सांस्कृतिक आयोजन है, जो साहित्यिक आयोजन है, जो कलाएं हैं, जो आर्ट हैं, कभी राज सरंक्षण के पूरी नहीं हुई और राज सरंक्षण उन आयोजनों को देने का यदि पहला कोई काम किसी ने किया तो माननीय रमन सिंह की सरकार ने, माननीय बृजमोहन जी उनके सहयोगी ने किया। अब आपके ऊपर गुरूत्तरदायित्व है कि आप उस नाम से छेड़छाड़ न करें। और इतनी चिढ़ है तो आप कानून को निरस्त कर दें। माननीय सभापति जी, इसके कारण राजनीतिक हैं। कुछ करके बताना चाहते हैं। बिना अक्ल के इसमें पैसा नहीं लगता, लेकिन कल मेरिट में, टी0आर0पी0 में नाम च□ायेंगे तो उसका उद्देश्य क्या है ? सन् 1914 से हिन्दुस्तान में एक राजनीति चल रही है। सप्त हिन्दुत्व, यह कौन सा हिन्दुत्व ?, हिन्दुत्व, हिन्दुत्व होता है। हिन्दू एक जीवन प्रणाली है, सुप्रीम कोर्ट की व्यवस्था है। ये सप्त हिन्दुत्व में हम मंदिरों में जाना शुरू किए हैं। कल ये अपना गोत्र दत्तात्रेय गोत्र भी बता देंगे। उसके लिए भी कानून ले आयेंगे कि हम दत्तात्रेय गोत्र के आदमी हैं, जिसको देश पसंद कर रहा है, दत्तात्रेय गोत्र के लोग ही नेता बन सकते हैं, तो यह दिखाने के लिए भा0ज0पा0 ने तथाकथित रूप से छेड़छाड़ की, हम उस सात हिन्दुत्व से जुड़ते हैं, इसलिए हम उसको परिवर्तित कर रहे हैं, स्वरूप, बजट वगैरह कुछ परिवर्तन नहीं हो रहा है, एक नाम भर को बदल रहे हैं और पीठ ऐसे थपथपा रहे हैं कि छत्तीसगढ़ की संस्कृति की बड़ी सेवा कर दी।

माननीय सभापति महोदय, अब आपने जो परम्परा संतों के सेवा की बातअपने भाषण में कही, छठवी शताब्दी आदिशंकराचार्य ने 4 मठों की स्थापना की। 4 मठों की स्थापना के पहले यह कुम्भ चलता था और किसी राजसत्ता के द्वारा स्थापित परम्परा है। धर्म सम्मत होगा या नहीं होगा, बाद की बात है। पर वह परम्परा दशहरा महोत्सव की तरह किसी राजा के द्वारा है।

.....जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\10-01-2019\f16\3.40-45

जारी....श्री अजय चन्द्राकर :- पर वह परम्परा दशहरा महोत्सव की तरह किसी राजा के द्वारा है और किसी भी श्रुति ग्रंथों में, किसी भी स्मृति ग्रंथों में जो शास्त्र आपने कहा है, मुझे स्मृति ग्रंथों में कुंभ बताइए, जो प्रमाणित हिन्दू धर्म का माना जाता है, जिसमें कुंभ का उल्लेख हो । आप क्या कहना चाहते हैं, किसको, क्या बताना चाहते हैं । ये कहिए की ये राजनीतिक इच्छाशक्ति....।

श्री बृहस्पत सिंह :- सभापति महोदय, इतने गुस्से में क्यों भाई, आराम से बोलो । इतने गुस्से में क्यों हो ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं आराम से ही बोलता हूं, जो समझ में नहीं आये, उसमें मत बोला करो । मैं जोर से ही बोलता हूं, कब मुझे धीरे से बोलते सुने हो ।

सभापति महोदय, यदि आपको एक भी श्रुति ग्रंथों का नाम मालूम होगा, स्मृति ग्रंथों का नाम मालूम होगा तो मुझे बताएंगे । श्रुति, स्मृति में श्रुति प्रमाणित मानी जाती है, एक भी प्रमाणित ग्रंथ में यदि कुंभ का उल्लेख होगा, कुंभ का उल्लेख सिर्फ राजा विक्रमादित्य अकादमी के द्‌वारा शुरू, एक राजा के द्‌वारा शुरू, वही काम इस राज्य शासन ने किया और आप नाम बदलने का छोड़ क्यों कर रहे हैं ? ये संस्कृति की सेवा है, ये संस्कृति है-नामकरण ? यदि संस्कृति है तो कानून बदलिए और छत्तीसगढ़ की संस्कृति के लिए आपका चिंतन क्या है ? एक भी चिंतन बता दो ।

सभापति महोदय :- चन्द्राकर जी, अब आप समाप्त करें ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति महोदय, एक भी चिंतन और एक भी सही कारण राजिम मेला के नाम को बदलने के लिए नहीं बता पाए, शास्त्रों का, शब्दों का, मैं आपसे बहस करने के लिए तैयार हूं, कौन सा शास्त्र है, दिखाइए और कौन संत ने इसको व्यवहारिक कहा है, यह मुझे बताइए और पटल में रखिए । ऐसे किसी बातों को उल्लेख करने के लिए शास्त्र और संत को बदनाम करने का, गलत ढंग से कोड करने का, गलत ढंग से उल्लेखित करने का आपको कोई अधिकार नहीं है । आप अपनी रक्षा करने के लिए हमारी विरासत को, हमारी संस्कृति, हमारी धार्मिकता का उपयोग नहीं कर सकते और मैं आपसे ये चाहता हूं कि संस्कृति इतनी व्यापक चीज है, वह नाम से नहीं बदलेगी-छत्तीसगढ़ । यदि आपके मन में छत्तीसगढ़ के लिए पीड़ा है, खोलिए, देखिए, जानिए औरये छोटी बात छोड़िए । सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि यह राजनीति के निम्नतम स्तर का प्रदर्शन है और सांस्कृतिक रूप से बदला लेने का उपक्रम है और दिशाहीनता के शिकार हैं ये शासन और मंत्री, दोनों । इसको प्रवर समिति को भेजा जाना चाहिए या तो वापस लिया जाना चाहिए और हिन्दू धर्मग्रंथ, संतों को, वाणी को गलत ढंग से इनको कोड करने का कोई अधिकार नहीं है । मैं इनके लिए इनको क्षमा मांगने के लिए कहता हूं और यदि वे कहें तो फिर ये मांग करें तो फिर मैं उस बात को दिखा सकता हूं । इन बातों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं । जय हिन्द, जय छत्तीसगढ़ ।

श्री बृहस्पत सिंह :- बात में ही जवाब आया । कुंभ में कितनी बार नहाये हो ।

समय :
3:43 बजे

(अध्यक्ष महोदय(डॉ.चरण दास महंत) पीठासीन हुए)

श्री अमितेश शुक्ल (राजिम) :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं आज इस विधेयक के समर्थन में खड़ा हुआ हूं । इसमें बहुत सी चचाएं हमारे साथियों ने की । मुझे सबसे ज्यादा आश्चर्य इस बात का होता है

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कि भाजपा के राज में....।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अमितेश जी, आपको मालूम है कि आपके पिताश्री, हमारे आदरणीय पूर्व मुख्यमंत्री श्यामाचरण जी शुक्ल ने उस मंच पर जाकर इस कुंभ मेले की तारीफ की है कि आपने बहुत अच्छा आयोजन प्रारंभ किया है । कुंभ के माध्यम से पूरी देश, दुनिया में छत्तीसगढ़ को पहचान मिलेगी । आपके पिताश्री ने मेरी उपस्थिति में तारीफ की है, आपको ये मालूम है कि नहीं ?

श्री अमितेश शुक्ल :- अध्यक्ष जी, मेरे पिताश्री ने तारीफ की है, यह तो मुझे पता नहीं था । (हंसी) ये जो है, वहां पर कुछ भी नहीं बनवाएंगे । ये कुछ नहीं बनवाएंगे क्योंकि उन्होंने अपने सांसद मद से वहां पर कुंभ मेला मंच होता है, वह मंच बनवाया । जब मैं पंचायत मंत्री था, उस समय रोड़ बनी, इन्होंने क्या बनाया, ये इनसे पूछिए । पिताजी उस समय जानते नहीं थे कि ये लोग इतने आडम्बरी होंगे (हंसी) आपके नाम का आडम्बर करेंगे । बेचारे सीधे-साधे, भोले-भाले व्यक्ति थे । इनकी बातों पर विश्वास कर रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप उनके पुत्र हो, श्यामाचरण जी के आप पुत्र हो । कम से कम अपने पिता को तो आडम्बरी मत बोलिए ।

श्री अमितेश शुक्ल :- मैं बता रहा हूं, वे सीधे-साधे भोले थे । आप आडम्बरियों पर विश्वास कर रहे हो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- वे सीधे-साधे, भोले-भाले थे तो आप कपटपूर्ण थे क्या ?

श्री अमितेश शुक्ल :- मुझे बोलने दो, 10, 12, 15 सालों से आप लोग कुंभ को ...

श्री शिवरतन शर्मा :- अमितेश जी, वे सीधे-साधे थे तो आप कैसे हैं, जरा ये बता दो । वे भोले थे तो आप कपटी हैं । (हंसी)

श्री अरूण वोरा:- नहीं, ये चतुर हैं । ये हर चीज को जानते हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर:- अमितेश जी, वे आजादशत्रु थे, ज्योतिर्मय थे, आपके शत्रु तो यहां बैठे हैं, जो आपको मार्गदर्शक मंडल में बिठा दिया और आप समर्थन के लिए खड़े हो गए । भरी जवानी में मार्गदर्शक मंडल में रहोगे।

श्री अमरजीत भगत :- आगे बैठे हैं, वे क्या हैं आपके ?

अध्यक्ष महोदय :- अमितेश जी, अपनी बात जारी रखें ।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष जी, ये ज्यादा चिंतित हो गए हैं, बहुत ज्यादा परेशान हैं इसलिए ये सब बातें कर रहे हैं । सबसे बड़ी आश्चर्य की बात ये रही कि इन्होंने जो कुंभ का नाम दिया और प्रतिपक्ष में बैठे हुए सदस्य हैं, वे लगातार इस बात को मंत्री जी से और अध्यक्ष के द्वारापूछने की कोशिश कर रहे थे कि...

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीवास\10-01-2019\f17\03.45-03.50

श्री अजय चन्द्राकर :- बोलने के पहले ध्यान रखना कि वहां के विधायक हो ना, पूरी भाषण निकालकर राजिम मेला में नहीं बंटवाया तो नाम अजय चन्द्राकर नहीं ।

श्री अमरजीत भगत :- यह धमकाने का काम कर रहे हैं, अध्यक्ष महोदय ।

श्री अरूण वोरा :- आप डरा क्यों रहे हो ?

श्री बृहस्पत सिंह :- भरे सदन में धमकी दे रहे हैं ।

श्री मोहम्मद अकबर :- आप इनकी बात पूरी ध्यान से सुनिये ।

श्री अरूण वोरा :- चन्द्राकर जी से निवेदन है कि हमारे भोले-भाले विधायक को धमकाये नहीं । अपनी बात को निर्भीकता से कहने दे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- तीन बच्चों के दादा है माननीय अध्यक्ष महोदय । उसके बाद भी यंग है । इस उमर में मार्गदर्शक मंडल में शामिल होने लायक नहीं थे ।

श्री अमितेश शुक्ल :- पूर्व मंत्री शायद यह भूल गये हैं कि मैं स्वतंत्रता संग्राम परिवार का हूँ । धमकी से मुझे फर्क पड़ेगा नहीं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- वहां आपके परदादा-दादा के नाम की जमीन आज भी है।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे कहने का आशय यह है कि इन्होंने जो कुंभ का नाम दिया था, इनकी सब बातें व्यर्थ है । जितनी बातें इन्होंने की है, हमारे हिन्दू धर्म में सबसे बड़े शंकराचार्य है । आदि गुरू शंकराचार्य
जी है, उन्हें हम सब हिन्दू धर्म के लोग मानते हैं । उनके प्रति हमारी श्रद्धा एवं भक्ति भाव है । उन्होंने यह कहा है कि यह कुंभ नहीं है । मैं वहां पर था, उन्होंने खुद कहा कि यह कुंभ नहीं हो सकता ।

श्री अजय चन्द्राकर :- जब कुंभ शुरू नहीं हुआ तो पूजनीय शंकराचार्य, माननीय शंकराचार्य जी की संस्था विकसित नहीं हुई थी ।

श्री अमितेश शुक्ल :- अज्ञानी लोग कई साल से उसको कुंभ के नाम से मनाते रहे । उसके बाद माननीय शंकराचार्य जी ने बोला कि वह कुंभ नहीं है, यह हो नहीं सकता, कुंभ कल्प इसका नाम हो सकता है । तब इन्होंने कुंभ कल्प का नाम रखा ।
अजय भाई थोड़ा सुनिये, जाईये मत ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अमितेश जी, आपने कहा कि अज्ञानी लोग कुंभ के नाम से मनाते रहे । हम अज्ञानी थे तो आप शामिल होने के लिए क्यों जाते थे प्रभु ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमितेश शुक्ल :- आपको यही पता नहीं है, मैंने तीन सालों तक उसका बहिष्कार किया । कुंभ का बहिष्कार नहीं किया, उस मंच का बहिष्कार किया । जहां से आप लोग द्रौपदी के चीरहरण की तरह अटटहास करते थे । मैं वहां पर दु:खी होकर बैठकर सुनता था ।

श्री कुलदीप सिंह जुनेजा :- इसीलिए नेता प्रतिपक्ष जी और शिवरतन जी दो लोग बैठे हैं । बाकी पूरी कुर्सियां खाली है, कोई नहीं है ।

श्री अमितेश शुक्ल् :- यह सब सुन नहीं सकते । (व्यवधान)

श्री दीपक बैज :- नेता जी का बहिष्कार कर रहे हैं । (व्यवधान)

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जो माघी पुन्नी मेले की परम्परा है, शताब्दियों से है और उसको काला दिवस की बात किये हैं, हमारे प्रतिपक्ष के बहुत ज्ञानी सदस्य हैं, जिस दिन इन्होंने माघी पुन्नी को परिवर्तित किया, बिना शंकराचार्य जी से पूछे, इन्होंने जो कुंभ नाम दिया है, वहीं से काला दिन हो गया था। किस काले दिन की यह बात करते हैं, मुझे समझ में नहीं आ रहा है ? इन्होंने बहुत बड़ी-बड़ी बातें करी, बहुत बड़ी-बड़ी चीजें करी, पवन दीवान जी लगातार यह बोलते रहे कि राजिम में कौशल्या माता का मंदिर बनना चाहिये । बोलते गये, बोलते गये, हम लोग भी प्रार्थना करते रहे, मगर उसका कोई असर नहीं हुआ । कौशल्या मंदिर बना नहीं । मेरा इसमें कहना है कि ढोंग न करे, पाखंड न करे, यह लोग हिन्दू के नाम पर ढोंग एवं पाखंड करते हैं । कुंभ की बातें करते हैं, कुंभ होता नहीं है, कुंभ कल्प होता है । हमारे एक सदस्य ने बड़ी बातें कही कि वह साफट हिन्दूत्व है । ये तो हिन्दू के बहुत बड़े ठेकेदार बनते थे, क्या हुआ गौ माता का ? किस व्यक्ति ने गौ माता पर भूसा भरा ? आप कौन से साफट हिन्दूत्व की बात कर रहे हैं ? माननीय अध्यक्ष महोदय, यह धर्म की बातें न करे । इतनी देर से इन्होंने इतनी बड़ी-बड़ी बातें की । कुंभ में इन्होंने जो भी चर्चा की है, उसमें वहां पर जितनी भी बातें बोली, मैं तो वहां पर स्वयं लगातार था । उस समय उनको महामण्डलेश्वर भी बना दिया गया था, मैंने सोचा कि महाज्ञानी होंगे, कुछ ज्ञान बढ़ेगा, उनकी बातों को कुछ बोलते थे......

जारी.....श्री मिश्रा

मिश्रा\10-01-2019\f18\03.50-03.55

जारी.. श्री अमितेश शुक्ल :- इन्होंने शराब की बात की। मैं बताना चाहता हूं कि हमारी सरकार की नीयत बिल्कुल सही है। सही तरीके से जांच कर शराबबंदी करेंगे। यदि पूरे प्रदेश में शराब बंद नहीं किये तो कुंभ मेले में कम से कम 15 दिन शराब बंद कर देते। ये धर्म की बड़ी-बड़ी बात करते हैं। कुंभ मेले में शराब, मांस, मदिरा चलती रही, इन्होंने बंद नहीं की। लेकिन हम आपको बताना चाहते हैं कि हम 15 दिन तक उस मेले में शराब और मांस, मदिरा बंद रखेंगे। हम लोगों की भावना सही है, हम लोग

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सही तरीके से काम करते हैं, धर्म का आडंबर नहीं करते। आप लोगों ने वहां पूरे समय धर्म का आडंबर किया। एक हमारे प्रतिपक्ष के सदस्य बहुत बड़ी-बड़ी बात कर रहे थे कि त्रिवेणी संगम है और ये है वो है। वहां क्या हुआ, एक गंदा नाला घुसा रहा, कई साल तक उस गंदे नाले से पानी होकर उस त्रिवेणी संगम में जहां पर आपने संत समागम और कुंभ का सरोवर बनाया था जिसमें हम और आप नहाते थे उसमें नाले का पानी भी जाता था। गंगा की बात हुई, गंगा का क्या हुआ, गंदा नाला जब जाता था तो गंगा मैली हो गई। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से इन लोगों को यही कहना चाहता हूं कि हमारे जितने भी प्रतिपक्ष के लोग हैं वह इतना चिन्तित हैं, इतना दावानल, इतनी बातें बोली गईं। कहा गया कि ऐसा है, वैसा है और ये क्यों किया जा रहा है? इन्होंने यह भी कहा कि कारण, औचित्य बताईये। क्या औचित्य है कि आप इसको जल्दी से पारित कर रहे हैं, बदल रहे हैं? औचित्य यह है कि इन्होंने 12 साल तक वहां पर जो भ्रष्टाचार किया है, 5 करोड़ रूपये के बदले ये वहां पर और कई करोड रूपये खर्च कर देते थे। वहां पर जो भ्रष्टाचार किया गया वह पता नहीं है। अंदर पूरे महानदी-त्रिवेणी संगम को खत्म कर दिया गया। वहां पर हमारा धार्मिक आस्था का जो केन्द्र था वह पूरा खत्म हो चुका है, सूख गया है। वहां पूरा मुरूम डाल डालकर उसको खत्म कर दिया गया। ये बहुत गंभीर बात है और इसके लिए इसको पूरा का पूरा ठीक करना जरूरी था जो इन्होंने पूरे के पूरे त्रिवेणी संगम को कलुषित कर दिया है। इसलिए मैं कहता हूं कि इसका नाम बदलकर वह जो काला अध्याय था उसको खत्म किया जाए क्योंकि वह पुन्नी मेला में था और शंकराचार्य जी ने कहा है कि यह कुंभ नहीं रहेगा, कुंभ नहीं हो सकता इसलिए हमारे मंत्री जी ने उसी भावना के अनुकूल उसको बदला है। क्योंकि हम लोग वास्तव में हिन्दू धर्म को मानते हैं और आडंबर और ढ़ोंग नहीं करते हैं। मैं ज्यादा नहीं बोलना चाहूंगा, बहुत से लोगों ने सब बातें बोली हैं, यह प्रस्ताव पारित हो, इसके साथ में अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री अरूण वोरा (दुर्ग शहर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे विद्वान मंत्री श्री ताम्रध्वज साहू जी ने छत्तीसगढ़ राजिम कुंभ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 जो आज सदन में विचारार्थ लाया है, मैं उसका समर्थन करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे विपक्ष के माननीय सदस्य जिस मानसिकता से गुजर रहे हैं उनके प्रति हमारी पूरी सहानुभूति है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप विकास के हर कार्य में विरोध करें। आप उसका समर्थन भी करें और ये प्रदेश के हित के लिए हो रहा है। हमारे मंत्री जी ने स्वयं इस बात को कहा है और माना है कि 2006 में राजिम कुंभ अधिनियम में गलती हुई इसलिए वर्ष 2017 में गलती सुधारकर राजिम कुंभ कल्प किया गया। हमने इस गलती को अगर एक माह में सुधारा है तो इसमें हमने कौन सा गुनाह कर दिया है, कौन सी गलती कर दी है? हमारे छत्तीसगढ़ की परंपराओं का आप सबको सम्मान करना चाहिए और माननीय अजय चन्द्राकर जी बैठे हुए हैं उन्होंने इस बात का जिक्र किया कि कुंभ का जिक्र किसी भी शास्त्र में नहीं किया गया है। यदि है तो आप बता दें कि किस शास्त्र में किया गया है? इसलिए प्राचीनकाल से जो नाम है उसे ही

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जारी रखने दिया जाना चाहिए। पूरे देश में छत्तीसगढ़ की सभ्यता और संस्कृति का अपना एक विशिष्ट स्थान है और उसी विशिष्ट स्थान के चलते छत्तीसगढ़ में शांति, समरसता, सद्भाव और भाईचारे का वातावरण बना हुआ है। आप देख लीजिए कि छत्तीसगढ़ की जो पवित्र धरा है उसमें शिवरीनारायण, राजिम, लक्ष्मणेश्वर, खरौद, बमलेश्वरी, दंतेश्वरी, चंद्रपुर हम सब की आस्था का केन्द्र बने हुए हैं।..जारी

श्री प्रमेश

प्रमेश\10-01-2019\f19\03.55-03.60

जारी श्री अरूण वोरा :- छत्तीसगढ़ की जो पवित्र धरा है उसमें शिवरीनारायण, राजिम, लक्ष्मेण्श्वर, खरौद, बमलेश्वरी, दंतेश्वरी, चंद्रपुर हमारी सब की आस्थाओं के केन्द्र बने हुए हैं। दामाखेड़ा की आप बात कर लीजिए, वहां कबीर साहब को जो संदेश है, वो पूरे देश में प्रसारित हो रहा है। गिरौधपरी की बात कर लीजिए, वहां पर बाबा गुरू घासीदास जी के संदेशों को हम सब आत्मसात कर रहे हैं और हम उससे सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा ले रहे हैं और ये परंपराएं हमारी हजारों साल से चल रही है, और जन आस्था के केन्द्र से जुड़ी हुई है।

समय :
3:56 बजे

(सभापति महोदय (श्री धनेन्द्र साहू) पीठासीन हुए)

माननीय सभापति महोदय, राजिम की परंपरा को बदलने की कोशिश क्यों की गई, आपने उसे कुंभ घोषित किया, बाद में उसे कुंभ कल्प घोषित किया गया और करोड़ों रूपये की राशि आपने उसमें व्यय की जिसका फायदा छत्तीसगढ़वासियों को नहीं हुआ है और जो भ्रष्टाचार हुआ हुआ है, जिसकी चर्चा अमितेश शुक्ल जी कर रह थे। रेत के महल बना के उसे □हा दिया गया, तो हम सबकी ये भावना है । हम सब चाहते हैं कि अगर जो पूर्ववर्ती सरकार की जो गलती थी, उस गलती को हम सुधार कर अगर हम राजिम पुन्नी मेला, जो हमारी छत्तीसगढ़ की परंपरा है, धार्मिक आस्थाओं से जुड़ा हुआ है उसका अगर नाम रखा जाता है तो मैं नही समझता कि किसी को आपत्ति होना चाहिए और सर्वानुमति से....।

श्री अजय चंद्राकर:- एकात बार राजिम गये हो।

श्री अरूण वोरा :- कई बार गया हूं।

श्री अजय चंद्राकर:- कुलेश्वर महादेव कौन से जिला में है?

श्री अरूण वोरा :- गरियाबंद ।

श्री अजय चंद्राकर:- धतमरी जिला में है, कुलेश्वर महोदव।

श्री अरूण वोरा :- तो धमतरी भी तो वहीं हैं भाई।

श्री अजय चंद्राकर:- धमतरी जिला में है भाई कुलेश्वर महादेव पूछ लो उनसे। इसीलिये तो मैं बोला कि गये नई हो वहां करके और जहां गये नहीं हो जाते नहीं हो तो काहे जबर्दस्ती, वहीं रहो आप।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मार्गदर्शक मंडल में।

श्री अरूण वोरा :- मेरा आपसे अनुरोध है आप हर चीज में विरोध करते हैं, इसको ले के विरोध न करें चंद्राकर जी। माननीय सभापति महोदय, मैं बहुत चिंतित भी हूं और न केवल चितिंत बल्कि बहुत व्यथित भी हूं। मैं आपको बहुत अच्छी तरह से जानता हूं आप संसदीय ज्ञान के ज्ञाता हैं लेकिन आपका आचरण तो उधर ठीक रहता था, पर मेरे लिए ठीक नहीं रहा करता था पर इधर आ के......।

श्री अजय चंद्राकर:- मैं तो 100 बार बोला हूं कि मैं तो उन्हीं से सीखता हूं करके।

श्री अरूण वोरा :- किनसे ।

श्री अमितेश शुक्ल :- क्या है वोरा जी बीच बीच में यहां फिर वहां से समझ के आते हैं, जो उधर से समझ के आते हैं वो यहीं बोलते हैं।

श्री अजय चंद्राकर:- आप काहे व्यथित चिंतित, व्यथित हो बैठो न, जो होगा निपट लेंगे।

श्री अरूण वोरा :- कौन निपटेगा, हमको ही निपटना है आपसे, तो मेरा सदन से अनुरोध है कि इस विधेयक को सर्वानुमति से पास किया जाये और प्रवर समिति को जो सौंपने की बात कही है उसको वापस लिया जाये। ये धार्मिक आस्थाओं का केन्द्र है। आप किस मुंह से जाएंगे राजिम में, आप क्या कहेंगे।

श्री अजय चंद्राकर:- नाम बदल देने से क्या, धार्मिक आस्थाएं बदल जाएगी।

श्री अमितेश शुक्ल :- अजय भाई बोलने दो, बोलने तो दो बात को।

श्री अरूण वोरा :- आप कैसे मुंह दिखाएंगे राजिम में जाकर। इसलिए व्यथित चिंतित हूं।

श्री अजय चंद्राकर:- सब चीज कर लेंगे बिल्कुल हम समर्थन दे देंगे। मंत्री जी कारण बस बता दें नाम बदलना क्यों जरूरी है। कारण बस बता दें सही, हम समर्थन दे देंगे।

श्री अमितेश शुक्ल :- अजय भाई, जब आप ये बताओगे प्रदेश अध्यक्ष आप क्यों नहीं बने।

श्री अजय चंद्राकर:- नाम बदलने से कुंभ मेला पर क्या परिवर्तन पड़ेगा, ये बता देंगे तो हम समर्थन दे देंगे।

श्री अरूण वोरा :- अच्छा आप ही बताइये ।

श्री अमितेश शुक्ल :- अच्छा आप ये बता दो कि प्रतिपक्ष के नेता पा क्यों नहीं बने, हम इसके बाद जवाब जरूर देंगे।

डॉ कृष्णमूर्ति बांधी :- सभापति जी, आप बीच बीच में बृजमोहन जी को महामंडलेश्वर बोल देते हैं मजाक से।

श्री अरूण वोरा :- महामंडलेश्वर थे वो।

श्री अमितेश शुक्ल :- अजय भाई के बारे में बात कर रहा हूं मैं।

श्री अमरजीत भगत :- उसका कारण आप आज तक नहीं बताये।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर:- ये भी अवमानना से बचने के लिए लाया गया है, और कोई कारण नहीं है। आप सब जोश में खो गये अब होश में सरकार करें।

श्री अमितेश शुक्ल :- ये भी दावेदार थे न प्रतिपक्ष के नेता के लिए।

श्री अरूण वोरा :- माननीय सभापति महोदय, अब मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं और हमारे विपक्ष के सम्मानीय साथियों से निवेदन करता हूं कि

श्री अजय चंद्राकर:- आप मंत्री जी से निवेदन करो कि उसका कारण बताये हमसे मत करो। वो बदलने का कारण बताये।

श्री अरूण वोरा :- मंत्री जी ने तो लाया है विधेयक उसका तो हम समर्थन करते हैं।

श्री अजय चंद्राकर:- सही कारण बतायें। उधर आग्रह करो आप इधर मत करो। वो सही कारण बतायेंगे तो हम समर्थन देंगे बोल दिये न हम समर्थन देंगे हमारा पूरा दल सुन रहा है।

श्री अरूण वोरा :- अच्छा आप ही बताइये किस शास्त्र में लिखा हुआ है । प्राचीन काल से ही ये नाम जाना जा रहा है माघी पुन्नी मेला का, आप खुद बोलते हैं कि हम हर चीज को जानते हैं तो इसको सर्वानुमति से पास करें। माननीय सभापति महोदय, आपने समय दिया उसके लिए धन्यवाद ।

श्री अजय चंद्राकर:- आपका गोत्र भी दत्रक है। आप भी दत्रक गोत्र के हो।

श्री अरूण वोरा :- नहीं मैं भारद्वाज गोत्र का हूं।

श्री शिवरतन शर्मा:- माननीय सभापति जी, पंचम विधानसभा में पहले किसी संशोधन विधेयक पर चर्चा हो रही है।.....(जारी)

श्रीमती सविता

सविता\10-01-2019\g10\04.05-04.10

जारी श्री शिवरतन शर्मा :- विधेयक पर चर्चा कर रहे हैं और ये विधेयक सारी नियम, प्रक्रियाओं, परम्पराओं के विपरित नियम तोड़कर जल्दबाजी में सारी परम्पराओं को, नियमों को शिथिल करते हुए, प्रस्तुत किया गया है। राजिम कुम्भ (कल्प) इस सदन ने पारित किया और मैं समझता हूँ कि जब इस सदन ने पारित किया तो उस समय आप स्वयं भी इस सदन के सदस्य थे। माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी और सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री जी भी उस समय सदन के सदस्य थे। पूरी नियम प्रक्रियाओं का पालन करते हुए, विधेयक सदन में प्रस्तुत हुआ, चर्चा के पश्चात् पारित हुआ। पर आज इस विधेयक को जल्दबाजी में, आज ही स्थापित करना, आज ही पारित करना क्यों जरूरी हुआ?

माननीय सभापति महोदय, वास्तव में इसके पीछे जो बड़ा कारण है, वह बड़ा कारण ये है कि माननीय मंत्री जी ने एक बड़ी भूल की थी और वह भूल ये थी कि 26 दिसंबर को विधान सभा के सत्र की अधिसूचना जारी हुई और तीन तारीख को माननीय मंत्री जी ने एक सार्वजनिक कार्यक्रम में घोषणा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

की कि हम राजिम कुम्भ (कल्प) का नाम परिवर्तित करके राजिम माघ पुन्नी मेला करेंगे और इसके लिए हम लोगों ने उनके विरूद्ध विशेषाधिकार हनन का प्रस्ताव दिया, जो आसंदी के पास विचाराधीन है और ये सदन की अवमानना से बचने के लिए, उसका निर्णय आने के पहले अपने बहुमत का उपयोग करते हुए, ये संशोधन विधेयक प्रस्तुत किया गया है। आपको इंतजार करना था। विशेषाधिकार के मुद्दे पर आसंदी के निर्णय का, आपको हंसी आ रही है, पर माननीय मंत्री जी....।

गृह मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- मुझे हंसी इसलिए आ रही है अगर वह वाली गलती और डर होता तो हम इस बिल को पेश ही नहीं करते, उसमें क्या बात थी। मुझको तो आप पर हंसी आ रही है जो आप इस बात का तर्क दे रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, आपका बहुमत है और बहुमत में आप कुछ भी कर सकते हैं और आज आपने अपने बहुमत का नियम के विपरित उपयोग किया है। माननीय सभापति महोदय, राजिम कुम्भ, विधेयक बना और जब इसमें (कल्प) शब्द जोड़ा गया तो सारे साधु संतों से, माननीय शंकराचार्य जी से चर्चा हुई और उनने कहा कि इसमें (कल्प) शब्द जोड़ो, मैं उपस्थित था जब चर्चा हुई तो, मैं नाम का उपयोग नहीं कर रहा हूँ। जब चर्चा हुई तो मैं उपस्थित था, माननीय मंत्री जी थे, मैं भी था, ये चर्चा भांटापारा में हुई और भांटापारा में माननीय ने कहा कि इसमें (कल्प) शब्द जोड़ना चाहिए और उसके बाद (कल्प) शब्द जोड़ा गया।

श्री अमितेश शुक्ल :- कभी शंकराचार्य जी को भी थोड़ा श्रेय दे दीजिए, उनने भी बोला है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ में माघ पूर्णिमा में बहुत स्थानों पर मेला भरता है। पर छत्तीसगढ़ में राजिम का मेला विशेष बने, राजिम के मेले की अंतर्राष्ट्रीय पहचान बने, छत्तीसगढ़ की संस्कृति इसके माध्यम से पूरे देश और दुनिया में जानी जाए। इसके लिए ये राजिम कुम्भ (कल्प) प्रस्तावित किया गया था। और माननीय मंत्री जी की घोषणा कि नाम तो परिवर्तित करेंगे ही और नाम के परिवर्तन के साथ-साथ छत्तीसगढ़ के बाहर के किसी भी कलाकार को, किसी भी व्यक्ति को हम इसमें आमंत्रित नहीं करेंगे। माननीय अजय चन्द्राकर जी ने उल्लेख किया है कि संस्कृति आदान प्रदान से विकसित होती है। राजिम कुम्भ में सिर्फ कलाकार नहीं आते। पूरे देश के साधु, संत महात्मा आते हैं जिनका ....।

श्री दीपक बैज :- माननीय शिवरतन भईया, वह किसी को नहीं है, मुम्बई, दिल्ली वालों को है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, ऐसा है कल आदरणीय संसदीय कार्यमंत्री जी ने राजिम कुम्भ में जिनका उल्लेख किया था, उसमें कोई नहीं आया। राजिम कुम्भ में विशेष रूप से आमंत्रण जो दिया जाता है, वह संतो को दिया जाता है ताकि संतों का प्रवचन हो सके, लोगों को उनका मार्गदर्शन मिल सके और आप ऐसे लोगों को रोकने की बात कर रहे हैं, आप छत्तीसगढ़ को कहां ले

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जाना चाहते हैं ? जारी...

श्री चौधरी

चौधरी\10-01-2019\g11\04.05-04.10

पूर्व जारी.. श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय,छत्तीसग राज्य के निर्माता आदरणीय अटल जी ने एक कविता लिखी है, उसकी दो लाईन आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं-

संस्कृति सबकी एक चिरंतन, खून रगों में हिन्दु है,

विशाल सागर समाज अपना, हम सब इसके बिन्दु हैं।

हिन्दुत्व के बारे में अजय चन्द्राकर जी ने कहा कि कोर्ट ने भी उसको जीवन पद्धति माना है और आप ऐसा निर्णय कर रहे हैं। आखिर राजिम कुंभ में पूरे देश के लोग आते हैं, चंपारण्य भी जाते हैं, वल्लभाचार्य जी की जन्मभूमि है, प्रकाट्य का स्थान है, आपके विधानसभा क्षेत्र में आता है। छत्तीसगढ़ में राजिम कुंभ, कबीरपंथ का मेला, दामाखेड़ा परमपूज्य बाबा गुरू घासीदास की जन्मस्थली गिरौधपुरी धाम का मेला ये तीन मेले ऐसे हैं जिसमें पूरे देश के लोग आते हैं। इन मेलों को विकसित करना, सुविधायें प्रदान करना और साधु-संतों को आमंत्रित करना, ये सरकार ने इस भाव से काम किया है। आप नाम क्यों बदलना चाहते हैं? माननीय मंत्री जी ने प्रस्ताव रखा, पर नाम बदलने के पीछे भाव क्या है, ये आपने स्पष्ट नहीं किया। माननीय सभापति जी, मैं आपके माध्यम से निवेदन करूंगा कि माननीय मंत्री जी इस बात को स्पष्ट करेंगे कि इस नाम परिवर्तन के पीछे उनका भाव क्या है? उनका उद्देश्य क्या है? माननीय सभापति महोदय, आपने बोलने का समय दिया, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री देवव्रत सिंह (खैरागढ़) :- माननीय सभापति महोदय, माननीय संस्कृति मंत्री जी ने यह जो छत्तीसगढ़ राजिम कुंभ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक रखा है, इसका मैं और मेरे दल के लोग समर्थन करते हैं।

माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के उपरांत छत्तीसगढ़ की जनभावनायें जागृत हुई हैं। पिछली सरकार ने किन कारणों से इसको कुंभ मेला किया, फिर बाद में कुंभ कल्प मेला किया, इसके पीछे सरकार की जो भी भावना रही होगी, वह अपनी जगह है। लेकिन हम लोग भी इस बात को महसूस करते हैं कि छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण के ऊपर छत्तीसगढ़ की जो जनभावनायें हैं, वह बहुत ही प्रबलता, मजबूती से अपनी धर्म संस्कृति के प्रति जागृत हुई हैं। सदियों से माघी पुन्नी मेला के नाम से यह मेला चर्चित था और अगर लोग जाते थे तो उसको कुंभ का नाम देने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :

4:07 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास मंहत) पीठासीन हुए)**

मानतीय अध्यक्ष महोदय, हिन्दु धर्म अपने आप में बड़ा व्यापक है। आपको हर ग्रंथ में, वेद में एक नई परिभाषा मिलेगी। लेकिन हिन्दु धर्म की नई व्याख्या करने से लोगों की भावनायें नहीं बदलेंगी। हम नया नाम दे सकते हैं। नया नाम कुंभ का दिया गया है, लेकिन जो लोग आते थे वह लोग माघी पुन्नी मेला के हिसाब से ही दर्शन करने के लिए वहां आते थे। उस मेला को लेकर जो स्थापित मान्यतायें थीं, धर्म के प्रति जो आस्था थी, जो विचार थे, उसमें कुंभ जोड़ने की कोई बहुत ज्यादा आवश्यकता नहीं थी। कुंभ के नाम से निश्चित रूप से पिछली सरकार ने बहुत अच्छा कार्य राजिम में किया। पूरे देश-विदेश से लोग आना चालू हुए। लेकिन मुझे लगता है कि वह तो आगे भी जारी रहेगा, जो भी सरकारें बनेंगी राजिम के महत्व को कम नहीं कर सकती हैं। सरकार उसके लिए बजट आवंटन करेगी, वहां पर मेला लगातार बढ़ता चला जायेगा। जिनको मेले में आना होगा, आयेंगे। साधु-संत जितने लोग आते हैं, वह लोग आते रहेंगे। पर मुझे लगता है कि यह सारी चीजें, हम धर्म को कितना भी आगे बढ़ाने का प्रयास करें लेकिन अगर स्थानीय जनभावनाओं के अनुरूप हम उसका विकास नहीं कर सकते तो निश्चित रूप से कहीं न कहीं स्थानीय भावनाओं को चोट पहुंचती है। छत्तीसगढ़ की सबसे बड़ी धर्मनगरी है। अगर छत्तीसगढ़ के धर्म का आधार है तो वह रतनपुर, दंतेश्वरी, डोंगरगढ़ यही तो आधार है। आज भी लाखों की संख्या में छत्तीसगढ़ के लोग अपनी अस्थियों का विसर्जन राजिम में जाकर करते हैं। ऐसे स्थान पर जहां सदियों से धर्म का एक बड़ा वातावरण बना है, वहां पर नाम पर हम कुछ परिवर्तन करें, उसकी आवश्यकता नहीं है। मुझे लगता है कि अभी 19 तारीख से जब मेला प्रारंभ होगा, उसका स्वरूप वैसा का वैसा ही रहेगा। यदि नाम केवल माघी पुन्नी मेला हो जायेगा तो स्थानीय लोगों को यह लगेगा कि ....(जारी)..

श्रीमती नीर

नीरमणी\10-01-2019\g12\04.10-04.15

जारी.........श्री देवव्रत सिंह :- मेला प्रारंभ होगा तो उसका स्वरूप वैसे के वैसे ही रहेगा । यदि नाम केवल माघी पुन्नी मेला हो जायेगा तो स्थानीय लोगों को लगेगा कि हमारा अपना मेला है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक-दो बार हम लोगों को वहां जाने का मौका मिला। जो वातावरण पहले रहता होगा शायद हम लोगों ने नहीं देखा होगा लेकिन अभी जब मेले में गये तो निश्चित से बहुत बड़े-बड़े महामण्डलेश्वर, साधु-संत आये थे और बहुत सारे लोगों ने वहां बहुत अच्छे व्याख्यान किये, धर्म की अच्छी चर्चा की, मुझे लगता है कि वह भी जारी रहेगा । लोग आयेंगे लेकिन जो शासन ने और

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय ताम्रध्वज साहू जी ने जो छत्तीसगढ़ की जनता की जनभावना के अनुरूप जो नाम परिवर्तन किया उसके लिये मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं और मुझे लगता है कि जो पिछली संस्कृति थी, जो पिछली व्यवस्था थी उसको और मजबूत करेंगे । मैं माननीय मंत्री जी से एक ओर निवेदन करना चाहूंगा कि इलाहाबाद-प्रयाग में कुंभ का मेला हो रहा है और हम सबकी धार्मिक मान्यताएं ईलाहाबाद का अपना एक महत्व है । मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि छत्तीसगढ़ शासन की ओर से वहां मेला में, प्रबंधन में व्यवस्था होनी चाहिए और यहां पर मैं तो निवेदन करना चाहूंगा कि श्री रविन्द्र चौबे जी के नेतृत्व में निश्चित रूप से वहां पर कुछ न कुछ ऐसा वहां पर परिक्रमा से लेकर वहां पर कुछ न कुछ ऐसा होना चाहिए कि छत्तीसगढ़ के जो भी हमारे श्रद्धालु-भक्त जा रहे हैं, छत्तीसग के जितने भी लोग प्रयागराज में जायेंगे उनके लिये सूचना की व्यवस्था हो क्योंकि वहां पर बहुत घूमना पड़ता है, बहुत परेशान होना होता है । एक व्यवस्थित तरीके से चाहे रायपुर में पंजीयन करें, जिला स्तर पर पंजीयन करें, लोग यहां से जायें, उनके जाने की व्यवस्था हो, वैसे भी शासन का बजट और तीर्थयात्री योजना चल रही है, उस योजना का अधिक से अधिक हम लोग प्रयागराज के लोगों को जोड़ें, वहां जायें क्योंकि हिंदु धर्म का एक बहुत बड़ा अवसर है, 12 साल में आता है चूंकि अर्धकुंभ है तो मैं समझता हूं कि माननीय मंत्री जी निश्चित रूप से इसमें अगर व्यवस्था होगी तो लोग उत्तरप्रदेश में प्रयागराज जायेंगे और शायद बहुत सारे लोग शासन के खर्च में अगर जायेंगे तो निश्चित रूप इसका पुण्य आपको प्राप्त होगा।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद श्री देवव्रत सिंह जी । श्री केशव प्रसाद चंद्रा ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा (जैजैपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय संस्कृति मंत्री जी के द्वारा प्रस्तुत इस संशोधन विधेयक में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं ।

श्री अजय चंद्राकर :- अरे भैया, वहां हाथी की मूर्ति है मंदिर में अब बाकी बात को छोडो । राजीव लोचन मंदिर में हाथी की मूर्ति है, प्रतीक में अब और उससे ज्यादा क्या चाहिए बताओ ?

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- आपको हाथी से प्रेम करना चाहिए और नहीं लगता है कि अब हाथी के बिना आपका उद्धार होगा । माननीय अधयक्ष महोदय, इस पूरे संशोधन में नाम के अलावा कहीं कोई और चीज बदलने की बात नहीं है ।

श्री अजय चंद्राकर :- वैसे संसदीय कार्यमंत्री जी, राजीम महत्तम पढ़ेंगे तो यह भी माना जाता है कि गज गृह का युद्ध वहीं पर हुआ था, राजीम में और जो राजीव लोचन जी की प्रतिमा है वह उसी की मानी जाती है जो गजगृह के समय प्रतिरूप था उसको, यह भी माना जाता है राजीम के बारे में ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- नहीं, यह बात तो सही है कि इतिहास के बारे में आपसे कोई तर्क-वितर्क नहीं कर सकते । नाम के अलावा कहीं कुछ परिवर्तन की बात नहीं है और पहले की सरकार ने उस नाम को क्यों बदला और अभी वर्तमान सरकार उस नाम को क्यों बदल रही है यह मेरी समझ से बाहर है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

धर्म जो है आस्था का केंद्र बिंदु है, आपके नाम बदलने से वहां लोग जायेंगे ऐसी बात नहीं है । जिनकी आस्था है, आप नाम कुछ भी रखें । वह निश्चित रूप से वहां जायेंगे और जहां मेला शब्द है तो ऐसा नहीं है कि उस मेले में केवल आस्था वाले जाते हैं, मेले में मनोरंजन वाले भी जाते हैं, मेले में आनंद लेने वाले भी जाते हैं, हमारे माननीय सदस्य वोरा जी ने कहा कि वहां लंबे समय तक भ्रष्टाचार हुआ । बजट तो वही है, आप मेला वही कर रहे हैं लेकिन अब क्या गारंटी है कि वहां भ्रष्टाचार नहीं होगा और अगर भ्रष्टाचार नहीं होगा तो इस बारे में भी सरकार को अपना विजन रखना था कि पहले उसमें क्या कमी रही और अब उसमें क्या करना चाहते हैं । हम धर्म और आस्था को बदल नहीं सकते चाहे नाम कुछ भी रखें । लंबे समय तक लोगों की आस्था रही, जब सरकार वहां आयोजन नहीं करती थी तब भी मेला होता था तब भी लोगों की आस्था थी । सरकार ने बजट पारित करके उस मेले में सुविधा दी, लोगों को जोड़े, यह बात निश्चित रूप से है । राजीव कुंभ मेला के बाद छत्तीसगढ़ की पहचान धार्मिक दृष्टिकोण से पूरे देश में नहीं बल्कि देश के बाहर भी बना है.........जारी

..........श्री कुरैशी

कुरैशी\10-01-2019\g13\03.30-03.35

जारी.....श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- यह बात निश्चित रूप से है । राजिम कुंभ मेले के बाद छत्तीसगढ़ की पहचान धार्मिक दृष्टिकोण से पूरे देश ही नहीं, देश के बाहर भी बनी है और इसके लिए मैं तो माननीय बृजमोहन जी को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूं (मेजो की थपथपाहट) जिन्होंने इसकी पहचान बनाई है । मैं दोनों ही दलों के सदस्यों से निवेदन करता हूं कि नाम पर न जाएं, इसे प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाएं । बल्कि वहां और क्या बेहतर व्यवस्था कर सकते हैं, उस मेले के माध्यम से लोगों को कैसे जोड़ सकते हैं ? लोगों में कैसे आस्था जगा सकते हैं ? लोगों को कैसे उस संस्कार से जोड़ सकते हैं ? इस पर चिंतन करें तो ज्यादा उचित होगा धन्यवाद् ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि छत्तीसगढ़ राजिम कुंभ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) पर विचार किया जाए ।

जो माननीय सदस्य इस प्रस्ताव के पक्ष में हों, कृपया ''हां'' कहें ।

जो माननीय सदस्य इस प्रस्ताव के विपक्ष में हों, कृपया ''ना'' कहें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- डिवीजन, डिवीजन ।

(थोड़ी देर बाद)

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि छत्तीसगढ़ राजिम कुंभ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) पर विचार किया जाए ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जो माननीय सदस्य इस प्रस्ताव के पक्ष में हों, कृपया "हां" कहें ।

जो माननीय सदस्य इस प्रस्ताव के विपक्ष में हों, कृपया "ना" कहें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- डिवीजन, डिवीजन ।

अध्यक्ष महोदय :- मत विभाजन के लिए घंटी बजाई जाए और लॉबी को खाली कराया जाए ।

---- श्री ठाकुर -

ठाकुर\10-01-2019\g14\04.25-04.30

"हां" पक्ष

1. श्री गुलाब कमरो
2. डॉ. विनय जायसवाल
3. श्रीमती अम्बिका सिंहदेव
4. श्री खेलसाय सिंह
5. श्री पारसनाथ राजवाड़े
6. डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम
7. श्री बृहस्पत सिंह
8. श्री चिन्तामणि महाराज
9. डॉ. प्रीतम राम
10. श्री अमरजीत भगत
11. श्री विनय कुमार भगत
12. श्री यू.डी. मिंज
13. श्री रामपुकार सिंह ठाकुर
14. श्री चक्रधर सिंह सिदार
15. श्री प्रकाश शक्राजीत नायक
16. श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े
17. श्री उमेश पटेल
18. श्री लालजीत सिंह राठिया
19. श्री जयसिंह अग्रवाल
20. श्री पुरूषोत्तम कंवर
21. श्री मोहित राम
22. श्रीमती रश्मि आशिष सिंह

"ना" पक्ष

1. श्री ननकी राम कंवर
2. श्री धरमलाल कौशिक
3. डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी
4. श्री नारायण चंदेल
5. श्री शिवरतन शर्मा
6. श्री बृजमोहन अग्रवाल
7. श्री अजय चन्द्राकर
8. श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

23. श्री शैलेश पांडे
24. श्री रामकुमार यादव
25. श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह
26. श्री विनोद सेवनलाल चंद्राकर
27. श्री चन्द्रदेव प्रसाय राय
28. सुश्री शकुंतला साहू
29. श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा
30. श्री सत्यनारायण शर्मा
31. श्री विकास उपाध्याय
32. श्री कुलदीप जुनेजा
33. डॉ. शिवकुमार डहरिया
34. श्री धनेन्द्र साहू
35. श्री अमितेश शुक्ल
36. डॉ. लक्ष्मी ध्रुव
37. श्रीमती संगीता सिन्हा
38. श्रीमती अनिला भेंडिया
39. श्री कुंवर सिंह निषाद
40. श्री भूपेश बघेल
41. श्री ताम्रध्वज साहू
42. श्री अरूण वोरा
43. श्री देवेन्द्र यादव
44. श्री रविन्द्र चौबे
45. श्री आशीष कुमार छाबड़ा
46. श्री गुरूदयाल सिंह बंजारे
47. श्रीमती ममता चंद्राकर
48. श्री मोहम्मद अकबर
49. श्री भुवनेश्वर शोभाराम बघेल
50. श्री दलेश्वर साहू
51. श्रीमती छन्नी चन्दू साहू
52. श्री इन्द्रशाह मंडावी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

53. श्री अनूप नाग
54. श्री मनोज सिंह मंडावी
55. श्री शिशुपाल सोरी
56. श्री संतराम नेताम
57. श्री मोहन मरकाम
58. श्री बघेल लखेश्वर
59. श्री रेखचंद जैन
60. श्री दीपक बैज
61. श्री विक्रम मंडावी
62. श्री कवासी लखमा

अध्यक्ष महोदय : - इस प्रस्ताव के पक्ष में 62 मत तथा प्रस्ताव के विपक्ष में 08 मत प्राप्त हुए। (मेजों की थपथपाहट)

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।

अध्यक्ष महोदय :- अब विधेयक के खण्डों पर विचार होगा।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष जी, नोटा में कितने मिले । (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि खण्ड 2, 3 इस विधेयक का अंग बने।

खण्ड 2, 3 इस विधेयक का अंग बने।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि खण्ड 1 इस विधेयक का अंग बने।

खण्ड 1 इस विधेयक का अंग बना।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि पूर्ण नाम तथा अधिनियमन सूत्र इस विधेयक का अंग बने।

पूर्ण नाम तथा अधिनियमन सूत्र इस विधेयक का अंग बने।

धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री(श्री ताम्रध्वज साहू) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि छत्तीसगढ़ राजिम कुंभ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) पारित किया जाय।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ कि छत्तीसगढ़ राजिम कुंभ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) पारित किया जाय।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि छत्तीसगढ़ राजिम कुंभ (कल्प) मेला (संशोधन) विधेयक, 2019 (क्रमांक 2 सन् 2019) पारित किया जाय।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।
विधेयक पारित हुआ ।
(मेजों की थपथपाहट)

श्री बृजमोहन अग्रवाल : - माननीय अध्यक्ष महोदय, आज का दिन शायद संसदीय इतिहास में याद रखा जाएगा कि किसी विधेयक को जल्दबाजी में सदन में लाकर और उसी दिन प्रस्तुत किया जाए, उसी दिन पारित किया जाए। ये बहुत दुर्भाग्यजनक दिन है ।

अध्यक्ष महोदय : - ये इतिहास बनेगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल : - ये संसदीय इतिहास का काला दिन है और हम लोग इसका विरोध करते हैं और इसके विरोध में बर्हिगमन करते हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- जाओ-जाओ।

श्री दीपक बैज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उधर वोट भी दे रहे हैं, उसके बाद विरोध कर रहे हैं।

समय :
4:32 बजे

<u>बहिर्गमन</u>

<u>शासन के उत्तर के विरोध में</u>

(माननीय सदस्य श्री बृजमोहन अग्रवाल के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा शासन के उत्तर के विरोध में सदन से बहिर्गमन किया गया ।)

अध्यक्ष महोदय : - माननीय मुख्यमंत्री जी एवं माननीय नेता प्रतिपक्ष की सहमति से पंचम विधानसभा के प्रथम सत्र की बैठकों को पुन: निर्धारित करते हुए आगामी बैठकें शुक्रवार, दिनांक 08 फरवरी, 2019 से प्रारंभ होकर शुक्रवार, दिनांक 08/03/2019 तक रखी जाएंगी। शुक्रवार, दिनांक 08 फरवरी, 2019 को वित्तीय वर्ष 2019-2020 के आय-व्ययक का उपस्थापन किये जाने का प्रस्ताव होने के फलस्वरूप प्रश्नोत्तर, स्थगन, ध्यानाकर्षण, नियम 267 के सूचनाओं के साथ अन्य सूचनाओं को सोमवार, दिनांक 11 फरवरी, 2019 से सभा में लिया जाएगा। मैं समझता हूं सदन इससे सहमत है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय : - सभा की कार्यवाही शुक्रवार, दिनांक 08 फरवरी, 2019 को 11.00 बजे तक के लिए स्थगित।

(04 बजकर 33 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही शुक्रवार, दिनांक 08 फरवरी, 2019 (माघ 19, शक संवत 1940) के पूर्वान्ह 11 बजे तक के लिए स्थगित की गई।)

चन्द्र शेखर गंगराड़े
सचिव
छत्तीसगढ़ विधान सभा

रायपुर (छत्तीसगढ़)
10 जनवरी, 2019

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं